CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5165

कांच मन्दिर, इन्दौर

(श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर)

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मध्यप्रदेश के महानगर इन्दौर में सर सेठ हुकमचंद मार्ग पर स्थित "कांच मन्दिर" अपने नामानुरूप विविधाकार रंगीन कांचों की मनोहारी जड़ाऊ सज्जा और जैन धर्म सम्बन्धी शैक्षिक एवं उपदेशपूर्ण कथानक–दृश्य चित्रों की अद्भुत एवं विरल संयोजना के लिए विश्वविख्यात् तथा भारतीय कलाराशि की अपूर्व धरोहर है। इस मन्दिरजी का निर्माण जैन समाज के सुपरिचित एवं इन्दौर महानगर के सर्वप्रतिष्ठित कासलीवाल परिवार के पूर्वज सर सेठ श्री हुकमचंदजी, सेठ कस्तूरचंदजी, सेठ कल्याणमलजी और श्री हुकमचंदजी के सुपुत्र सेठ राजकुमारजी ने सम्मिलित रूप से "माणकचंद मगनीराम" नामक मारवाड़ी गोठ (फर्म) के अन्तर्गत 11 जुलाई सोमवार 1921 ई. को करवाया और उसमें जिनबिम्ब प्रतिष्ठा करवाई थी। वास्तु योजना की दृष्टि से अनूठी त्रितलीय संरचना में निर्मित यह मन्दिर मूलनायक के रूप में 16वें तीर्थंकर शान्तिनाथ को समर्पित है। इसके अलावा मन्दिरजी में लगभग 16वीं–17वीं शती ई. से लेकर आधुनिक काल तक की 25 जिन प्रतिमाएँ तथा धातुनिर्मित 24 यन्त्रजी भी विराजमान हैं।

मन्दिरजी में होने वाले विविध आयोजनों के अवसर पर निकलने वाला सफ़ेद अश्वों से बना सुन्दर रथ तथा रजत पत्र से बनी ऐरावत गजाकृति भी महत्त्वपूर्ण एवं दर्शनीय है। अनेक मूर्तियों पर अंकित लेख उनके निर्माणकर्त्ताओं की विस्तृत जानकारी देने में समर्थ हैं। अनेक छपे हुए ग्रन्थों के अलावा 417 हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ भी इस मन्दिर की धरोहर हैं। इस मन्दिरजी की समग्र कलाराशि (पाण्डुलिपियों को छोड़कर) से जनसमुदाय एवं विद्वत् जनों को अवगत कराने के उद्देश्य से छायाचित्रों के साथ सरल भाषा में इस पुस्तक को प्रस्तुत करने का लेखक का प्रयास प्रशंसनीय है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री ग० व० दि० जैन संस्थान
पुस्तक क्र० 5165
नरिया वाराणसी

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान ।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान ॥

मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंत देव ।
मंगलकारी सिद्ध पद सो वन्दों स्वयमेव ॥

मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय ।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन-वचकाय ॥

मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म
मंगलमय मंगलकरण, हरो असाता कर्म ॥

सौजन्य

श्रीमती बिमला अजितकुमारसिंह कासलीवाल
(अध्यक्ष-कासलीवाल काला फाउण्डेशन)

डॉ. (श्रीमती) अनुपमा विकास जैन   श्रीमती आभा ललित सरावगी

Ganesh Vami Digambar Jain Institute Naria Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुस्तक क्र0.........
भदैनी वाराणसी

कांच मन्दिर, इन्दौर

(श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर)

लेखक
नवनीत कुमार जैन
(एम. ए., पी-एच.डी., पी. जी. डिप्लोमा इन म्यूजोलॉजी)

प्रकाशक

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

-- सविनय समर्पण --

श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन कांच मन्दिर, इन्दौर के निर्मातागण -

दानवीर, तीर्थभक्त शिरोमणि, राज्यभूषण रायबहादुर, रावराजा स्व. सर सेठ श्री हुकमचंद्रजी, रायबहादुर स्व. सेठ कस्तूरचंद्रजी बैंकर, राज्यभूषण, रायबहादुर स्व. सेठ कल्याणमलजी और श्री हुकमचंद्रजी के सुपुत्र स्व. भैया साहब श्री राजकुमारसिंहजी

"कांच मन्दिर, इन्दौर" - द्वारा नवनीत कुमार जैन
(dr_navneetjain@rediffmail.com)
© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन
प्रथम संस्करण – जनवरी 2013

आई.एस.बी.एन.–81–86933–43–3

मूल्य – रु. 500.00

प्रकाशक – कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर

मुद्रक – सुगन ग्राफिक्स, इन्दौर

0731–4065518, 9302125594

email : sugan_graphic@yahoo.com

- प्राप्तिस्थल -

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ

(देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर द्वारा मान्य शोधकेन्द्र)
584, महात्मा गांधी मार्ग, तुकोगंज, इन्दौर 452 001 (म. प्र.)
दूरभाष – 0731 – 2545421, 094250 53822, 093021 04700

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री ग० व० दि० जैन संस्थान
पुस्तक सं०..........
नरिया वाराणसी

स्वर्णिम अतीत के आधार स्तम्भ
हमारे पूर्वज
कासलीवाल परिवार

सर सेठ हुकुमचंदजी

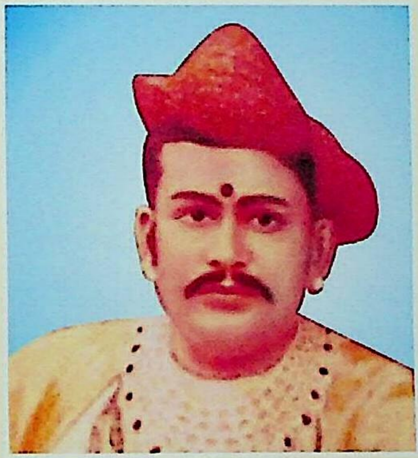

सेठ कस्तूरचंदजी

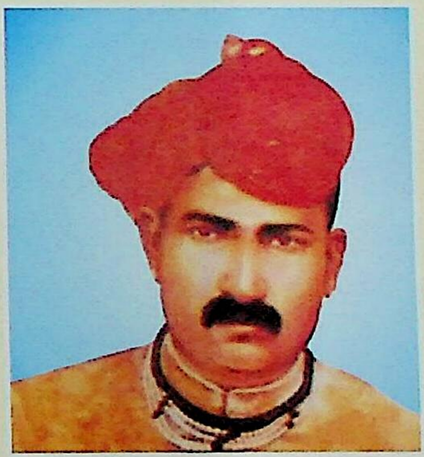

सेठ कल्याणमलजी

सेठ राजकुमारसिंहजी

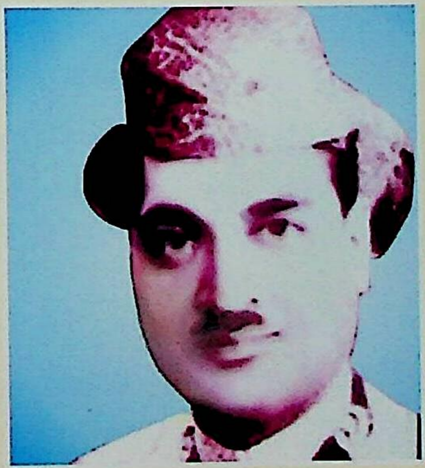

सेठ देवकुमारसिंहजी

सेठ हीरालालजी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

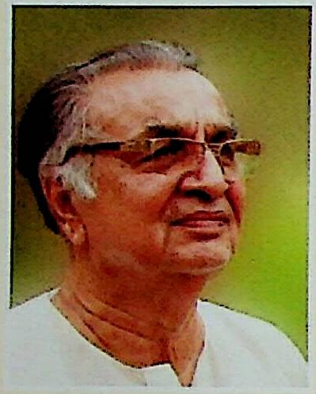

अध्यक्षीय उद्‌गार

संस्कृति का संरक्षण एवं उसका सम्यक् प्रचार दोनों आज की आवश्यकताएं हैं। 100 वर्ष पूर्व 1912 में हमारे पूर्वजों ने माणिकचंद मगनीराम गोठ की स्थापना कर एवं एक मकान क्रय करके मंदिर निर्माण हेतु दान कर दिया। 9 वर्ष में दुनिया का बेमिसाल काँच के काम एवं पेन्टिंग के अद्‌भुत समन्वय से बना भव्य मंदिर बनकर तैयार हो गया। भगवान जिनेन्द्र की मूर्ति की स्थापना से पूजन/ अर्चन का काम तो शुरू हो गया किन्तु इस अंतर्राष्ट्रीय स्तर की रचना का सम्यक प्रचार–प्रसार जिस रूप में किया जाना चाहिये वह नहीं किया जा सका। जब–जब किसी कला पारखी ने इस कृति को देखा इसे बहुत सराहा किन्तु यहाँ बनी कलाकृतियों का परिचय देने वाली किसी पुस्तक का अभाव सदैव खलता रहा। सुयोग से **डॉ. नवनीत कुमार जी** का चयन कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ पुरस्कार – 2011 हेतु होने के कारण उनका 27.10.12 को आगमन इन्दौर हुआ एवं हमने प्राथमिकता के आधार पर काँच मंदिर के इतिहास, मूर्तियां, प्रशस्तियां, काँच की कलाकारी का विस्तृत परिचय देने वाली सर्वांगपूर्ण पुस्तक के सृजन का उनसे अनुरोध किया। उन्होंने भी सहृदयतापूर्वक इस दायित्व को स्वीकार किया। फलतः 3 अध्याय में विभक्त यह कृति आपके सम्मुख है ।

प्रथम अध्याय – **परिचय** में मंदिर, मंदिर निर्माता परिवार, मंदिर की आंतरिक संरचना, मंदिर वास्तु, गर्भगृह एवं उसमें विराजित जिन मूर्ति का परिचय दिया है। मंदिर की तीनों मंजिलों , उसमें बने निर्माणो आदि का परिचय देकर दर्शकों का सम्यक् मार्गदर्शन दिया है ।

द्वितीय अध्याय – **भित्ति चित्र** के अंतर्गत 71 चित्रों का परिचय दिया है। इनमें काँच की कलाकारी एवं रंगों की चित्रकारी का अद्‌भुत समन्वय है। चित्रों में कलात्मकता, परिदृश्य एवं भाव भंगिमाओं का अद्‌भुत संयोजन है। अध्याय के प्रारम्भ में ही विभिन्न चित्रों की स्थिति के बारे में पूर्ण जानकारी दी गई है।

तृतीय अध्याय – **मूर्तिकला एवं अभिलेख** में मंदिरजी में विराजित समस्त मूर्तियों के आकार–प्रकार, मूर्ति निर्माण सामग्री, मूर्ति प्रशस्ति, वेदी जी में विराजित यंत्रों, वेदिकाओं के बारे में सचित्र एवं प्रामाणिक जानकारी दी गई है।

विस्तारभय से इस मंदिर में विराजमान 417 पांडुलिपियों का विवरण नहीं दिया गया है। इसका विवरण इन्दौर ग्रंथावली के आगामी भागों में प्रस्तुत किया जायेगा।

संक्षिप्ततः इस कृति के माध्यम से एक चिरप्रतीक्षित आवश्यकता की पूर्ति हुई है। हम इसके सृजन हेतु डॉ. नवनीत जी को धन्यवाद देते है। कृति की प्रेस कॉपी के अध्ययन एवं उसमें अनेक सुझाव देने हेतु हम ज्ञानपीठ के सचिव **डॉ. अनुपम जी** के प्रति भी आभार व्यक्त करते हैं। माणकचंद मगनीराम गोठ के सभी सहयोगी ट्रस्टीगण, उनके परिवार, मंदिर के व्यवस्थापक एवं कर्मचारी भी धन्यवाद के पात्र हैं जिनके सक्रिय सहयोग से यह कार्य सुगम हो सका।

कृति के त्वरित एवं सुरुचिपूर्ण मुद्रण की व्यवस्था हेतु मे. सुगन ग्राफिक्स भी प्रशंसा के पात्र हैं।

– डॉ. अजितकुमारसिंह कासलीवाल
D. Litt.
अध्यक्ष – कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ,
584, महात्मा गाँधी मार्ग,
इन्दौर – 452001
मो. : 09302104700

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशकीय

भारतीय संस्कृति विशेषतः मूर्तिकला, स्थापत्यकला, वास्तु विन्यास एवं चित्रकला के विकास में जैन संस्कृति का योगदान अतुलनीय है किन्तु जैन धर्मानुयाइयों के प्रमाद एवं एतद् विषयक उपेक्षाभाव के कारण हमारी सांस्कृतिक धरोहर, जंगलों एवं असुरक्षित स्थानों पर काल के प्रभाव से निरन्तर क्षरित हो रही है। सुयोग से सुरक्षित स्थानों पर संरक्षित हमारी मूर्तियों, पांडुलिपियां एवं चित्रावलियां भी सम्यक सूचीकरण, प्रचार–प्रसार के अभाव के कारण अकादमिक जगत का ध्यान आकृष्ट नहीं कर पा रही हैं । इसका ही दुष्परिणाम है कि इतिहासविद् भारतीय संस्कृति के विकास में जैन परम्परा के योगदान का सम्यक् आकलन नहीं कर पा रहे वरना जैन संस्कृति का योगदान सर्वोपरि है।

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ के संस्थापक अध्यक्ष एवं प्रेरणा स्त्रोत **काका सा. श्री देवकुमारसिंह कासलीवालजी** की जैन इतिहास में गहन रुचि थी। मूर्ति प्रशस्तियों एवं पांडुलिपियों के सूचीकरण का कार्य उन्होंने सातवें दशक में ही शुरु कर दिया था। कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ की स्थापना (1987) के बाद इस काम में गति आई । 1988–97 के बीच जहां गोपाचल अभिलेखीकरण एवं संरक्षण परियोजना चली, वहीं 1993 में अमर ग्रंथालय, इन्दौर के ग्रंथों का सूचीकरण भी हुआ ।

The Jain Sanctuaries of the fortress of Gwalior (Dr. T.V.G. Shastri) का कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशन इसी श्रृंखला में बढ़ाया गया एक महत्वपूर्ण पग था।

इन्दौर के कांच मंदिर (श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर) की राष्ट्रीय – अंतर्राष्ट्रीय ख्याति है। प्रतिदिन सैकड़ों जैन एवं जैनेतर दर्शक इसे देखने आते हैं। कांच मंदिर, इंदौर के भी ट्रस्टी आदरणीय काका सा. की यह तीव्र अभिलाषा थी कि इस राष्ट्रीय महत्व के मंदिर का वैशिष्ट्य, इसमें कांच द्वारा बनाये गये आकर्षक चित्रों को प्रभावी ढंग से दर्शकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाये। वे चाहते थे कि यहां लाल किले / ताजमहल आदि के समान Light & Sound Show हो एतदर्थ सभी प्रमुख चित्रों का विवरण क्रमबद्ध तरीके से तैयार कराया गया। उनकी यह भी अभिलाषा थी कि एक रंगीन सचित्र पुस्तिका का प्रकाशन हो जिसमें यहां के सभी चित्रों में निहित भाव, कथानक एवं संदेश दर्शकों तक पहुंचाया जा सके। वे इसका अंतर्राष्ट्रीय मानकों पर प्रकाशन कराना चाहते थे एतदर्थ चित्रावलियों का परिचय मेरे द्वारा तैयार भी किया गया, ऑडियो सी.डी. भी बनी, किन्तु उनकी अस्वस्थता एवं अन्य अपरिहार्य कारणों से योजना मूर्तरूप नहीं ले सकी।

डॉ. नवनीत कुमार जैन, मोरेना जैन, इतिहास एवं पुरातत्व के अध्येता युवा विद्वान हैं। विगत 4–5 वर्षों में म.प्र. विशेषतः ग्वालियर एवं मुरैना अंचल के अनेक क्षेत्रों, मंदिरों में सुरक्षित / असुरक्षित रूप से रखी मूर्तियों/यंत्रों, कलाखंडों को प्रकाश में लाने वाले मौलिक शोधपूर्ण आलेख आपने **अर्हत् वचन** में प्रकाशित कराये हैं। उनके इस मौलिक योगदान से प्रभावित होकर कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ पुरस्कार चयन समिति ने उन्हें कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ पुरस्कार (2011) से सम्मानित करने का निश्चय किया। मार्च 2012 में घोषित इस पुरस्कार का समर्पण समारोह 27–28 अक्टूबर 2012 को ज्ञानपीठ परिसर में आयोजित किया गया। जहां ज्ञानपीठ के सक्रिय एवं यशस्वी अध्यक्ष डॉ. अजितकुमारसिंह कासलीवाल (बाबू सा.) से डॉ. नवनीत कुमार जैन का प्रथम साक्षात्कार हुआ।

संकल्पित कार्य को द्रुतगति से सम्पूर्ण समर्पण के साथ पूर्ण कराने की अपनी शैली के कारण बाबू सा. ने सतत् प्रेरणा देकर डॉ. नवनीत जी से इस कृति का लेखन पूर्ण कराया फलतः नवम्बर–दिसम्बर 2012 की 2 माह की अल्पावधि में पुस्तक वर्तमान रूप में आ सकी। तत्परता से प्रमाणिक रूप में पुस्तक के लेखन एवं उसकी प्रकाशन योग्य प्रति को तैयार करने हेतु मैं अपने अनुजवत् भाई नवनीतजी को बधाई देता हूँ।

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ इस श्रेष्ठ कृति को प्रकाशित कर गौरवान्वित है। हम इसके प्रकाशन हेतु आर्थिक संसाधन उपलब्ध कराने के लिए कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ एवं उसकी मातृ संस्था दिगम्बर जैन उदासीन आश्रम ट्रस्ट के अध्यक्ष **डॉ. अजितकुमारसिंहजी कासलीवाल** के प्रति भी आभार ज्ञापित करते हैं। किसी भी कृति के सच्चे सभीक्षक पाठक होते हैं। सुधी पाठकों की प्रतिक्रियाओं की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

14.01.13

प्रो. (डॉ.) अनुपम जैन
मानद सचिव, कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ
584, महात्मा गांधी मार्ग, तुकोगंज, इन्दौर 452001
0731–2797790, 2545421, 09425053822
anupamjain3@rediffmail.com

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेखकीय

मध्यप्रदेश राज्य के व्यावसायिक महानगर इन्दौर के हृदयस्थल राजबाड़ा के इतवारिया बाजार में सर सेठ हुकमचन्द्र मार्ग पर स्थित 'श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन कांच मन्दिर' अपने अनूठे स्थापत्य, कांच की सुन्दरतम् जड़ाऊ सज्जा और धार्मिक एवं दार्शनिक दृश्य चित्रकारी के लिए सर्वविख्यात् है। "कांच मन्दिर" के नाम से प्रख्यात् इस मन्दिर भवन का निर्माण–कार्य 1912 ई. में आरंभ हुआ था और लगभग आठ वर्षों के निरन्तर परिश्रम के उपरान्त 11 जुलाई सोमवार 1921 ई. में यह अनुपम मन्दिर भवन बनकर तैयार हुआ। इसी दिन इस मन्दिर में जिनबिम्ब वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव भव्यतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस मन्दिर का निर्माण दानवीर, तीर्थभक्त शिरोमणि, राज्यभूषण रायबहादुर रावराजा स्व. सर सेठ हुकमचन्द्रजी के नेतृत्व में कासलीवाल परिवार के सदस्य रायबहादुर स्व. सेठ कस्तूरचन्द्रजी बैंकर, राज्यभूषण रायबहादुर स्व. सेठ कल्याणमलजी और सर सेठ हुकमचन्द्रजी के सुपुत्र स्व. भैयासाहब श्री राजकुमारसिंहजी ने मिलकर "माणिकचन्द्र मगनीराम" नाम से एक गोठ (फर्म) स्थापित कर उसके अन्तर्गत करवाया था।

अनूठी त्रितलीय स्थापत्य संरचना पर आधारित इस मन्दिर भवन में सर्वाधिक प्रेक्षणीय भूतल की आन्तरिक दीवारों के एक–एक इंच भाग पर रंगीन कांचों से हुआ जड़ाऊ अलंकरण और दृश्य चित्रकला का अद्भुत समायोजन है। इस अद्भुत समायोजन को देखकर कांचकारों एवं चित्रकारों के गहन अनुभव एवं कुशलता का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इन कलाकारों द्वारा रंगीन कांचों को विविध ज्यामितीय आकार–प्रकारों में काटकर अलंकरण अभिप्राय की रूपरेखा के अनुरूप दीवार में जड़ा गया है। कांच से बने इन अलंकरण अभिप्रायों के बीच–बीच में कई स्थलों पर दीवार में दृश्य चित्रकारी को स्थान दिया गया है। ये दृश्य चित्र जैन परम्परा के धार्मिक, दार्शनिक एवं तीर्थक्षेत्र पक्षों के ओत–प्रोत हैं। जगह–जगह पर मन्दिर भवन में दीवारों पर उपदेशप्रद जैन धार्मिक वचन, श्लोक, दोहे आदि भी लिखे हुए हैं। मन्दिर में बने अनेक प्रवेश–द्वारों एवं दीवारों में बनी अलमारियों के द्वारों पर भी आकर्षक सज्जा की गई है। प्रवेश–द्वारों के किवाड़ भी मोहक रूप में कुछ उदाहरणों में नक्काशीयुक्त रजत (चांदी) पत्र चढ़ाकर और कुछ उदाहरणों के रंगीन कांचों की सज्जा से बने हुए हैं।

कांचकारी एवं चित्रकारी के अलावा मन्दिर भवन के भूतल पर बनी एक वेदी और प्रथम तल पर बनीं दो वेदियों पर कुल 25 जिन प्रतिमाएँ एवं 24 धातुनिर्मित यन्त्रजी विराजमान हैं। ये जिन प्रतिमाएँ संगमरमर, कृष्ण पाषाण और अष्ट धातु से बनी हुई हैं। इनमें सर्वाधिक प्रतिमाएँ अष्ट धातु से बनी हुई हैं। कालक्रम की दृष्टि से ये प्रतिमाएँ 16–17वीं शती ई. से लेकर अर्वाचीन काल तक की हैं। इस मन्दिर में वेदियों पर विराजमान कुछ प्रतिमाएँ इस मन्दिर के निर्माण काल से पूर्वकाल की हैं। कालान्तर में इन्हें कहीं ओर से लाकर इस मन्दिर की वेदियों पर स्थापित कर दिया गया था। सभी यन्त्रजी आधुनिक काल के हैं।

कांचकारी, चित्रकला और मूर्तिकला के अलावा इस मन्दिर भवन के प्रथम तल पर सरस्वती कक्ष में 417 हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ भी अलमारियों में सुरक्षित अवस्था में रखी हुई हैं। इनका व्यवस्थित अभिलेखीकरण डॉ. अनुपम जैन के मार्गदर्शन में कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर द्वारा कराया जा चुका है।

इन सभी पक्षों का व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत पुस्तक में किया गया है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से इस पुस्तक को तीन अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में कांच मन्दिर का परिचय, उसकी स्थिति, स्थापत्य, चित्रकला, कांचकारी आदि पक्षों को समाहित किया गया है। इस अध्याय से सम्बन्धित मानचित्रों एवं छायाचित्रों को अध्याय के अन्त में नियोजित किया गया है। कुछ चित्रों को विवरण के साथ ही यथास्थान संलग्न कर दिया गया है।

द्वितीय अध्याय में मन्दिर भवन की दीवारों पर निर्मित भितिचित्रों को उनके विवरण के साथ निबद्ध किया गया है। इस अध्याय में चित्रों को तत्सम्बन्धी क्रमांक, शीर्षक, चित्र तथा विवरण के रूप में नियोजित किया गया है। ध्यातव्य हो कि इन चित्रों को नवीन क्रमांकन के रूप में व्यवस्थित किया गया है, जबकि चित्रों के साथ अभी भी पुरानी क्रमसंख्या अंकित है। इस सम्बन्धी सूची इस अध्याय के अन्त में संलग्न की गई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तृतीय अध्याय में मन्दिर भवन में भूतल की एक वेदी और प्रथम तल पर स्थित दो वेदियों में विराजमान मूर्तियों एवं यन्त्रजी का वेदीवार विवरण समाहित किया गया है। प्रत्येक मूर्ति के साथ तीर्थंकर का नाम, माध्यम (निर्माण सामग्री), माप, मुद्रा, काल, अभिलेख, लिपि, भाषा, प्रतिमाशास्त्रीय विवरण, अभिलेख का पाठ व भावार्थ आदि सूचनाएँ क्रमबद्ध रूप में यथास्थान छायाचित्रों के साथ अंकित की गई हैं। यन्त्रजी को भी उनके नाम, काल, अभिलेख, लिपि, भाषा, अभिलेख का पाठ आदि जानकारियों के साथ–साथ यथास्थान छायाचित्रों को संलग्न कर नियोजित किया गया है।

चूँकि हस्तलिखित पोथियों का अभिलेखीकरण एवं अध्ययन कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर द्वारा पूर्व में सम्पन्न हो चुका है, अतः इस पुस्तक में उन्हें सम्मिलित नहीं किया गया है।

यह पुस्तक पूर्णतः मौलिक कृति है। पाठकों को इस पुस्तक से अवश्य ही लाभ होगा, ऐसी मेरी अपेक्षा है।

इस मौलिक कृति के प्रेरणास्रोत डॉ. अजितकुमार सिंह कासलीवाल, डी. लिट्, इन्दौर का मैं सर्वप्रथम हृदय से कोटि–कोटि आभार व्यक्त करता हूँ कि उनकी प्रबल इच्छा के कारण ही मैं इस पुस्तक के लेखन–कार्य को अत्यन्त अल्प समय में पूर्ण कर सका। संयोग बना कि अक्टूबर 2012 में जैन स्वर्ण मन्दिर, ग्वालियर के अध्यक्ष श्री अनिल शाह ने इन्दौर प्रवास के दौरान मेरे व प्रो. ए. के. सिंह द्वारा तैयार की गई पुस्तक "जैन स्वर्ण मन्दिर, ग्वालियर" पुस्तक को छपने के तुरन्त बाद डॉ. अजितकुमार सिंह कासलीवाल को अवलोकनार्थ दिखाया। डॉ. कासलीवाल ने श्री अनिल शाह के माध्यम से तुरन्त मुझसे बात की और जैन स्वर्ण मन्दिर, ग्वालियर की पुस्तक के समान ही इन्दौर के प्रख्यात् "कांच मन्दिर" पर भी ऐसी ही पुस्तक तैयार करने को कहा। इसके बाद डॉ. कासलीवाल निरन्तर टेलीफोन के माध्यम से मुझे कांच मन्दिर की पुस्तक तैयार करने को प्रेरित करते रहे। कुछ दिनों के उपरान्त मेरा कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ पुरस्कार ग्रहण करने के लिए इन्दौर जाना हुआ। वहाँ डॉ. कासलीवाल ने मुझसे इस पुस्तक की स्वीकारोक्ति करवा ली और इस कार्य को शीघ्रतिशीघ्र सम्पन्न करने को कहा। नवम्बर 2012 के प्रथम सप्ताह में मैंने कांच मन्दिर, इन्दौर का दो दिवसीय सर्वेक्षण किया और वापस लौटकर पुस्तक लेखन का कार्य आरंभ कर दिया। दिसम्बर 2012 के प्रथम सप्ताह में मैंने पुनः कांच मन्दिर का दो दिवसीय सर्वेक्षण किया और वापस लौटकर कुछ दिनों के पश्चात् इस पुस्तक को अन्तिम रूप देकर छपवाने के लिए भेज दिया। पुनः जनवरी 2013 के प्रथम सप्ताह में इंदौर जाकर पुस्तक की प्रेस कॉपी को अंतिम रूप दिया। इस दौरान डॉ. कासलीवाल निरन्तर मुझे प्रेरित एवं मार्गदर्शन करते रहे और उन्होंने आवश्यक सामग्री एवं सुविधाओं की समुचित व्यवस्था करवाई। वाकई यह पुस्तक डॉ. अजितकुमार सिंह कासलीवाल, अध्यक्ष–कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर की प्रबल इच्छाशक्ति का परिणाम है।

कांच मन्दिर के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराने एवं कांच मन्दिर के चित्रों की सूची उपलब्ध कराने के लिए मैं प्रो. अनुपम जैन, मानद् सचिव, कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर का सदैव आभारी रहूंगा। उनके द्वारा तैयार की गई कांच मन्दिर के चित्रों के सूची ने इस पुस्तक के लेखन में मुझे बहुत सहायता दी। पुस्तक की प्रेस कॉपी में आवश्यक संशोधन एवं सुझाव देने में डॉ. अनुपमजी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। एतदर्थ पुनः आभार।

मैं अपने मित्र श्री विवेक दीक्षित का विशेष रूप से आभारी हूँ कि उन्होंने अपने अमूल्य समय में से समय निकालकर मेरे साथ इन्दौर जाकर कांच मन्दिर के सर्वेक्षण में मेरा सहयोग दिया और यथासमय आवश्यक सामग्री भी उपलब्ध कराने में हमेशा तत्परता दिखाई।

कांच मन्दिर के प्रबन्धक श्री नरेश मिण्डा, मुनीम श्री धर्मेन्द्र जोशी और श्री प्रदीप जैन, प्रबन्धक ट्रस्ट व श्याम लाल प्रजापति, कार्यालय सहायक का मैं उनके द्वारा प्रदान बहुविध सहयोग के लिए बहुत आभारी हूँ । कांच मन्दिर के कर्मचारीगण श्री रामू, महादेवराव, प्रभाकर राव, विक्रम, हरिकिशन, दौलतराम, छोटू दादा, गणपत राव, सुनील पुजारी आदि का मैं बहुत कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने मन्दिरजी में सर्वेक्षण के दौरान समय–समय पर मुझे आवश्यक सहायता उपलब्ध करवाई। श्री मनोज जैन, फोटोग्राफर का भी मैं परम आभारी हूँ, जिन्होंने यथा समय छायाचित्र लेकर मेरी बहुत सहायता की।

पुस्तक के स्वच्छ एवं शीघ्र प्रकाशन के लिए मैं कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर का शताधिक आभार व्यक्त करता हूँ।

– नवनीत कुमार जैन

मुरैना (म. प्र.)
जनवरी 2013

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वंश वृक्ष
मंदिर का निर्माता परिवार

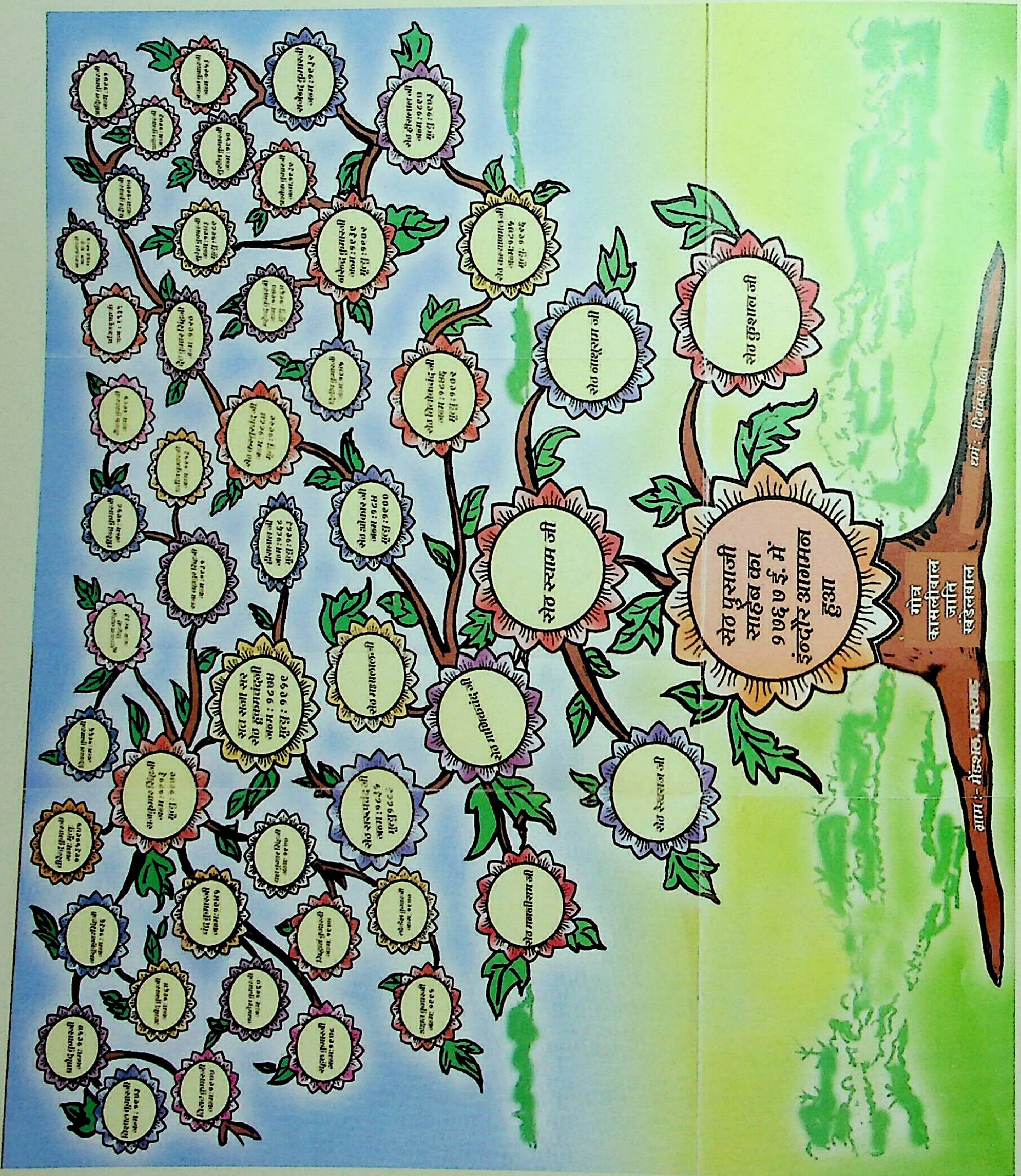

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अध्याय 1

परिचय

भारतवर्ष के मध्यप्रदेश प्रान्त के इन्दौर महानगर के हृदयस्थल राजबाड़ा के दीतवारिया (इतवारिया) बाजार में सर सेठ हुकमचंद्र मार्ग पर स्थित "कांच मन्दिर" अपने नामानुरूप कांच से हुए अद्वितीय एवं नयनाभिराम जड़ाऊ सज्जा के लिए प्रेक्षणीय एवं विख्यात् है। इस मन्दिर की आन्तरिक दीवारों एवं वितान भाग को विभिन्न आकार–प्रकार के रंगीन कांचों से विविधतापूर्ण सुन्दर सजावटी रूप देकर और स्थान–स्थान पर जैन धर्म सम्बन्धी उपदेशपूर्ण एवं शैक्षिक कथा–चित्रों को दर्शाकर तथा साथ ही साथ भारत के प्रमुख जैन तीर्थक्षेत्रों को चित्रों के माध्यम से रूपायित कर – इस अद्भुत संयोजना ने कांच मन्दिर को आकर्षण का केन्द्र होने के साथ–साथ चित्रकला एवं कांचकला के प्रशंसकों के मध्य चर्चा का केन्द्र बना दिया है।

इन्दौर प्राचीन काल से ही राजनैतिक, व्यावसायिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का महत्त्वपूर्ण केन्द्र रहा है। मध्यप्रदेश प्रान्त की स्थापना से पूर्व इन्दौर मध्यभारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी थी और विलीनीकरण से पूर्व होल्कर राजवंश की राजधानी रही थी। मालवा की उर्वराभूमि, विक्रम की उज्जैन नगरी और भोज की धारानगरी के मध्य भाग में स्थित इन्दौर महानगरी अपना एक ऐतिहासिक एवं व्यावसायिक महत्त्व रखती है। कांच मन्दिर के निर्माण में भी मालवा भूमि की अबाध सांस्कृतिक एवं कला–परम्परा की सशक्त अभिव्यंजना निहित है और यह मन्दिर कांचकारी और चित्रकारी के सम्मिलिन से हुए अद्भुत परिष्कार के लिए न केवल मालवा का वरन् सम्पूर्ण भारतवर्ष में अपनी तरह का एकमात्र विलक्षण उदाहरण है।

इन्दौर शहर के मध्य भाग राजबाड़ा के समीप दीतवारिया (इतवारिया) बाजार में सर सेठ हुकमचंद्र मार्ग पर स्थित "श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन कांच मन्दिर" वर्तमान में "कांच मन्दिर" के नाम से ही चहुँओर प्रख्यात् है (चित्र 1)। इस मन्दिर का मुख्य द्वार सर सेठ हुकमचन्द्र मार्ग पर और दूसरा द्वार नलिया बाखल में भरत मार्ग पर खुलता है। इन्दौर रेलवे स्टेशन एवं बस अड्डा से यह मन्दिर लगभग 3 कि. मी. की दूरी पर स्थित है, जहां से स्थानीय एवं स्वयं के साधनों द्वारा यहाँ आसानी से पहुँचा जा सकता है।

इस मन्दिर भवन के भूतल पर पश्चिमी दीवार में जड़े संगमरमर पर उत्कीर्ण एक शिलालेख से ज्ञात होता है कि इस मन्दिर का निर्माण खण्डेलवाल वंश व कासलीवाल गोत्र के श्री सरूपचन्द्रजी (स्वरूपचन्द्रजी) के सुपुत्र श्री हुकमचंद्रजी (हुकुमचंद्रजी), श्री ओंकारजी के सुपुत्र श्री कस्तूरचंद्रजी, श्री त्रिलोकचंद्रजी के सुपुत्र कल्याणमलजी और श्री हुकुमचंद्रजी के सुपुत्र राजकुमारजी ने सम्मिलित रूप से "माणकचंद्र मगनीराम" नाम से एक मारवाड़ी गोठ (फर्म) स्थापित कर उसके अन्तर्गत विक्रम संवत् 1978 आषाढ़ सुदि 7 (11 जुलाई सोमवार 1921 ई.) को करवाया और उसमें जिनबिम्ब प्रतिष्ठा करवाई थी। यह शिलालेख संस्कृत एवं हिन्दी दोनों भाषाओं में लिखा हुआ है। सर्वप्रथम देवनागरी लिपि एवं संस्कृत भाषा में दस पंक्तियों में लेख का पाठ अधोलिखित है –

1. ।।श्री ।।
2. ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री अष्टससधिकै कोन विंशतिशत विक्रमाब्देः
3. 1978 मिती आषाढ शुद्धास सम्यां सोमवासरे श्रीमान्
4. राज्याधिराज श्री 5 होल्कर श्री सवाई तानातक्कुजी तिना–
5. म्ना प्रसिद्ध महाराज राज्यावसरे मालव देशे इन्द्रा वत्यान्नगर्य्यां
6. श्री 6 श्री कुंदकुंदार्यवर्य्य परम दिगम्बराम्नाये गुरुपदेशात्
7. प्रतिष्ठितं श्री जिन मंदिरं खांडिल्य वंशोद्भव काशलीवाल गोत्रीय
8. हुकमचंद्र कस्तूरचंद्र कल्याणमल्ल हीरालाल राजकुमारेभ्यो
9. मगंलं ददातु श्री मारवाडी गोठ माणकचंदजी मगनीरामजी
10. श्रावक दिगम्बर शुद्धाम्नायिकं श्री जिन मन्दिर मिदम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

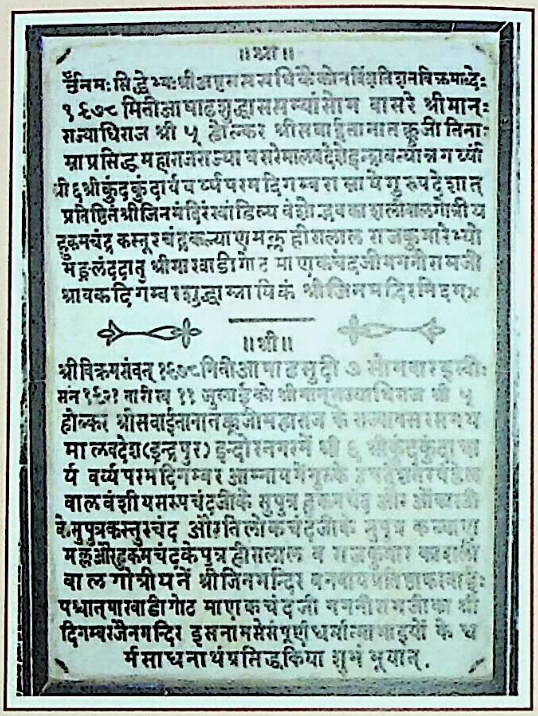

मन्दिर भवन में जड़ा शिलालेख

इन 10 पंक्तियों के उपरान्त देवनागरी लिपि एवं हिन्दी भाषा में 13 पंक्तियों में अधोलिखित प्रकार से अभिलेख उत्कीर्ण है –

1. ।। श्री ।।
2. श्री विक्रम संवत् 1978 मिती आषाढ सुदी 7 सोमवार इस्वीः
3. सन 1921 तारीख 11 जुलाई को श्रीमान् राज्याधिराज श्री 5
4. होल्कर श्री सवाई तानतक्कूजी महाराज के राज्यावसर समय
5. मालवदेश (इन्द्रपुर) इन्दोर नगर में श्री 6 कुंदकुंदाचा
6. र्य वर्य्य परम दिगम्बर आम्नाय में गुरु के उपदेश से खंडेल
7. वाल वंशीय सरुपचंदजी के सुपुत्र हुकमचंद और ओंकारजी
8. के सुपुत्र कस्तूरचंद और तिलोकचंदजी के सुपुत्र कल्याण
9. मल्ल और हुकमचंदजी के पुत्र हीरालाल व राजकुमार काशली
10. वाल गोत्रीय नें श्री जिन मन्दिर बनवाय प्रतिष्ठा करवाईः
11. पश्चात् मारवाडी माणकचंदजी मगनीरामजी का श्री
12. दिगम्बर जैन मन्दिर इस नाम से संपूर्ण धर्मात्मा भाइयों के ध–
13. र्म साधनार्थ प्रसिद्ध किया शुभं भूयात्.

इस अभिलेख एवं मन्दिर में बने मन्दिर के प्रतिष्ठा महोत्सव से सम्बन्धित चित्र (क्रमांक 1) से सुस्पष्ट है कि इस मन्दिर भवन का निर्माण दानवीर तीर्थभक्त शिरोमणि राज्यभूषण रायबहादुर रावराजा सर सेठ श्री हुकुमचंद्रजी, रायबहादुर सेठ कस्तूरचंद्रजी बैंकर, राज्यभूषण रायबहादुर सेठ कल्याणमल्लजी (कल्याणमलजी) और श्री हुकुमचंद्रजी के सुपुत्र रायबहादुर राज्यभूषण भैया साहब श्री राजकुमारजी ने सम्मिलित रूप से "माणकचंद्र मगनीराम" नाम से एक मारवाड़ी गोठ (फर्म) स्थापित कर उसके अन्तर्गत विक्रम संवत् 1978 आषाढ़ सुदि 7 (11 जुलाई सोमवार 1921 ई.) को पूर्ण करवाया था और उसमें जिन–प्रतिष्ठा करवाई थी। ज्ञात होता है कि मारवाड़ी समुदाय में परस्पर मतभेद हो जाने के कारण सेठ श्री हुकुमचंद्रजी, सेठ श्री कस्तूरचंद्रजी एवं कल्याणमलजी ने संवत् 1969 अर्थात् 1912 ई. में अपने पूर्वजों के नाम पर "माणकचंद्र मगनीराम" नामक गोठ अथवा फर्म की स्थापना की और इसी फर्म के अन्तर्गत 1912 ई. में ही श्री इतवारिया बाजार में स्थित श्री कनीराम चम्पालाल का मकान खरीदकर उसे मन्दिर के लिए दान कर दिया। इस प्रकार 1912 ई. में कांच मन्दिर की नींव 'माणकचंद्र मगनीराम' गोठ के अन्तर्गत पूर्वोक्त सेठ साहबों द्वारा डाली गई। इस मन्दिर के निर्माण के लिए जयपुर एवं ईरान तक से कुशल और सुयोग्य कारीगर बुलवाये गये थे। 1921 ई. में कांच मन्दिर भवन का निर्माण कार्य पूर्ण हुआ और बड़ी धूमधाम से इस मन्दिर में वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव समारोह सम्पन्न हुआ।

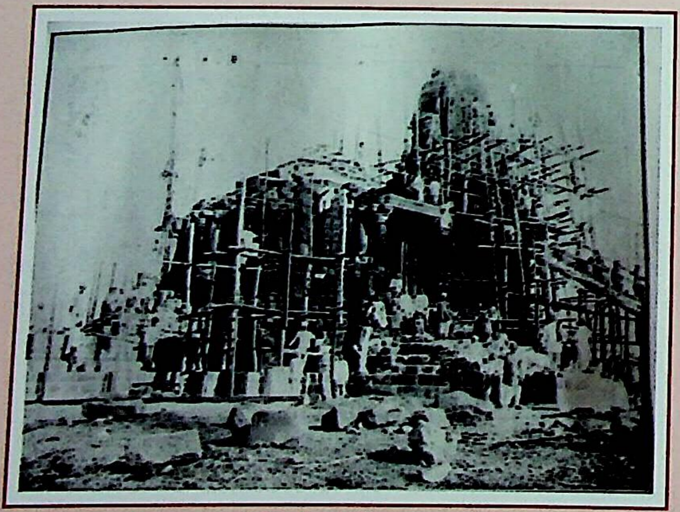

मन्दिर भवन के निर्माण के दौरान का दुर्लभ चित्र

सेठ साहबों की उदारतावश यह मन्दिर न केवल जैन धर्मावलम्बियों की पूजा एवं आस्था का केन्द्र रहा वरन् सभी समुदायों के लोगों के देखने के लिए खोल दिया गया है। आमजन से लेकर खासजन तक के लिए यह मन्दिर आकर्षण का अपूर्व केन्द्र बना और दूर–दूर से श्रद्धालुजन इस मन्दिर को देखने के लिए आतुर रहने लगे। भारत के पूर्व वायसराय लार्ड रीडिंग व लेडी रीडिंग, पूर्व प्रधान सेनापति फील्ड मार्शल सर विलियम वर्डवुड, बड़ौदा, दतिया, प्रतापगढ़, कुशलगढ़, कांछी, बड़ोद, ध्रांगध्रा, वासंदा आदि राज्यों के नरेश, मध्यभारत के एजेण्ट और आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय, महामना मदनमोहन मालवीयजी आदि महानुभाव इस

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन्दिर के दर्शन कर चुके हैं और इस मन्दिर की भव्यता, कारीगरी, कांचकारी, पच्चीकारी, चित्रकला, भावदर्शन आदि पहलुओं की बेहद प्रशंसा की है। इस मन्दिर में एक विशाल सरस्वती भण्डार भी विद्यमान है, जिसमें 417 ग्रन्थों का संग्रह किया गया है। इस विशाल मन्दिर के साथ में ही एक विशाल धर्मशाला भी बनवाई गई, जिसमें जाति की रसोई आदि के लिए उत्तम व्यवस्था है।

कांच मन्दिर का निर्माणकर्ता कासलीवाल परिवार किसी परिचय का मोहताज नहीं है। 18वीं शती ई. के अन्तिम दशकों में आज का इन्दौर महानगर एक कस्बे के रूप में था, जब इस परिवार के पूर्वज स्वर्गीय सेठ श्री पूसाजी मारवाड़ के लाडनूं प्रदेश के मेंडसिल गाँव से इन्दौर प्रवासित हुए। तब से लेकर वर्तमान काल तक इस परिवार का आधुनिक इन्दौर नगर के विकास में अपूर्व योगदान रहा है। सर सेठ हुकमचंद्रजी को तो वर्तमान मालवा का निर्माता भी कहा जा सकता है। सेठ पूसाजी का परिवार धनधान्य से ही नहीं, अपितु पुत्र–पौत्र आदि से भी बहुत समृद्ध और सम्पन्न हुआ। उनके पुत्र सेठ कुशालजी और सेठ श्यामाजी में से सेठ श्यामाजी के यहाँ कांच मन्दिर के निर्माणकर्ता अग्रजों का जन्म हुआ। सेठ श्यामाजी के तीन पुत्र – सेठ माणिकचन्द्रजी, सेठ लेखरामजी और सेठ नाथूरामजी हुए। इनमें से सेठ लेखरामजी व सेठ नाथूराम जी के कोई पुत्र नहीं थे, किन्तु सेठ माणिकचन्द्रजी के पाँच सुपुत्र हुए – सेठ मगनीरामजी, सेठ स्वरूपचन्द्रजी, सेठ मन्नालालजी, सेठ ओंकारजी और सेठ तिलोकचन्द्रजी। दो पुत्रियाँ भी हुईं। तीसरे पुत्र सेठ मन्नालालजी का अल्पायु में ही निधन हो गया। सेठ मगनीरामजी के कोई संतान नहीं थी। उन्होंने 1907 ई. में साहूकारी का काम आरंभ किया और अपने पिता की अनुमति से 'सेठ माणिकचन्द्र मगनीराम' नाम से दुकान स्थापित की और व्यापार में अपूर्व वृद्धि की। उनकी गणना लखपतियों में की जाने लगी। सेठ स्वरूपचन्द्र और उनकी पत्नी जबरीबाईजी से 1874 ई. में सर सेठ हुकुमचन्द्रजी का जन्म हुआ। सेठ ओंकारजी एवं सेठ तिलोकचन्द्रजी के यहाँ क्रमशः सेठ कस्तूरचन्द्रजी और कल्याणमलजी हुए। ये दोनों पुत्र मारवाड़ से गोद लाये गये थे। सेठ स्वरूपचन्द्रजी, सेठ ओंकारजी एवं सेठ तिलोकचन्द्रजी तीनों भाई सम्मिलित रूप से व्यापार–कारोबार करते थे। इनका यह संयुक्त परिवार 'हावल्या कावल्या' नाम से पुकारा जाने लगा। सर सेठ हुकुमचन्द्रजी के सुपुत्र – सेठ श्री राजकुमारसिंहजी हुए। सेठ कस्तूरचन्द्र के एक पुत्र – श्री देवकुमारसिंह कासलीवालजी हुए। उनके दो पुत्र – डॉ. अजितकुमारसिंह कासलीवाल एवं श्री प्रदीपकुमारसिंह कासलीवाल हुए। सेठ कल्याणमलजी के एक पुत्र– श्री हीरालालजी हुए। इस परिवार ने जहाँ एक ओर व्यापार एवं कारोबार में अपूर्व सफलता प्राप्त की और जगह–जगह मिलें एवं कारखानें बनवाये, वहीं दूसरी ओर दानशीलता के परिप्रेक्ष्य में भी इस परिवार का नाम अग्रणी रहा है। समग्र रूप से कहा जाए कि इस परिवार का नाम व दान मालवा के इतिहास में सर्वोपरि है, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

इस भवन मन्दिर की कुल चौड़ाई लगभग 37 फुट 8 इंच और लम्बाई 130 फुट के लगभग है। मन्दिर में प्रवेश हेतु दो मुख्य प्रवेश–द्वारों का विधान हुआ है – एक द्वार सर सेठ हुकुमचन्द्र मार्ग की ओर दक्षिणाभिमुखी रूप में बना हुआ है और दूसरा भरत मार्ग की ओर उत्तराभिमुखी रूप में खुलता है। इनमें से सर सेठ हुकुमचन्द्र मार्ग की ओर बने द्वार का उपयोग वर्तमान में मुख्य रूप से हो रहा है और इस पुस्तक में भी इसी द्वार को मुख्य मानकर उसके अनुसार ही वर्णन किया गया है। इस मन्दिर भवन को बाहर से देखने पर ही इसके अपूर्व महत्त्व का स्वतः ही अनुभव हो जाता है। पत्थर पर बेल–पत्रों का सुन्दर अलंकरण और लघु आकार के मन्दिरानुकृतियों के रूप में छज्जों का विधान इस मन्दिर भवन के प्राचीन एवं आकर्षक होने का सहज ही संज्ञान करा देते हैं।

इस मन्दिर भवन की ऊर्ध्वविन्यास योजना में तीन तलों का प्रावधान हुआ है। इनमें तलघर के रूप में एक तल का उपयोग वर्तमान में संग्रहण एवं भण्डारण आदि कार्यों के लिए होता है। इसी तल पर एक कुआं भी बना हुआ है, जिसके जल का उपयोग मन्दिरजी के दैनिक कार्यों के लिए होता है। मन्दिरजी में पूजा–प्रक्षाल से पूर्व स्नान आदि की व्यवस्था हेतु इसी तल पर स्नानगृह आदि बने हुए हैं। भूतल की पूर्वी दीवार में बनी सीढ़ियों के एक मार्ग द्वारा तलघर तक पहुँचा जाता है।

भूतल (Ground Floor) की तलविन्यास योजना में क्रमशः बरामदा, सभाकक्ष, मूलनायक वेदी कक्ष अथवा गर्भगृह, प्रार्थना सभा, सभाकक्ष और उसके बाद पुनः बरामदे का निर्माण किया गया है। भूतल तक पहुँचने के लिए सर सेठ हुकुमचंद्र मार्ग तथा भरत मार्ग दोनों ओर बने एक–एक बड़े द्वार से लगी सीढ़ियों का विधान हुआ है। इन बड़े द्वारों के ऊपर लगे पत्थरों पर पुष्प–पत्रों की सुन्दर नक्काशी की गई है। इन द्वारों के मध्य भाग में दोनों ओर एक–एक

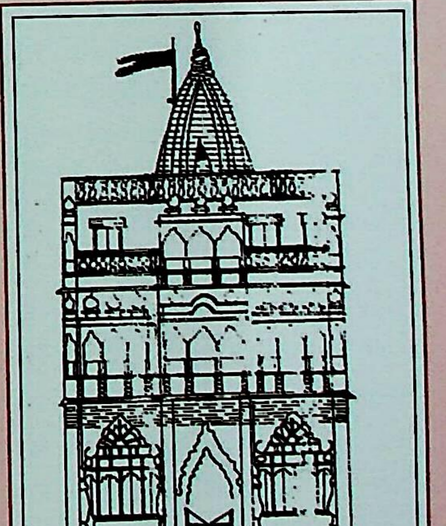

मन्दिर भवन के मुख्य भाग का ऊर्ध्वविन्यास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वारपाल आकृतियों का निर्माण किया गया है। इन द्वारपालों को पीले रंग की वेशभूषा में सिर पर पगड़ी पहने एवं दोनों हाथों में दण्ड धारण किये खड़ा हुआ दिखाया गया है। कांच से निर्मित सुन्दर अलंकरणों से शोभित सीढ़ियों के माध्यम से ऊपर पहुँचने पर 12'7'' X 31' माप के बरामदे में प्रवेश करते हैं। इस बरामदे में प्रवेश का एक ही द्वार बना हुआ है। यह बरामदा अत्यन्त सुन्दर है। बरामदे की चारों ओर की आन्तरिक दीवारों पर कांचकारी एवं चित्रकारी की सुन्दर सजावट देखने को मिलती है और बरामदे के वितान भाग पर हरे, लाल,पीले एवं सफेद रंग से सराबोर मोहक पुष्पीय चित्रांकन मिलता है।

इस बरामदे में से सभाकक्ष में प्रवेश हेतु तीन प्रवेश–द्वारों का निर्माण हुआ है और ये तीनों द्वार अत्यन्त भव्य रूप में बने हुए हैं। मध्य के मुख्य द्वार के ललाटबिम्ब में स्वर्ण रंग से मण्डित पद्मासन मुद्रा में एक लघु जिन आकृति का अंकन हुआ है। प्रवेश–द्वार के शाखाओं को फूलदान से उद्गमित सुन्दर बेलपत्रों से सजाया गया है। इस प्रवेश–द्वार के ऊपर के भाग में ''अहिंसा परमो धर्मः दिगम्बर जैन मन्दिर यतो धर्मस्ततो जयः'' लिखा हुआ है। इसके नीचे पुनः पद्मासन मुद्रा में एक जिन आकृति को दोनों ओर एक–एक चामरधर आकृतियों के साथ दिखाया गया है। दायीं और बांयी ओर की चामरधर आकृतियों के साथ 'दर्पण', 'पंखा' एवं 'कलश' का अंकन हुआ है। इस प्रवेश–द्वार के दोनों ओर राजसी वेशभूषा में एक–एक द्वारपाल आकृतियों को हाथों में दण्ड धारण किए स्थानक मुद्रा में दिखाया गया है। इनके वस्त्र अत्यन्त सुन्दर हैं। वस्त्रों को नीले रंग के कांच को काटकर बनाया गया है (चित्र 2)।

इस प्रवेश–द्वार में जड़े किवाड़ के पलड़े भी अत्यन्त मनोहारी हैं। लकड़ी से बने हुए इन पलड़ों के ऊपर रजतपत्र की मोटी परत चढ़ी हुई हैं, जिन पर ऊपर के भाग में दोनों ओर एक–एक द्वारपाल आकृतियों का और नीचे के भाग में दोनों ओर एक–एक सिंह आकृतियों का रूपांकन किया गया है। इनमें द्वारपाल आकृतियों को राजसी वेश–भूषा में दोनों हाथों में दण्ड धारण किए पत्रपीठिका पर खड़ा हुआ दर्शाया गया है, जबकि सिंह आकृतियों को पद्मपीठिका पर उकडूँ बैठा हुआ दिखाया गया है(चित्र 3)। बरामदे के अन्य दोनों द्वारों के किवाड़ों के पलड़ों पर भी रजतपत्र की मोटी सजावटी परत चढ़ी हुई है।

बरामदे के इन तीनों प्रवेश–द्वारों के माध्यम से 23.7' X 31' आकार के विशाल सभाकक्ष में प्रवेश करते हैं। सभाकक्ष में प्रवेश करते ही सामने की भित्ति का ऊपरी भाग बड़े–बड़े वर्गाकार कांचों की पंक्तियों से और निचला भाग ईंट के आकार में बने कांचों की पंक्तियों से सुशोभित हुआ है। वर्गाकार कांचों की पंक्तियों के मध्य भाग में स्वर्ण व अन्य रंगों से पत्र–पुष्प लताओं को अलंकृत किया गया है (चित्र 4)। इस भित्ति पर मध्य भाग में मन्दिरानुकृति रूप में एक कुलिका के अन्तर्गत स्वर्ण रंग से मण्डित कायोत्सर्ग मुद्रा में एक तीर्थंकर प्रतिमा विराजमान है। यह कुलिका अत्यन्त भव्य रूप में रंगीन कांचों एवं पुष्पीय चित्रकारी से सजी हुई है और इसके शीर्ष भाग पर स्वर्ण रंग से सराबोर एक शिखर बना हुआ है। इस शिखर के शीर्ष भाग पर लघु आकार के मन्दिरानुकृति के अन्तर्गत ''ऊँ'' लिखा हुआ है (चित्र 5)। इसी भित्ति के अगले भाग में एक कक्ष गर्भगृह के रूप में बना हुआ है।

11'3'' X 21' 4'' माप के उत्तराभिमुखी इस कक्ष अथवा गर्भगृह तक सभाकक्ष से जुड़े दोनों ओर बने प्रदक्षिणा पथ के माध्यम से पहुँचा जाता है। इस गर्भगृह में एक बृहदाकार वेदी पर कृष्ण वर्ण के पाषाण से निर्मित तीर्थंकर शान्तिनाथ की पद्मासन मुद्रा में मूलनायक प्रतिमा के अलावा तीर्थंकर ऋषभनाथ एवं चन्द्रप्रभ की संगमरमर से बनी प्रतिमाएँ विराजमान हैं। और भी कई प्रतिमाएँ एवं यन्त्रजी भी विराजमान हैं। इस गर्भगृह में प्रवेश हेतु तीन मुख्य प्रवेश–द्वार बने हुए हैं। इनके अलावा गर्भगृह की दायीं और बायीं दीवारों में भी लघु आकार के एक–एक द्वार बने हुए हैं। गर्भगृह के मध्य भाग के मुख्य द्वार के ऊपर तीर्थंकर शान्तिनाथ का चित्र व उसके नीचे उनका लांछन 'मृग' अंकित है तथा 'शान्तिनाथ भगवान' लिखा हुआ है। तीर्थंकर शान्तिनाथ के इस चित्र के दोनों ओर एक–एक उड्डीयमान मालाधर आकृतियाँ चित्रित हैं। इस द्वार के दोनों ओर रंगीन वेशभूषा में चामरधर आकृतियों के रूप में सौधर्म इन्द्र तथा माहेन्द्र का निर्माण किया गया है। इस मुख्य द्वार के दायीं एवं बायीं ओर बने एक–एक द्वारों के ऊपर क्रमशः 'चन्द्रप्रभ भगवान' एवं 'आदिनाथ भगवान' लिखा हुआ है। इन तीनों द्वारों पर लगे किवाड़ों के पलड़ों में आकर्षक कांच लगे हुए हैं, जिनके माध्यम से विराजमान जिनदेवों के दर्शन बाहर से ही हो जाते हैं। इन पलड़ों के किनारों पर रंगीन कांच से मनोहारी सज्जा की गई है और निचले भाग में जड़े कांचों पर दृश्य चित्रों का अंकन किया गया है। इन प्रवेश–द्वारों के सबसे ऊपर वितान भाग के समीप सोलह स्वप्नों का प्रभावी दृश्यांकन किया गया है।

इस गर्भगृह के सामने 17' 8'' माप का प्रार्थना सभा मण्डप बना हुआ है। इसके उपरान्त वर्गाकार मण्डप का विधान हुआ है, जिसकी छत तृतीय तल के रूप में बनी है और इसके वितान भाग पर नन्दीश्वर द्वीप

द्वारपाल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रचना का अत्यन्त प्रभावी चित्रण हुआ है।

मण्डप के उपरान्त पुनः एक सभाकक्ष का प्रावधान हुआ है और इस सभाकक्ष से लगे तीन द्वारों के माध्यम से 12′ 7″ X 31′ माप के बरामदे में प्रवेश करते हैं। यह बरामदा भरत मार्ग की ओर खुलता है, जहाँ मन्दिर भवन का दूसरा द्वार बना हुआ है। भरत मार्ग की ओर से मन्दिर में प्रवेश करने के लिए भी एक बड़े द्वार से लगी संगमरमरनिर्मित सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। इस द्वार पर भी दोनों ओर एक–एक द्वारपाल आकृतियों का प्रावधान हुआ है। इस बरामदे के तीनों प्रवेश–द्वार बहुत सुन्दर हैं। मध्य भाग के मुख्य प्रवेश–द्वार के ललाटबिम्ब में पद्मासन मुद्रा में स्वर्ण रंग से मण्डित एक जिन आकृति विराजमान हैं। इसके ऊपर के भाग में "दिगम्बर जैन मंदिर" लिखा हुआ है। इस लिखावट के नीचे मध्य भाग में स्वर्ण रंग से मण्डित पद्मासन मुद्रा में एक जिन आकृति को दोनों ओर चामरधरों के साथ दिखाया गया है। साथ में दोनों ओर एक–एक सिंह आकृतियों को भी बैठी हुई मुद्रा में दिखाया गया है। प्रवेश–द्वार के दोनों ओर हरे रंग की सुन्दर राजसी वेशभूषा में दोनों हाथों में दण्ड धारण किए द्वारपाल आकृतियों को खड़ा हुआ दिखाया गया है (चित्र 6)।

इस प्रवेश–द्वार में जड़े किवाड़ के पलड़े भी अत्यन्त मनोहारी हैं। लकड़ी से बने हुए इन पलड़ों के ऊपर रजतपत्र की मोटी परत चढ़ी हुई हैं, जिन पर ऊपर के भाग में दोनों ओर एक–एक द्वारपाल आकृतियों का और नीचे के भाग में दोनों ओर एक–एक सिंह आकृतियों का रूपांकन किया गया है। इनमें द्वारपाल आकृतियों को राजसी वेश–भूषा में दोनों हाथों में दण्ड धारण किए पत्रपीठिका पर खड़ा हुआ दर्शाया गया है, जबकि सिंह आकृतियों को पद्मपीठिका पर उकडूँ बैठा हुआ दिखाया गया है (चित्र 7)। बरामदे के अन्य दोनों द्वारों के किवाड़ों के पलड़ों पर भी रजतपत्र की मोटी सजावटी परत चढ़ी हुई है ।

भूतल पर पूर्वी दिशा की दीवार में सीढ़ियों के दो मार्गों का प्रावधान हुआ है, जो प्रथम तल पर खुलते हैं। इनमें से सीढ़ियों के एक मार्ग का उपयोग प्रवेश और दूसरे मार्ग का उपयोग निकास के लिए प्रावधानित है।

प्रथम तल की तलविन्यास योजना में प्रार्थना सभा, मूलनायक कक्ष अथवा गर्भगृह, पुनः प्रार्थना कक्ष, टेरेस, हॉल व गैलरी बनी हुई हैं। भूतल से बनी सीढ़ियों पर चढ़कर प्रथम तल पर आते हैं और सामने ही उत्तराभिमुखी गर्भगृह के दर्शन होते हैं। 11′ X 22′9″ माप के इस गर्भगृह में प्रवेश हेतु तीन द्वार बने हुए हैं। इस गर्भगृह के मध्य भाग में स्थित प्रवेश द्वार के ऊपर "वर्द्धमान भगवान", दायीं ओर के द्वार के ऊपर "शीतलनाथ भगवान" और बायीं ओर के द्वार के ऊपर "पुष्पदन्त भगवान" लिखा हुआ है। सबसे ऊपर "जैनेन्द्र भवन" एवं उसके दोनों ओर अष्टप्रातिहार्यों का प्रभावी चित्रांकन हुआ है। गर्भगृह के अन्तर्गत एक बड़ी वेदी पर तीर्थंकर शीतलनाथ, महावीर और पुष्पदन्त की अष्ट धातु से बनी पद्मासन मुद्रा में एक–एक प्रतिमाओं के अलावा अन्य प्रतिमाएँ एवं यन्त्रजी विराजमान हैं। मध्य के मुख्य प्रवेश–द्वारों के दोनों ओर चामरधर के रूप में सौधर्म इन्द्र एवं माहेन्द्र का निरूपण किया गया है।

इस गर्भगृह के पीछे 37′ 9″ लम्बाई का एक विशाल सभाकक्ष और आगे की ओर 17′10″ लम्बाई का एक प्रार्थना कक्ष बना हुआ है। इन सभाकक्ष एवं प्रार्थना कक्ष की सतह पर रंग–बिरंगी पुष्पीय अलंकरणों से सज्जित टाइलें लगी हुई हैं। वर्तमान में इस सभाकक्ष का उपयोग शास्त्र भण्डार एवं सरस्वती कक्ष के रूप में होता है। इस सभाकक्ष की दीवारों में बनी अलमारियों में एवं अन्य रखी हुई अलमारियों में प्राचीन हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ एवं जैन शास्त्र सुरक्षित रखे हुए हैं। इस सभाकक्ष की उत्तरी दीवार पर भी प्रसिद्ध जैन तीर्थक्षेत्रों का प्रभावी चित्रांकन हुआ है।

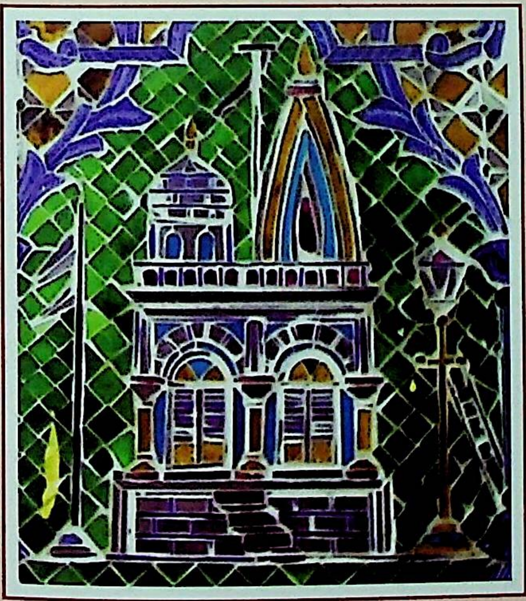

प्रथम तल पर गर्भगृह की बाह्य भित्ति पर जिनालय चित्र

प्रार्थना कक्ष के बाद क्रमशः टेरेस, हॉल एवं गैलरी बनी हुई हैं। इनमें से हॉल की माप 12′7″ X 30′9″ है। इस हॉल में वर्तमान में लकड़ी व उसके ऊपर सुन्दर पच्चीकारी से युक्त रजतपत्र चढ़ी हुई एक वेदी रखी हुई है, जिस पर मूलनायक के रूप में तीर्थंकर पार्श्वनाथ के अलावा तीर्थंकर शान्तिनाथ, महावीर एवं यन्त्रजी विराजमान हैं। इसी हॉल से लगा भूतल से आया हुआ सीढ़ियों का निकास वाला मार्ग बना हुआ है, जिसके माध्यम से पुनः भूतल पर लौट आते हैं। इसके ऊपर द्वितीय तल के रूप में छत बनी हुई हैं। इस छत के ऊपर भूतल एवं प्रथम तल पर स्थित वेदियों के ठीक ऊपर रेखा नागर शैली का विशालकाय शिखर बना हुआ है (चित्र 8)। यह शिखर सामान्य है।

"कांच मन्दिर" नाम के अनुरूप इस मन्दिर की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता कांचकारी एवं चित्रकारी के अद्भुत संयोग से बने आलंकारिक एवं दृश्य चित्र हैं। विशेष रूप से भूतल के एक–एक इंच भाग को कांचकारी एवं चित्रकारी के सुन्दर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सजावटी अभिप्रायों एवं भावप्रद दृश्यांकनों से सजाया गया है (चित्र 9 व 10)। भूतल की आन्तरिक दीवारों पर चारों ओर छोटे–छोटे रंगीन व सादा कांचों को ज्यामितीय आकार देकर उनसे पुष्प एवं पत्तियों के विविध प्रकार के सजावटी अलंकरण किए गए हैं। कांच से बने इन सजावटी अलंकरणों के बीच–बीच के भाग में सजावटी एवं दृश्य चित्रों को नियोजित किया गया है। इनमें से अधिकांश चित्र आन्तरिक भित्तियों पर सबसे ऊपर के भाग पर बने हुए हैं और कुछ चित्र इन्हीं दीवारों पर सम्मुखदर्शी अर्थात् आँख से देखने के स्तर पर बनाये गये हैं। प्रायः दृश्य चित्र आकार में बड़े–बड़े हैं और प्रभावपूर्ण इतने हैं कि दूर से देखने पर भी उनकी सुस्पष्टता दृष्टिगोचर है। इन चित्रों की भावप्रद सुन्दरता मन को भाव–विभोर कर देती है। चित्रों में मानव आकृतियों के रंगीन वस्त्रों के ऊपर मोती एवं मनके जड़े आभूषण प्रकाश की आभा पड़ते ही चमकने लगते हैं।

इन चित्रों का निर्माण करने वाले कांचकारों एवं चित्रकारों की कुशलता एवं गहन अनुभव के दर्शन भूतल पर गर्भगृह के सम्मुख बने प्रार्थना कक्ष के वितान भाग पर और मण्डप के वितान भाग पर बने अनुपम दृश्य चित्रों को देखकर सहज ही लगाया जा सकता है। केवल इन्हीं वितान भाग पर चित्र बने हुए हैं, जबकि अन्य हिस्सों के वितान भाग पर या तो कांच से बहुविध सजावटी अलंकरण किए गए हैं अथवा विविध रंगों से पुष्प एवं बेल–पत्रों का चित्रांकन किया गया है।

सर सेठ हुकुमचंद्र मार्ग से मन्दिर भवन में प्रवेश करते ही बरामदे से लेकर पिछले भाग के बरामदे तक चारों ओर की दीवारों पर कांच के सजावटी अलंकरणों के बीच–बीच में बहुविध दृश्य चित्रों को बनाया गया है। इन चित्रों का आरंभ इसी मन्दिर के वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव से सम्बन्धित चित्र से होता है। इसके उपरान्त जैन धर्म के दार्शनिक एवं शैक्षिक पक्ष से सम्बन्धित विविध प्रकार के शैक्षिक एवं उपदेशपूर्ण दृश्य चित्र बने हुए हैं। इन दृश्य चित्रों के साथ–साथ जगह–जगह पर विभिन्न जैन तीर्थक्षेत्रों को भी चित्रांकित किया गया है। भूतल पर लगभग मध्य भाग में दोनों ओर की दीवारों पर अलंकृत कांच के ऊपर चौबीस तीर्थंकरों के नाम एवं उनके लांछन चित्रांकित किए गए हैं। इसके अलावा जैन धर्म के सर्वप्रमुख सिद्धान्तों (चित्र 11), णमोकार महामन्त्र (चित्र 12) एवं अन्य शिक्षाप्रद दोहों, श्लोकों (चित्र 13) आदि को भी उकेरा गया है। यहीं पर पश्चिमी दीवार पर कांच के दो सुन्दर आयताकार अलंकरणों के मध्य भाग में एक–एक रेखाचित्र बने हुए हैं (चित्र 14)। इन रेखाचित्रों में मन्दिरों के दृश्यों को विविध रूपों में रेखांकित किया गया है। इसी पश्चिमी भाग की दीवार पर पुष्पीय अलंकरण से सुसज्जित एक आयताकार सजावट के अन्तर्गत मध्य भाग में एक पहाड़ के ऊपर सिंहासन और उसके दोनों ओर एक–एक गज आकृतियों को सिंहासन के ऊपर चंवर डुलाते हुए दिखाया गया है (चित्र 15)। इस चित्र में गजों के चित्र अत्यन्त प्रभावपूर्ण हैं। भूतल पर बने दोनों ओर के बरामदों को छोड़कर शेष भाग की दीवारों का निचला भाग प्रायः ईंट के आकार में कांच को काटकर व उसे एक के ऊपर एक रखकर सुन्दर आभा के साथ बना हुआ है।

भूतल की दीवारों में जगह–जगह पर कई छोटी कुलिकाएँ अथवा आले और बड़ी–बड़ी अलमारियाँ बनी हुई हैं (चित्र 16)। सभी आलों को मन्दिरानुकृति के रूप में स्तम्भाश्रित एवं शिखरयुक्त बनाया गया है और इन पर कांच एवं रंगों से सुन्दर ज्यामितीय एवं पुष्प–पत्रीय अलंकरण सजाये गये हैं। कुछ स्थलों पर इन आलों के ऊपर घड़ी एवं जलवाहकों का निरूपण किया गया है। कुछ आलों में लकड़ी और उनके ऊपर कांच चढ़े हुए सुन्दर किवाड़ भी लगे हैं। कुछ आलों में किवाड़ों का विधान नहीं हुआ है और इनके अन्तर्गत विविध प्रकार के चित्रों को रूपायित किया गया है। बड़ी–बड़ी अलमारियों पर लकड़ी और उनके ऊपर कांच चढ़े हुए किवाड़ लगे हुए हैं। इन अलमारियों के किनारों पर रज्जु रचना के रूप में गुंथित व स्वर्ण रंग से रंगीन रज्जु शाखा का निरूपण हुआ है।

गर्भगृहों की आन्तरिक एवं बाह्य भित्तियों पर भी कांचकारी एवं चित्रकारी के संयोग की उत्कृष्ट झलक देखने को मिलती है। भूतल एवं प्रथम तल के गर्भगृहों की आन्तरिक दीवारों पर जहाँ कांच से सुन्दर सजावटी कार्य हुआ है, वहीं वेदी पर सुन्दर आलंकारिक चित्रकारी भी देखने को मिलती है। वेदी के पिछली दीवार पर मूलनायक जिन आकृति के दोनों ओर सौधर्म इन्द्र व माहेन्द्र को चंवर डुलाते हुए दिखाया गया है (चित्र 17)। जिनों के पीछे प्रभावोत्पादक भामण्डल चित्रित किया गया है। प्रथम तल की वेदी पर मूलनायक जिन के पिछले दीवार पर तो रंगीन कांचों की सुन्दर सजावट के मध्य में अष्टप्रातिहार्यों – दिव्यध्वनि, चमर, अशोक वृक्ष, छत्र, पुष्पवृष्टि, भामण्डल, देवदुन्दुभि और सिंहासन लिखा हुआ है और इनमें से दिव्यध्वनि, चमर, देवदुन्दुभि व सिंहासन का चित्रांकन भी किया गया है। इस वेदी की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें वेदी के समानान्तर दायीं एवं बायीं ओर की दीवार में बड़े–बड़े कांच इस प्रकार के लगाये गये हैं कि जिनमें देखने पर वेदी पर विराजमान मूर्तियों के प्रतिबिम्बस्वरूप चौबीस जिन प्रतिमाएँ दिखाई देती हैं और ये दर्शक को भावातुर कर देती हैं (चित्र 18)। भूतल एवं प्रथम दोनों तलों पर स्थित गर्भगृहों में तीन–तीन प्रवेश–द्वारों का विधान हुआ है। ये प्रवेश–द्वार बहुत सुन्दर हैं। इन द्वारों के किवाड़ों पर जड़े कांचों पर सुन्दर चित्रकारी देखने को मिलती है। इनमें से कुछ दृश्य चित्र के रूप में तो कुछ आलंकारिक चित्र के रूप में बने हुए हैं। इनमें मध्य के मुख्य प्रवेश–द्वार के बाहर चंवर डुलाते हुए एक ओर सनत्कुमार इन्द्र और दूसरी ओर माहेन्द्र इन्द्र आकृतियों का निरूपण किया गया है(चित्र 19)।

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूतल से लेकर प्रथम तल और उसके ऊपर द्वितीय तल के वितान भाग तक बना एकमेव मण्डप बहुत सुन्दर एवं आकर्षक है। भूतल एवं प्रथम तल दोनों पर इसके चारों ओर 12–12 स्तम्भों का विधान हुआ है और इन स्तम्भों के मध्य भाग में तोरणावलि सुशोभित है। इन तोरणावलियों और स्तम्भों के शीर्ष भाग पर कायोत्सर्ग एवं पद्मासन मुद्रा में लघु आकार की जिन आकृतियों का प्रावधान हुआ है (चित्र 20 व 21)। मण्डप के स्तम्भ भी अत्यन्त सुन्दर हैं। इन पर ज्यामितीय रचनाएँ एवं पुष्प–पत्रीय लताएँ आदि बनी हुई हैं। कुछ स्तम्भों पर पुष्प–पत्र बेलें रज्जु रचना के रूप में गुंथित हैं। इन स्तम्भों पर हुई सजावट बेहद मनमोहक है (चित्र 22)।

मन्दिर भवन में वितान भाग पर सुन्दर कांचों के झूमर लटके हुए हैं और चारों ओर विद्युत प्रकाश की उत्तम व्यवस्था की गई है। जब विद्युत के प्रकाश से मन्दिर जगमगाता है, तो वह दृश्य देखते ही बनता है।

इस मन्दिर की एक और विशेषता श्वेत अश्वों से बना रथ, अन्य दो रथ तथा ऐरावत की एक विशाल प्रतिमा हैं, जिनका उपयोग विविध अवसरों पर श्रीजी की सवारी के रूप में किया जाता है। इनमें से श्वेत अश्वों से बने रथ का उपयोग वर्ष में एक ही बार होता है और जब यह रथ अपनी पूर्ण भव्यता के साथ श्रीजी को विराजमान कर नगर भ्रमण के लिए निकलता है, तब दूर–दूर से लोग इसके अपूर्व सौन्दर्य को देखने के लिए आतुर रहते हैं (चित्र 23)। इस रथ का निर्माण स्व. सर सेठ हुकुमचन्द्र जी ने करवाया था। निर्माण के उपरान्त प्रथम बार जब श्वेत अश्वों से बने इस रथ का जुलूस निकला तो स्वयं सर सेठ हुकुमचन्द्रजी ने सारथी के रूप में रथ को चलाया था और रथ में श्रीभगवान्‌जी विराजमान थे। वर्तमान में ये रथ मन्दिर भवन के सामने बने एक भवन में (सर सेठ हुकुमचंद्र मार्ग) सुरक्षित रूप से रखे हुए हैं। विशालकाय ऐरावत की प्रतिमा के ऊपर सुन्दर नक्काशी से युक्त रजत की मोटी परत चढ़ी हुई है। ऐरावत हाथी के समीप ही लघु आकार की एक मन्दिरानुकृति वेदी भी रखी हुई है। इस वेदी पर भी चांदी की सुन्दर नक्काशी युक्त परत चढ़ी हुई है। वर्तमान में ऐरावत हाथी एवं वेदी मन्दिर–भवन में भूतल पर सभाकक्ष में रखे हुए हैं (चित्र 24)।

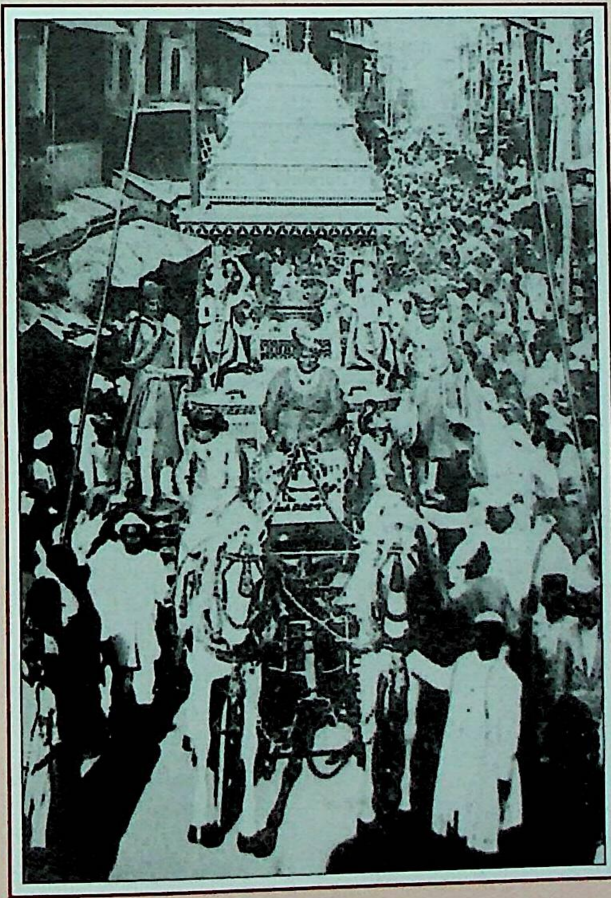

स्व. सर सेठ हुकुमचन्द्रजी द्वारा बनवाया गया श्वेत अश्व रथ के जुलूस का दुर्लभ चित्र, जिसमें वह स्वयं सारथी बने हुए हैं और रथ में भगवान्‌जी विराजमान हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

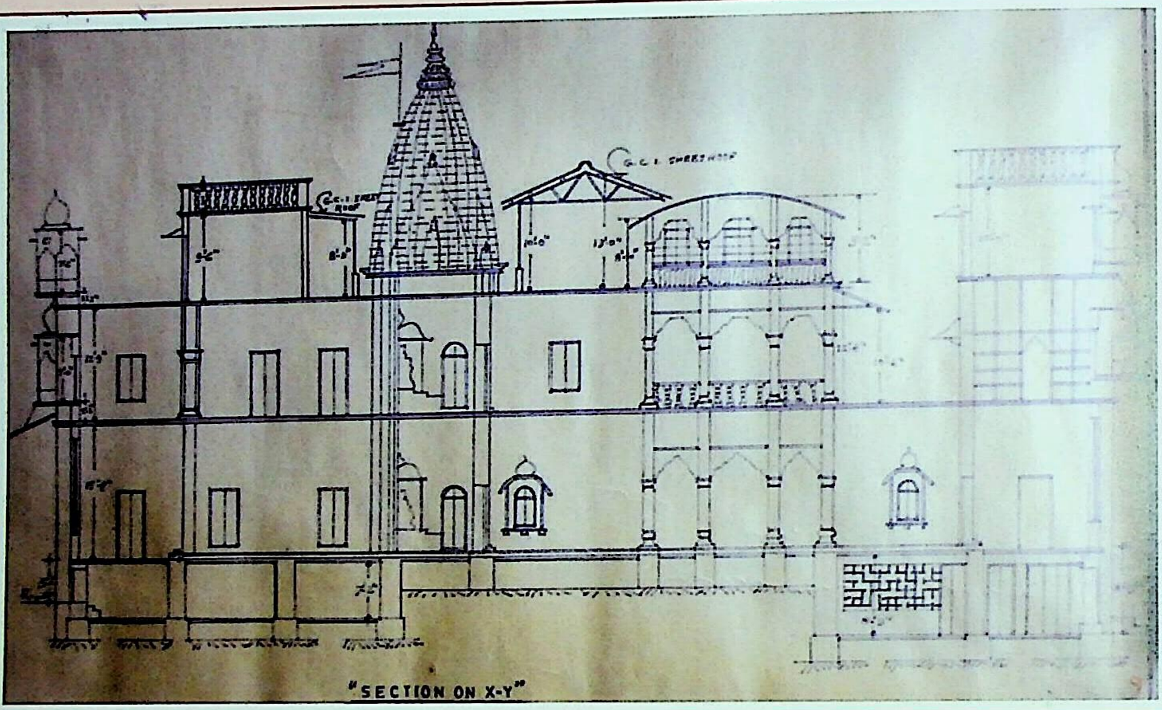

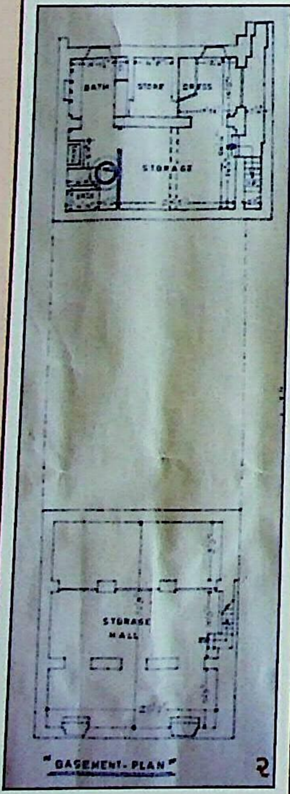

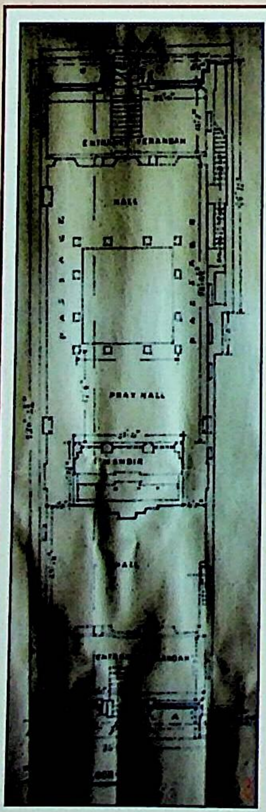

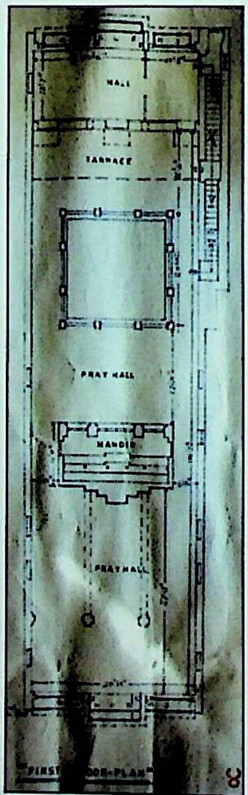

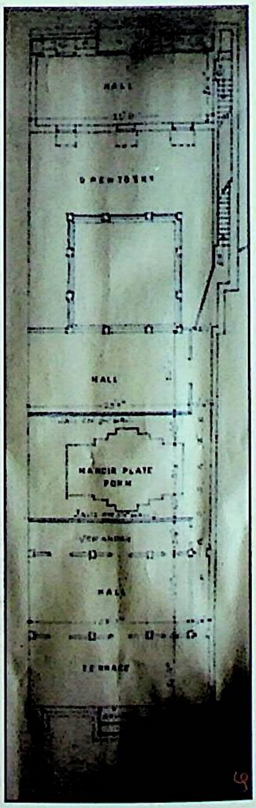

मन्दिर भवन के विभिन्न मानचित्र - 1. मन्दिर भवन की ऊर्ध्वविन्यास योजना, 2. तलघर की तलविन्यास योजना, 3. भूतल की तलविन्यास योजना, 4. प्रथम तल की तलविन्यास योजना, 5. द्वितीय तल की तलविन्यास योजना ।

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाराणसी 5165

चित्र 1

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

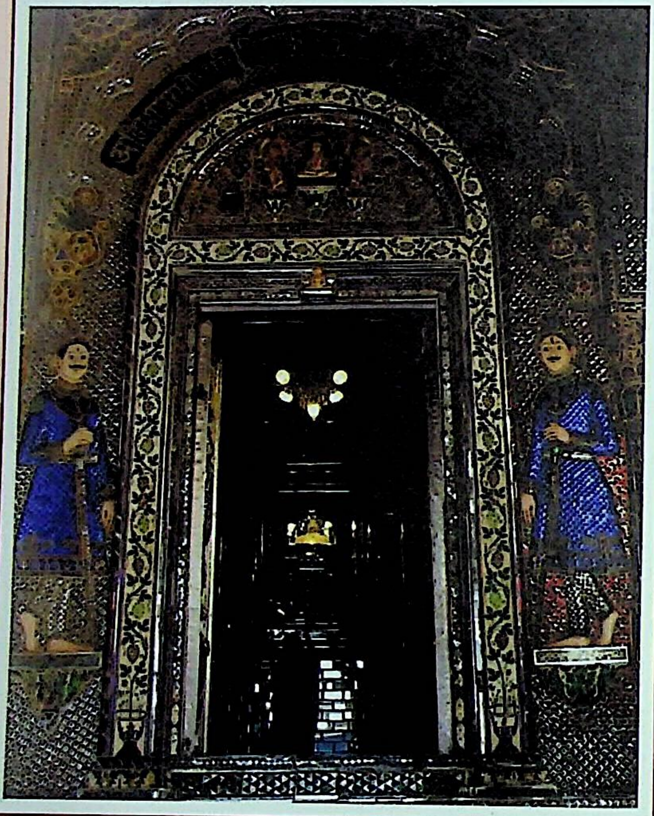

चित्र 2

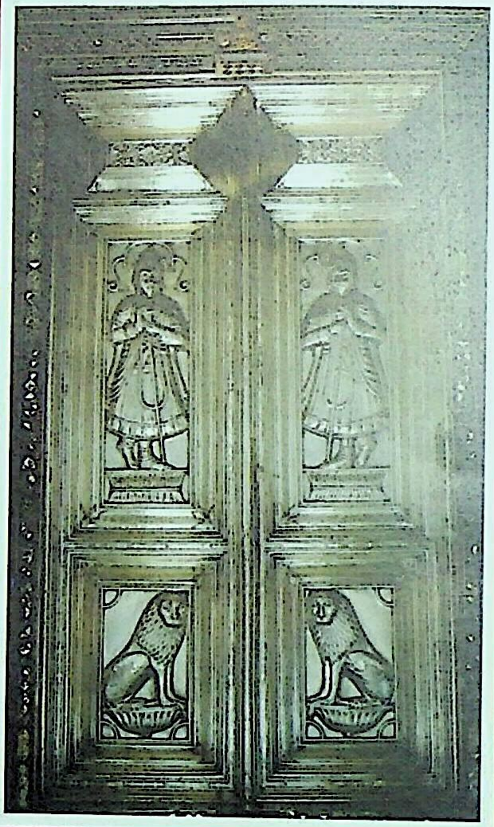

चित्र 3

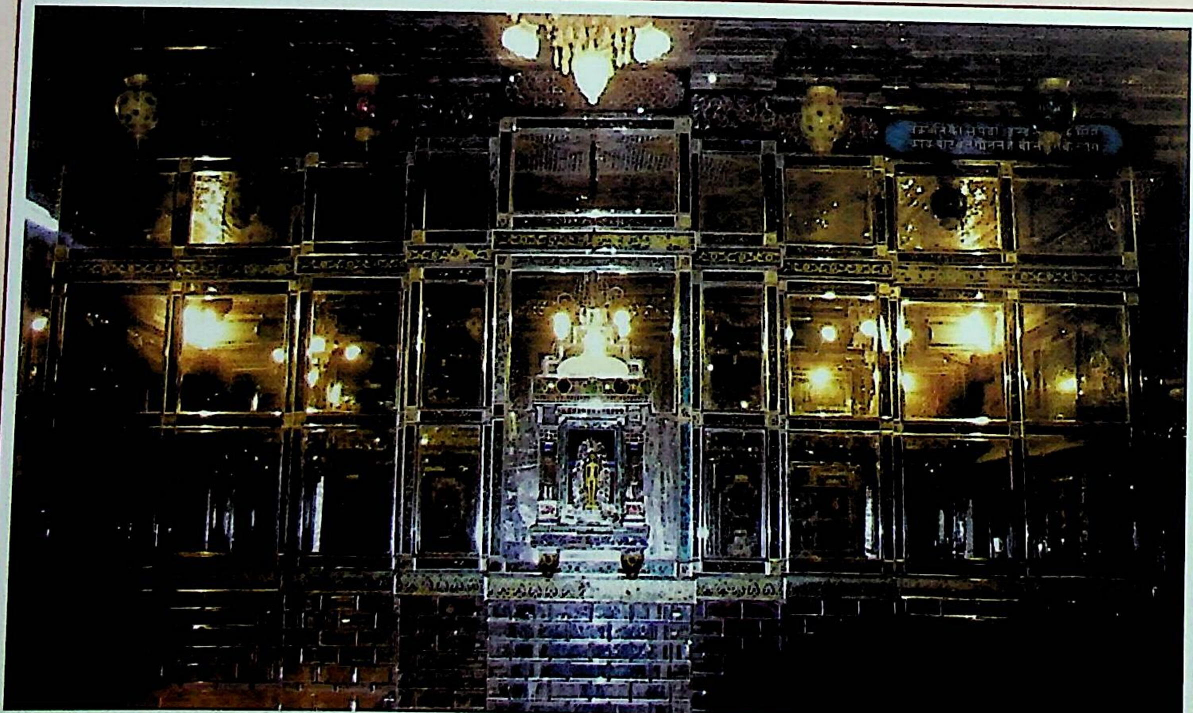

चित्र 4

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

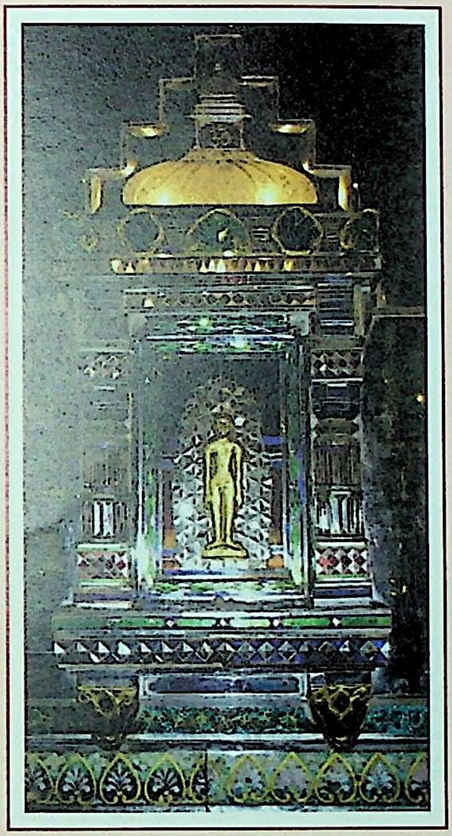

चित्र 5

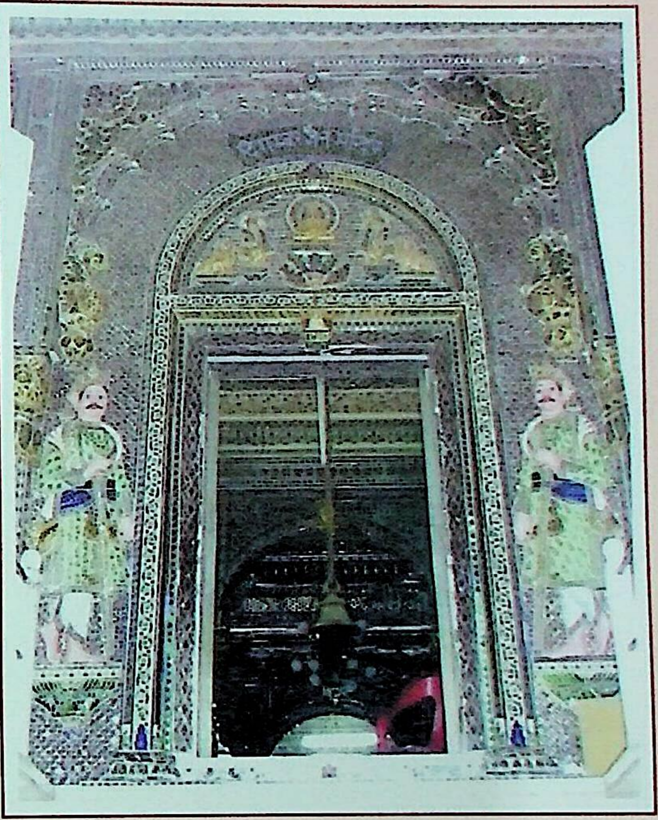

चित्र 6

चित्र 7

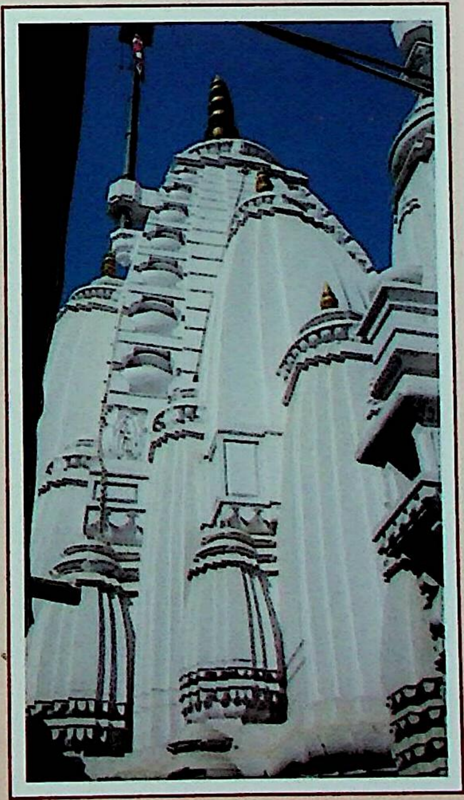

चित्र 8

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चित्र 9

चित्र 10

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

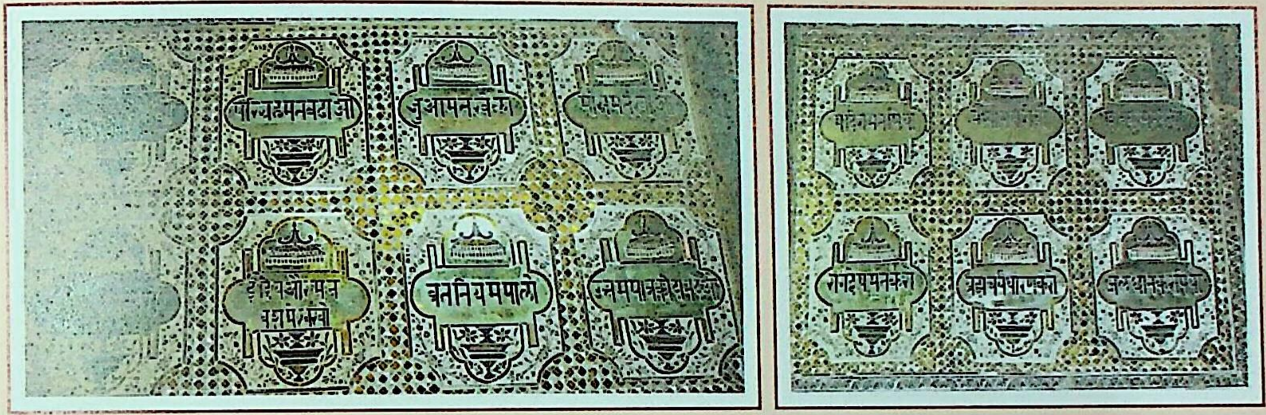

चित्र 11

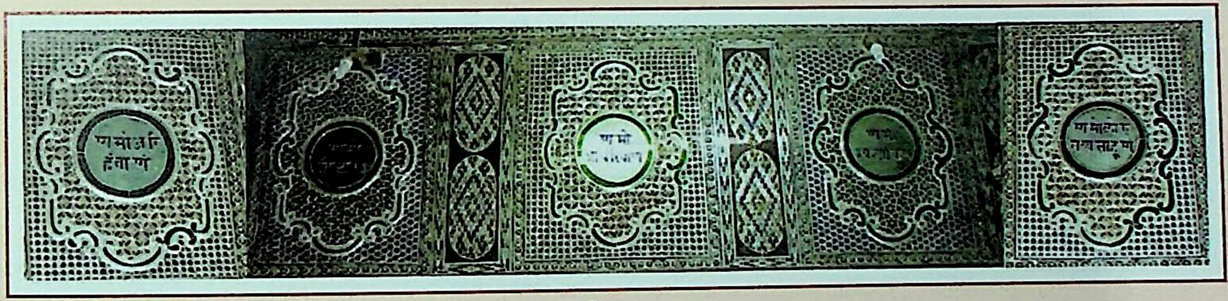

चित्र 12

चित्र 13

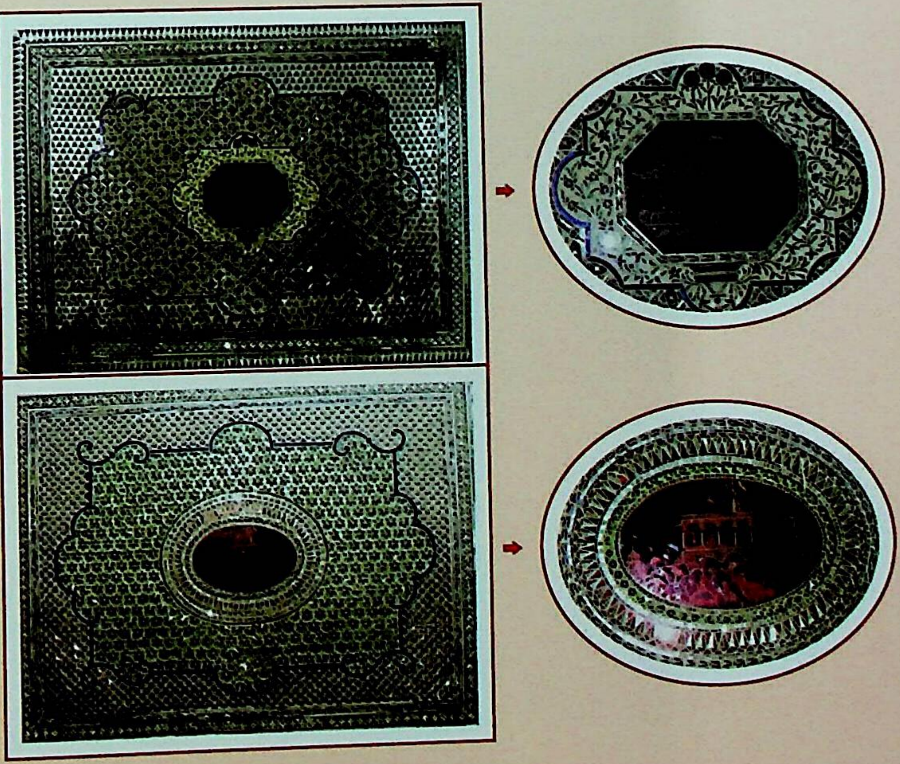

चित्र 14

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चित्र 15

चित्र 16

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चित्र 17

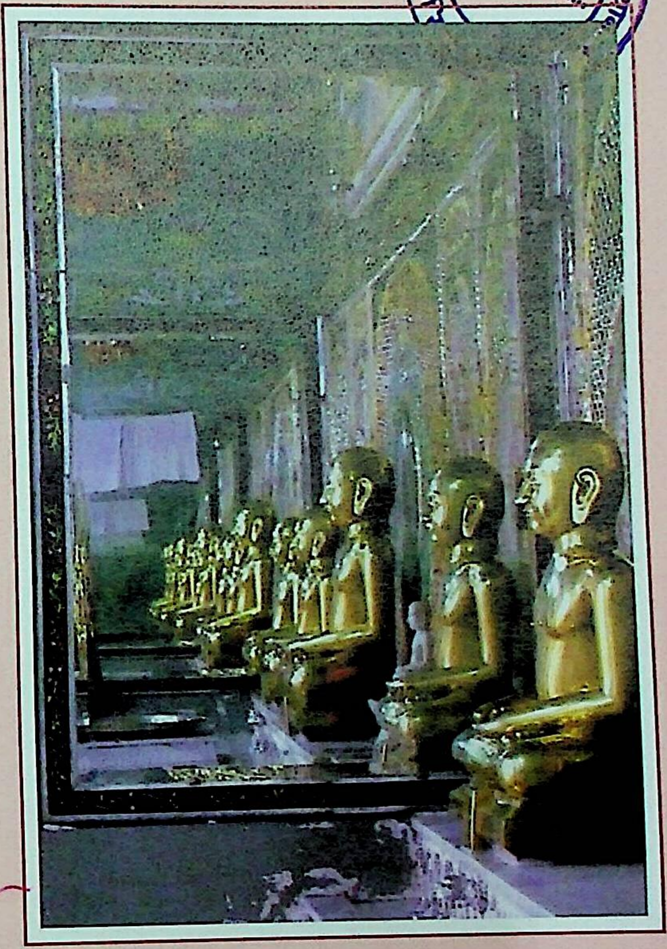

चित्र 18

चित्र 19

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

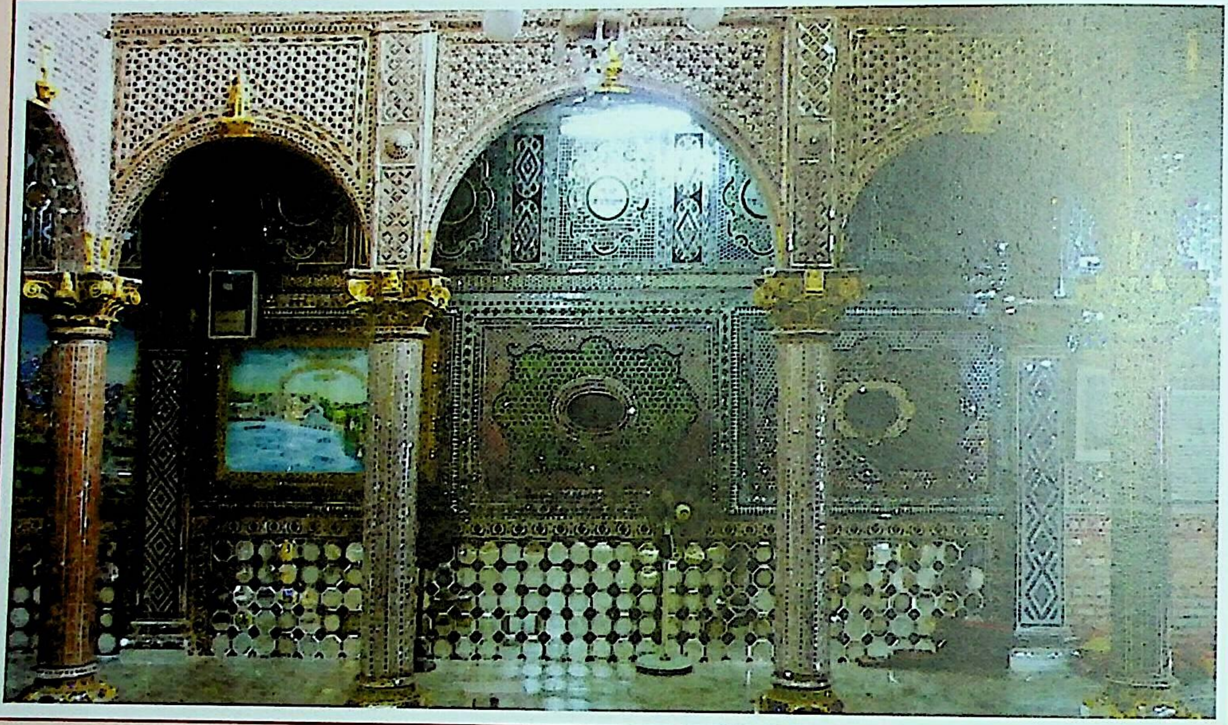

चित्र 20

चित्र 21

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चित्र 22

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

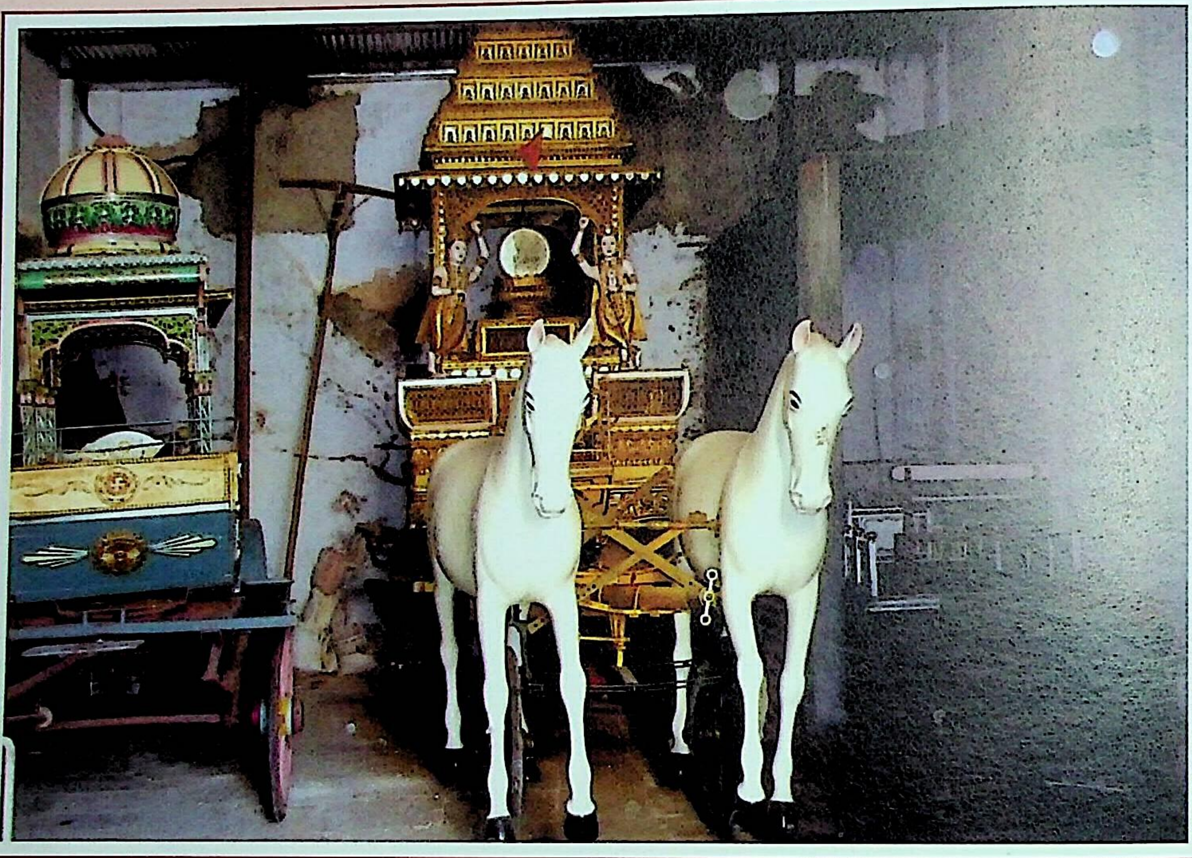

चित्र 23

चित्र 24

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अध्याय 2

भित्तिचित्र

श्री दिगम्बर जैन कांच मन्दिर के भित्तिचित्र अत्यन्त विलक्षण एवं नयनाभिराम हैं। इन चित्रों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन्हें कांच के सुन्दर जड़ाऊ कार्य एवं चित्रकारी के अद्‌भुत संयोजन से तैयार किया गया है और इस प्रकार का संयोजन भारतीय कला में बहुत ही विरल है। मुख्य रूप से कांच मन्दिर के भूतल के हर भाग, यथा – दीवारों व वितानों आदि को कांच के सजावटी अभिप्रायों एवं भावप्रद चित्रकारी व विविध अलंकरण अभिप्रायों की कुशल संयोजना के साथ सुशोभित किया गया है। इस मन्दिर में कुल मिलाकर 71 चित्र बने हुए हैं। इनमें से 65 चित्र मन्दिर भवन की आन्तरिक भित्तियों पर एवं 6 चित्र मन्दिर के गर्भगृह के प्रवेश–द्वारों में जड़े कांच पर बने हुए हैं। सभी 65 भित्तिचित्र भूतल की चारों दिशाओं की आन्तरिक भित्तियों पर एवं वितान भाग पर रूपायित हुए हैं।

पूर्व में इन चित्रों पर क्रमांक भी दिये गये थे, जो वर्तमान में इन चित्रों पर क्रमांक 1 से लेकर 57 तक के रूप में चित्र के ऊपर ही लिखे हुए हैं और इस संख्या के अनुसार इस मन्दिर में कुल 57 चित्र नामांकित हुए हैं। किन्तु प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने इन क्रमांकों को आधार नहीं मानकर स्वयं की क्रमसंख्या निर्धारित की है और इस नवीन क्रमसंख्या के अनुसार वर्तमान में इस मन्दिर में कुल 71 चित्रों को क्रमांकित किया है। ये नवीन क्रमसंख्या मन्दिर भवन में चित्रों के साथ अंकित नहीं हुई है। अभी भी उन पर पुराने ही क्रमांक लिखे हुए हैं। इस पुस्तक में नवीन क्रम संख्या के अनुसार चित्रों का विवेचन हुआ है। इनमें से चित्र 1 से लेकर 4 व 65 मन्दिर में प्रवेश करते ही बरामदे (सर सेठ हुकमचंद्र मार्ग की ओर) की दीवारों पर, चित्र 5 से लेकर 14 बरामदे से प्रवेश करने पर बने विशाल हॉल की दक्षिणी दीवार पर,चित्र 15 से 34 पश्चिमी भित्ति पर, चित्र 35 व 40 उत्तरी भित्ति पर, चित्र 36 से 39 हॉल के उपरान्त बने बरामदे (भरत मार्ग की ओर) की दीवारों पर, चित्र 41 द्वितीय तल तक गये वितान भाग पर, चित्र 42 भूतल से प्रथम तल तक जाने वाली सीढ़ियों के मार्ग में दीवार पर, चित्र 43 से 47 तथा 51 से 64 पूर्वी भित्ति पर, चित्र 48 से 50 भूतल के गर्भगृह के बाहर प्रार्थना सभा के वितान भाग और 66 से 71 भूतल के गर्भगृह के प्रवेश–द्वारों में जड़े कांचों पर बने हुए हैं। इस प्रकार कांच मन्दिर में वर्तमान में कुल 71 चित्रों को क्रमांकित किया गया है और अधोलिखित विवरण इसी क्रम में समायोजित है।

इन चित्रों के विषयों में पर्याप्त विविधता दृष्टिगोचर होती है। एक ओर जैन धर्म के दार्शनिक पक्ष, यथा – अष्ट कर्म सिद्धान्त, संसार वृक्ष, लेश्या आदि के दृश्य चित्रों के माध्यम से होने वाले परिणामों को चित्रांकित किया गया है; वहीं दूसरी ओर जैन धर्म के शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायी कथानकों, यथा – सेठ सुकुमाल के वैराग्य लेने की कथा, सेठ सुदर्शन द्वारा ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने की कथा, मुनि यशोधर पर उपसर्गों की कथा, सेठ चारुदत्त द्वारा वेश्या संसर्ग की कथा, उत्तम श्रावक वारिषेण के मुनि–दीक्षा की कथा आदि से ओत–प्रोत दृश्य चित्रों के माध्यम से जनमानस में चेतना जाग्रत करने का प्रयास किया गया है। रामायण एवं महाभारत के कथानकों के माध्यम से भी परस्त्री हरण, जुआ खेलना आदि के दुष्परिणामों को भी दृश्य चित्रों में रूपायित किया गया है। तीर्थंकरों के जीवन से सम्बन्धित विविध घटनाओं, यथा – नेमिनाथ की बारात निकलना व उनका वैराग्य लेना, राजा श्रेयांस द्वारा मुनि आदिनाथ को आहार–दान, तीर्थंकर बालक को इन्द्र–इन्द्राणी व सात प्रकार की सेनाओं द्वारा पाण्डुक शिला पर ले जाना आदि को भी दृश्य चित्रों के माध्यम से रूपायित किया गया है। इनके अलावा एक भित्तिचित्र में श्रीरामचन्द्र, लक्ष्मणजी एवं सीताजी द्वारा चारण मुनियों को आहार–दान देते हुए दर्शाया गया है। एक–एक उदाहरण में जैन परम्परा के अनुसार तीनों लोकों का मानचित्र, ज्योतिर्लोक, समवशरण एवं नन्दीश्वर द्वीप की रचना को चित्रांकित किया गया है। इनके अलावा भारतवर्ष के सर्वप्रमुख जैन तीर्थक्षेत्रों जैसे – सम्मेदशिखरजी, बनेड़ियाजी, पावापुरजी, मांगीतुंगीजी, सोनागिरजी, गिरनारजी, शत्रुंजयगिरिजी, तारंगाजी, सिद्धवरकूटजी, मुक्तागिरिजी, चम्पापुरजी, कुंथगिरजी, गजपंथाजी आदि अतिशय एवं सिद्धक्षेत्रों को नैसर्गिक रूप में जिनालयों, मुनि–महाराजों, श्रावकजनों आदि के समन्वय के साथ रूपायित किया गया है। एक चित्र इसी कांच मन्दिर के निर्माण के उपरान्त सम्पन्न जिनबिम्ब प्रतिष्ठा महोत्सव से सम्बन्धित है। एक चित्र में कांच मन्दिर के बाहरी दृश्य को भी रूपायित किया गया है। एक चित्र में सूर्य एवं चन्द्रमा पर जिन मन्दिर की उपस्थिति दिखलाई गई है। सभी भित्तिचित्रों पर उनके विषय एवं कथानक सम्बन्धी विवरण साररूप में चित्रों के ऊपर अथवा नीचे के भाग में अथवा दोनों स्थलों पर लिखा हुआ हैं।

इन चित्रों के निर्माण में कलात्मकता, परिदृश्य, भाव–भंगिमाओं आदि का पूर्ण ध्यान रखा गया है। विषय के अनुरूप रंगों के चयन में कांचकार एवं चित्रकार की कुशल पटुता के दर्शन होते हैं। इन चित्रों के निर्माण में विभिन्न रंगों के कांच एवं विविध प्रकार के प्राकृतिक रंगों का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपयोग किया गया है। चित्रों में प्राकृतिक परिदृश्य के निर्माण में जहाँ कांच एवं रंग दोनों का उपयोग किया गया है, वहीं मानवीय एवं पशु–पक्षी आकृतियों के निर्माण में प्रमुखतः रंगों का ही उपयोग हुआ है। मानवीय आकृतियों के वस्त्र एवं आभूषणों पर कांच के मनके एवं मोतियों को बड़ी कुशलतापूर्वक चिपकाया गया है और इन पर विद्युत प्रकाश पड़ने पर इनकी आभा देखते ही बनती है। भवनों एवं मन्दिरों के प्रदर्शन में मुख्यतः कांच का उपयोग किया गया है। वर्तमान में इन सभी चित्रों के ऊपर पारदर्शी कांच चढ़ा हुआ है, जिससे धूल–मिट्टी आदि से इनका बचाव संभव होता है। इन चित्रों का विवरण निम्नानुसार है –

1. श्री कांच मन्दिर की प्रतिष्ठा के समय भगवान्‌जी के अभिषेक का दृश्य

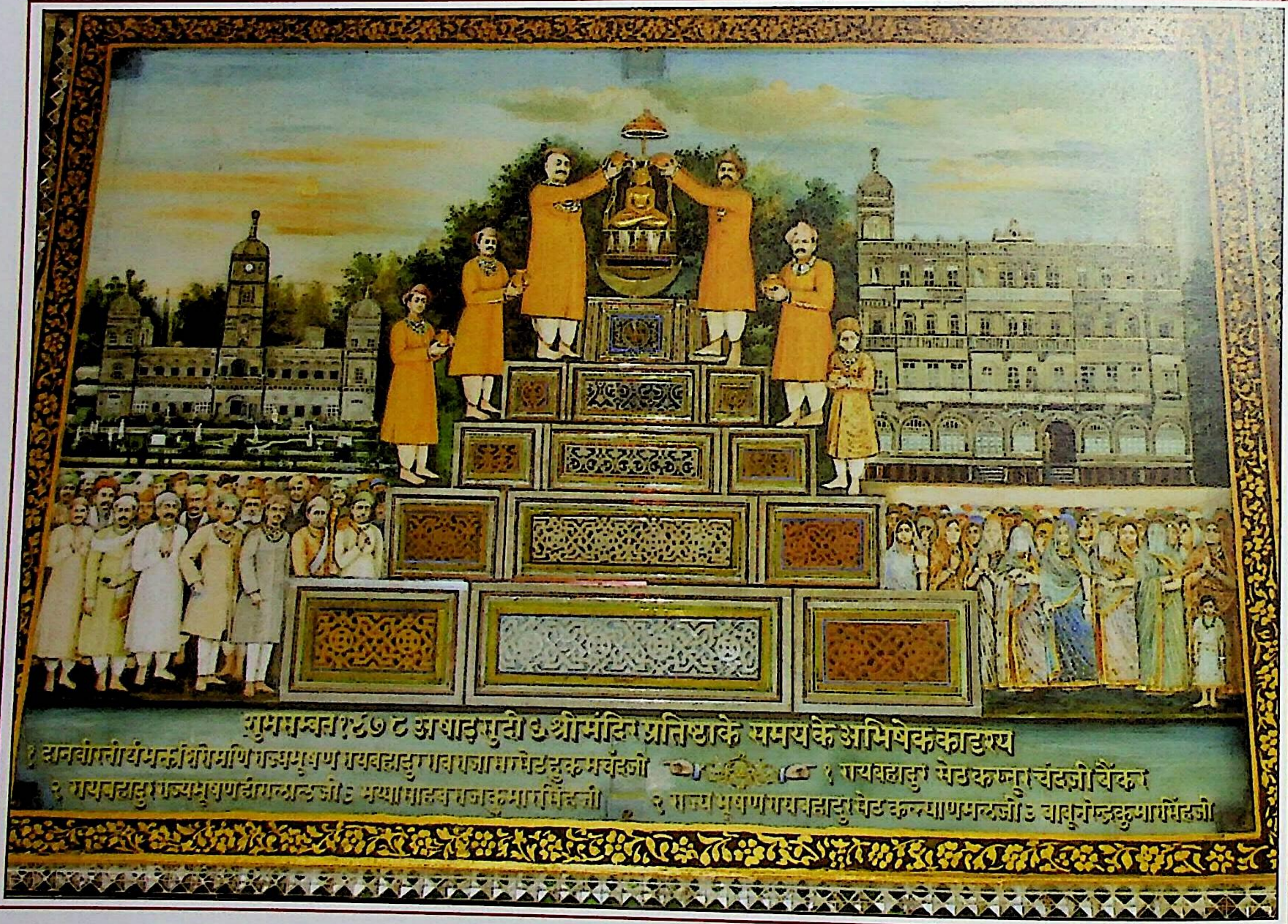

इस चित्र में कांच मंदिर भवन के निर्माणोपरान्त उसमें जिनबिम्ब–प्रतिष्ठा के अवसर पर श्री भगवान्‌जी के अभिषेक को दृश्यांकित किया गया है। चित्र के नीचे अंकित तीन पंक्तियों के अभिलेख से ज्ञात होता है कि इस मंदिर की प्रतिष्ठा शुभ सम्वत् 1978 आषाढ़ सुदि 6 (1921 ई.) को हुई थी और इसी दिन इस मंदिर में श्रीजी का अभिषेक एवं प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ था। चित्र के मध्य भाग में पाँच सोपानों से युक्त एक विशाल वेदिका पर सबसे ऊपर श्रीजी विराजमान हैं। वेदिका पर दायीं ओर ऊपर से नीचे की ओर क्रमशः दानवीर तीर्थभक्त शिरोमणि राज्यभूषण रायबहादुर सर सेठ हुकुमचन्द्र जी, रायबहादुर राज्यभूषण श्री हीरालालजी और भैया साहब राजकुमारसिंह जी तथा बायीं ओर ऊपर से नीचे की ओर क्रमशः रायबहादुर सेठ कस्तूरचन्द्रजी बैंकर, राज्यभूषण रायबहादुर सेठ कल्याणमलजी एवं बाबू नरेन्द्र कुमार सिंह जी श्रीप्रभुजी का अभिषेक करते हुए दिखाये गये हैं। सबसे नीचे कासलीवाल परिवार के सदस्य एवं अन्य श्रावकजन इस अभिषेक को निहार रहे हैं। चित्र के पिछले भाग में दायीं ओर राजबाड़ा एवं बायीं ओर शीशमहल को दिखाया गया है। इस चित्र में तत्कालीन वेशभूषा का सुस्पष्ट अंकन देखने को मिलता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

2. संसार वृक्ष का दृश्य

इस चित्र में संसार वृक्ष के माध्यम से संसारी जीव की दुर्दशा को अधोलिखित कथानुसार चित्रित किया गया है – घोर वन में एक व्यक्ति ने एक विकराल हाथी से डरकर कुएँ में छलांग लगा दी और गिरते समय वह एक वृक्ष का तना पकड़ कर बीच में ही लटक गया। वृक्ष पर मधुमक्खियों का छत्ता लगा हुआ था, जो उसी व्यक्ति का पीछा करने वाले हाथी के धक्के से हिल गया। वृक्ष के हिलने से मक्खियाँ उड़ गयीं और छत्ते से मधु (शहद) की बूंदे टपककर उस व्यक्ति के मुँह में गिरने लगीं। कुएँ में चार महासर्प उस व्यक्ति को डसने के लिए नीचे से फुँकार मार रहे थे। जिस तने को पकड़कर वह लटका हुआ था, उसे भी काले–धौले (सफेद) दो चूहे काट रहे थे। एक विद्याधर ने वहाँ से निकलते हुए उस व्यक्ति की इस दुर्दशा को देखकर दयावश उससे अपने विमान में बैठकर प्राण बचाने को कहा। उस अभागे व्यक्ति ने विद्याधर से मधु की टपक रही बूंद को चाटने तक ठहरने को कहा। उस व्यक्ति के मुँह में बूंद टपकने के उपरान्त विद्याधर ने पुनः उससे विमान में आने को कहा। किन्तु उसने पुनः मधु की टपक रही बूँद के रसास्वादन के लोभ में विद्याधर को कुछ देर और ठहरने को कहा। बार–बार उसका यही जवाब पाकर विद्याधर लौट गये। विषयों द्वारा ठगे गये जीवों की यही दशा होती है और उन्हें अपने हित–अहित का भी ज्ञान नहीं होता है। जिस प्रकार मधु की एक बूँद के लोभ में उस सांसारिक जीव को विद्याधर के समझाने पर भी अपने हित–अहित का ज्ञान नहीं हुआ, उसी प्रकार विषयों में फंसे हुए जीव संसार रूपी कुएँ में काल रूपी हाथी द्वारा नाना प्रकार के कष्ट पाकर भी चेतना में नहीं आते हैं। उन्हें नहीं पता कि उनकी आयु–रूपी डाली को क्रमशः दिन–रात रूपी काले और सफेद दो चूहे प्रतिपल काट रहे हैं। कुएँ में चार सर्प–रूपी चार गतियाँ उन्हें डसने को नित्य उद्यत हैं और गुरु उन्हें उनके हित का उपदेश दे रहे हैं, फिर भी वे मधु की बूंद रूपी विषय सुखों में लुब्ध होकर सच्चा मार्ग खोकर अधोगति को प्राप्त कर रहे हैं।

3. षट् लेश्या का अंकन

इस चित्र में लेश्याओं के माध्यम से व्यक्ति के स्वभाव में विविधता को दिखाया गया है। जैन धर्मानुसार लेश्याएँ छह प्रकार की होती है – कृष्ण, नील, कपोत, पीत, पद्म और शुक्ल। इनमें से आरंभ की तीन लेश्याएँ अशुभ मानी जाती हैं और वे नरक गति की कारक हैं। अन्तिम तीन लेश्याएँ शुभ मानी जाती हैं और वे देव गति की कारक हैं। वृक्ष से आम प्राप्त करने के लिए कोई व्यक्ति सम्पूर्ण वृक्ष को ही उखाड़ना चाहता है (कृष्ण लेश्या)। कुछ व्यक्ति तना (नील लेश्या) काटकर, कुछ व्यक्ति शाखा (कपोत लेश्या) को काटकर फल प्राप्त करना चाहते हैं। कुछ व्यक्ति टहनी को तोड़कर (पीत लेश्या) फल प्राप्त करना चाहते हैं। कुछ व्यक्ति शाखा पर बैठकर आम्रफल तोड़ते हैं (पद्म लेश्या) तो कुछ व्यक्ति पेड़ से गिरे हुए आम्रफल को प्राप्त करके ही सन्तोष कर लेते हैं (शुक्ल लेश्या)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

4. वनवास काल में श्रीराम, लक्ष्मण एवं सीता द्वारा चारण मुनियों को आहार-दान

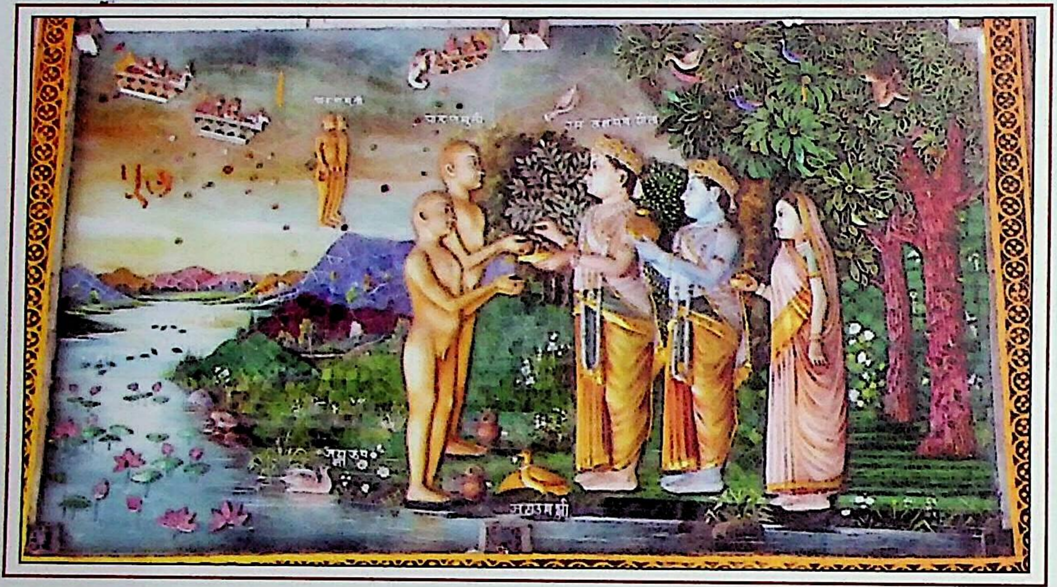

इस चित्र में श्री रामचन्द्रजी, लक्ष्मणजी और सीताजी को वनवास काल में दण्डक वन में रहते हुए अपने पुण्य उदय से श्री आकाशगामी चारण युगल मुनियों के पधारने पर उन्हें नवधाभक्तिपूर्वक आहार-दान देते हुए चित्रित किया गया है। इस आहार दान के प्रभाव से वन में देव विमानों द्वारा पंच-आश्चर्य और पुष्प-वृष्टि हो रही है। श्री चारण मुनियों को देखकर जटायु पक्षी को अपना जाति स्मरण हो जाता है और वह चारण मुनियों के चरणों में गिर पड़ता है, जिसके प्रभाव से उसका सुन्दर शरीर उसे पुनः प्राप्त हो जाता है।

5. ज्ञानावरणी कर्म का स्वरूप

इस चित्र में मूर्ति के उदाहरण के माध्यम से जीव में ज्ञानावरणी कर्म के उदय होने से किस प्रकार वह ज्ञान से च्युत हो जाता है, को प्रतिबिम्बित किया गया है। इस चित्र के सबसे ऊपर पहली पंक्ति में **''ज्ञानावरणी कर्म का स्वरूप''** और उसके नीचे दो पंक्तियों में अधोलिखित दोहा लिखा हुआ है –

मुरति ऊपर पट करौ रूप न जानै कोय
ज्ञानावरनी करम तें जीव अज्ञानी होय

अर्थात् जिस प्रकार मूर्ति के ऊपर वस्त्र ढ़क देने से उसके रूप का विवेचन नहीं किया जा सकता है, उसी प्रकार जीव में ज्ञानावरणी कर्म के उदय होने से ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता है।।

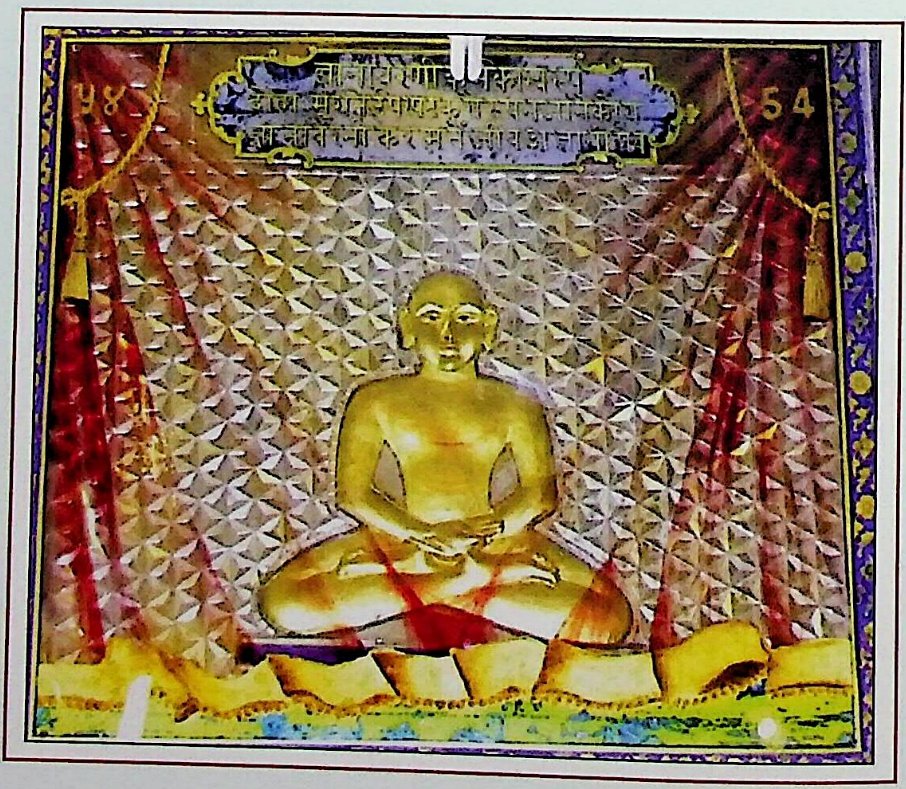

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुस्तक इं0........ नरिया वाराणसी

6. दर्शनावरणी कर्म का स्वरूप

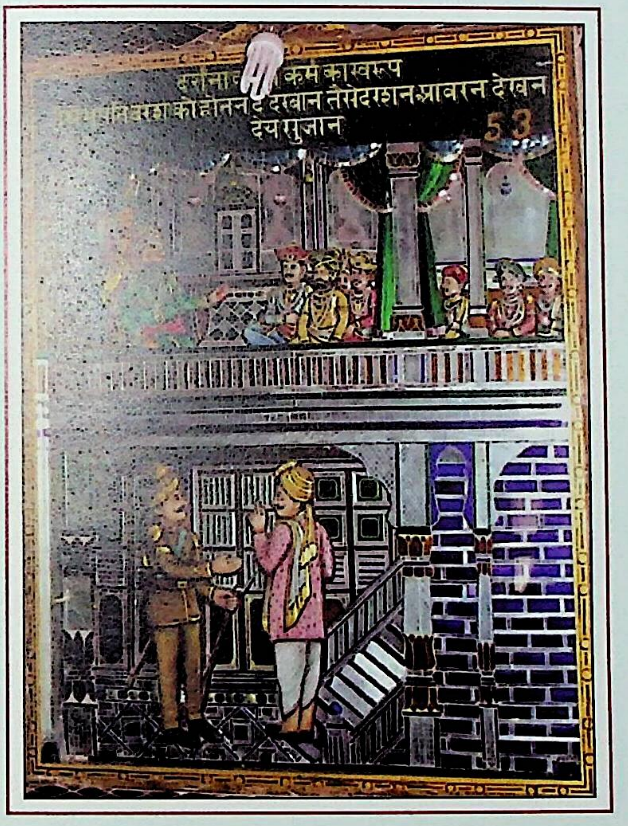

इस चित्र में जीव में उत्पन्न दर्शनावरणी कर्म के प्रभाव को राजदरबार के उदाहरण के माध्यम से चित्रित किया गया है। चित्र के सबसे ऊपर पहली पंक्ति में **''दर्शनावरणी कर्म का स्वरूप''** और उसके नीचे दो पंक्तियों में अधोलिखित दोहा लिखा हुआ है–

जैसे भूपति दरश को होन न दे दरबान

तैसे दरशन आवरन देख न देय सुजान

अर्थात् जिस प्रकार राजदरबार का पहरेदार किसी भी व्यक्ति को राजा से नहीं मिलने देता है, उसी प्रकार दर्शनावरणी कर्म के उदय से जीव को आत्मा के स्वरूप का ज्ञान नहीं हो पाता है।

7. वेदनीय कर्म का स्वरूप

इस चित्र के माध्यम से जीव में वेदनीय कर्म के प्रभाव को दर्शाया गया है। चित्र में सबसे ऊपर पहली पंक्ति में **''बेदनीय कर्म का स्वरूप''** और उसके नीचे दो पंक्तियों में अधोलिखित दोहा लिखा हुआ है –

सहत मिली असि धार सुख दुख जीवन को करे

कर्म बेदनी सार साता असाता देत है

अर्थात् जिस प्रकार मधु (शहद) से लिपटी हुई तलवार की धार को चाटने से सुख और दुःख दोनों का अनुभव होता है, उसी प्रकार वेदनीय कर्म के प्रभाव से जीव को सुख और दुःख दोनों प्राप्त होते हैं। वेदनीय कर्म सुख व दुःख दोनों का कारक है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

8. मोहनीय कर्म का स्वरूप

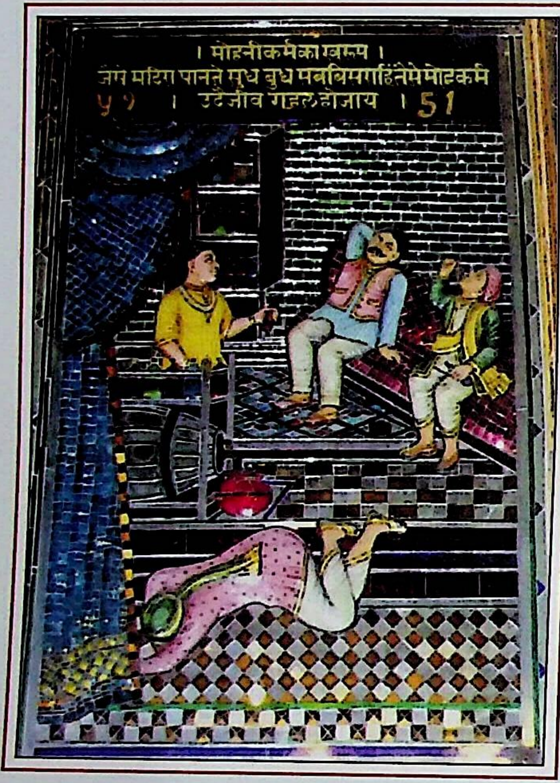

इस चित्र में मदिरालय के उदाहरण के माध्यम से जीव में मोहनीय कर्म के प्रभाव को चित्रित किया गया है। चित्र के सबसे ऊपर पहली पंक्ति में **''मोहनीय कर्म का स्वरूप''** और उसके नीचे दो पंक्तियों में अधोलिखित दोहा लिखा हुआ है –

जैसे मदिरा पान ते सुध बुध सब विसराहिं

तैसे मोह कर्म उदै जीव गहल हो जाय

अर्थात् जिस प्रकार मदिरा (शराब) पीने से व्यक्ति अपनी सुध–बुध खोकर उन्मत्त हो जाता है, उसी प्रकार मोहनीय (मोहनी) कर्म के उदय से व्यक्ति विवेकशून्य हो जाता है।

9. आयु कर्म का स्वरूप

इस चित्र में आयु कर्म के प्रभाव को दर्शाया गया है। चित्र के सबसे ऊपर पहली पंक्ति में **''आयु कर्म का स्वरूप''** और उसके नीचे दो पंक्तियों में अधोलिखित दोहा लिखा हुआ है –

जैसे नर को पांव दियो काठ मै थिर रहै

तैसे आयु सुभाव जिय को चहुंगति थिर करे

अर्थात् जिस प्रकार लकड़ी में पैर डालने पर दबने से वह स्थिर हो जाते हैं, उसी प्रकार आयु कर्म के स्वरूप से व्यक्ति विभिन्न गतियों को प्राप्त होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

10. नाम कर्म का स्वरूप

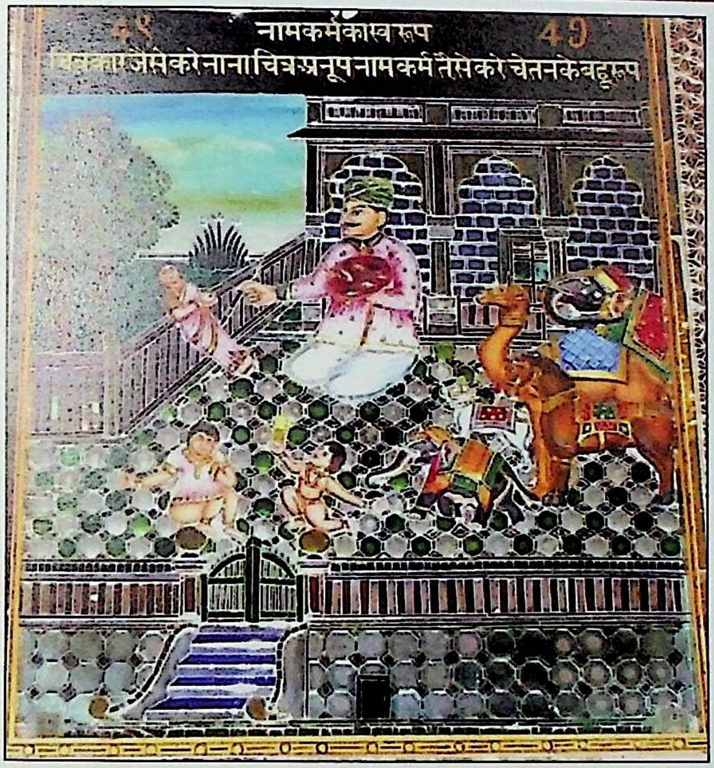

इस चित्र में नाम कर्म के प्रभाव को दर्शाया गया है। चित्र के सबसे ऊपर पहली पंक्ति में **''नाम कर्म का स्वरूप''** और उसके नीचे दो पंक्तियों में अधोलिखित दोहा लिखा हुआ है –

चित्रकार जैसे करे नाना चित्र अनूप

नाम कर्म तैसे करे चेतन के बहुरूप

अर्थात् जिस प्रकार चित्रकार नाना प्रकार के चित्रों की रचना करता है, उसी प्रकार नाम कर्म के प्रभाव से शरीर सौष्ठव एवं सौन्दर्य बनता है।

11. गोत्र कर्म का स्वरूप

इस चित्र में कुम्भकार (कुम्हार) के उदाहरण के माध्यम से जीव में गोत्र कर्म के प्रभाव को निरूपित किया गया है। चित्र के सबसे ऊपर पहली पंक्ति में **''गोत्र कर्म का स्वरूप''** और उसके नीचे दो पंक्तियों में अधोलिखित दोहा लिखा हुआ है –

ज्यों कुम्हार छोटे बडे भांडे घडे बनाय

गोत्र कर्म त्यों जीव को ऊंच नीच कुल दाय

अर्थात् जिस प्रकार कुम्हार मिट्टी से छोटे व बड़े बर्तन–घड़े बनाता है, उसी प्रकार गोत्र कर्म के प्रभाव से जीव को उच्च एवं नीच अवस्था प्राप्त होती है।

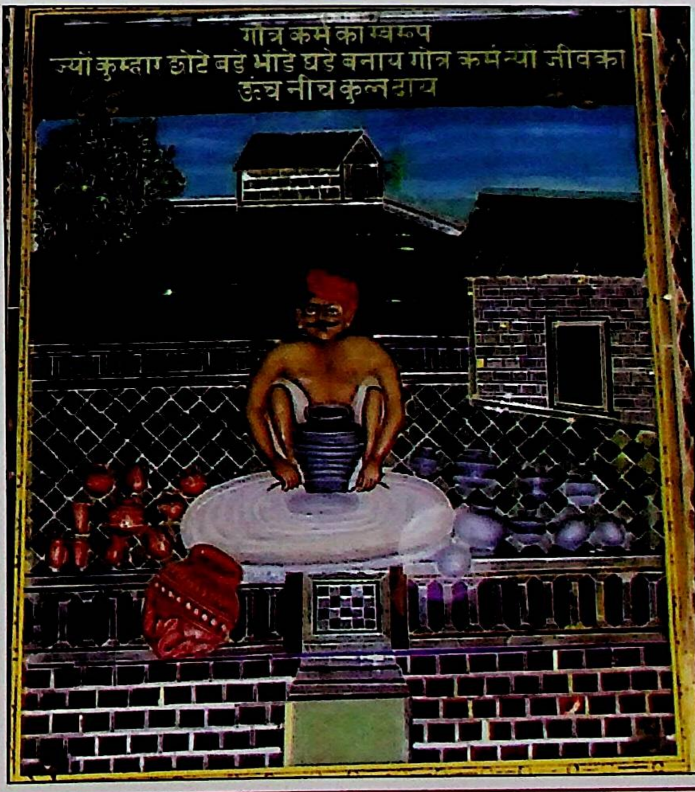

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

12. अन्तराय कर्म का स्वरूप

इस चित्र में राजा एवं उसके भण्डारी का उदाहरण देकर जीव में अन्तराय कर्म के प्रभाव को दर्शाया गया है। चित्र में सबसे ऊपर पहली पंक्ति में **''अन्तराय कर्म का स्वरूप''** और उसके नीचे दो पंक्तियों में अधोलिखित दोहा लिखा हुआ है –

भूप दिलावे द्रव्य को भंडारी दे नाहिं

होन न दे नहिं संपदा अन्तराय जग माहिं

अर्थात् जिस प्रकार भण्डारी राजा को दान करने से रोकता है, उसी प्रकार अन्तराय कर्म जीव को दान आदि पुण्य कर्मों से रोकता है।

13. अष्ट प्रातिहार्यों का चित्रण

इस चित्र में जैन धर्म के अष्ट प्रातिहार्यों – पुष्पवृष्टि, भामण्डल, सिंहासन, दिव्यध्वनि, चमर, छत्र, अशोक वृक्ष और दुंदुभिबाजे का अंकन ऊपर–नीचे दो पंक्तियों में किया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

14. अष्ट मंगल द्रव्यों का चित्रण

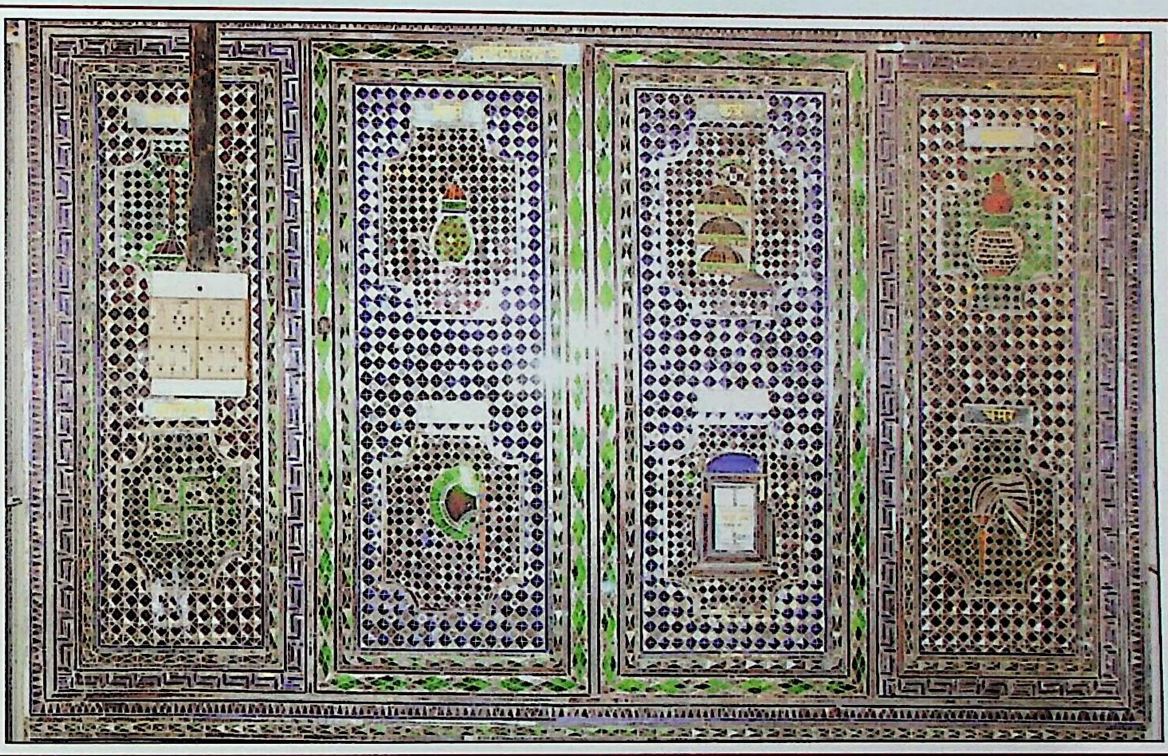

इस चित्र में जैन धर्म के मांगलिक चिन्ह **''अष्ट मंगल द्रव्यों''** का अंकन ऊपर–नीचे दो पंक्तियों में किया गया है। ऊपर की पंक्ति में ठोना, झारी, छत्र एवं कलश चित्रित हैं और नीचे की पंक्ति में साथिया, पंखा, दर्पण एवं चमर अंकित हैं।

15. मन्दिर का दृश्य

इस चित्र में जिनालय की आकृति को चित्रित किया गया है।
प्रतीक रूप से तीन दरवाजे एवं शिखर को दिखाया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

16. रिद्धीधारी मुनि महाराज की तपस्या का प्रभाव

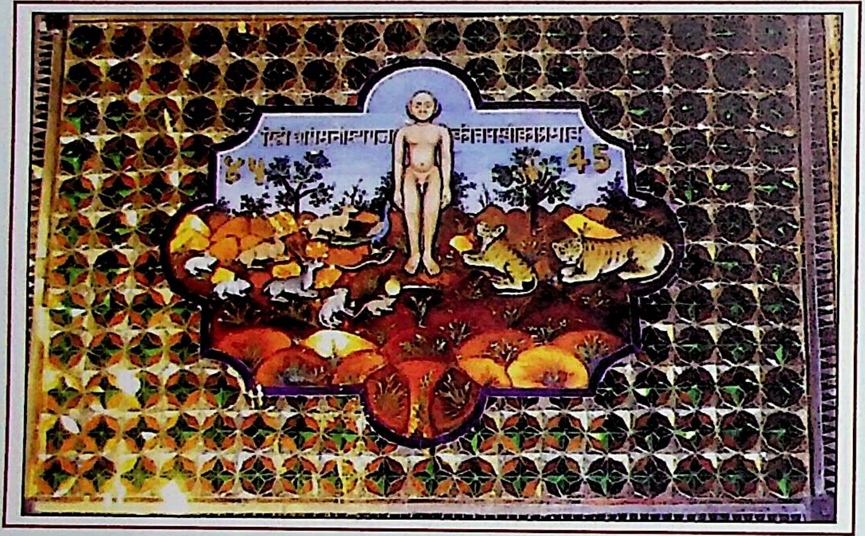

इस चित्र में रिद्धीधारी (ऋद्धिधारी) मुनि महाराज की तपस्या के प्रभाववश उनके समक्ष विपरीत स्वभाव वाले जीवों को शान्तपरिणामी होकर बैठा हुआ चित्रित किया गया है। पंच महाव्रतों के पालनकर्ता मुनि महाराज के तप के प्रभाव से परस्पर विरोधी स्वभाव वाले पशु–पक्षी भी उनकी उपस्थिति में शान्त भाव धारण कर बैठे रहते हैं। इस चित्र में सबसे ऊपर लिखा भी हुआ है – रिद्धीधारी मुनी (मुनि) म्हाराज (महाराज) की तपस्या का प्रभाव ।

17. अहिंसा व्रत का फल

इस चित्र में अधोलिखित कथानक के माध्यम से अहिंसा व्रत का पालन करने वाले जीव की सद्गति का चित्रण किया गया है। कथानक नीचे लिखा भी गया है– वाराणसी नगर में राजा पाकशासन ने राज्य में किसी भी प्रकार की जीवहिंसा के निषेध की घोषणा करा दी। कुछ समय उपरान्त धर्म नामक राजकुमार को ही नदी में शिकार करने पर राजघोषणा की अवहेलना के कारण कोतवाल द्वारा पकड़कर राजा के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। राजा ने क्रोधित होकर राजपुत्र को तालाब में डुबोकर प्राणदण्ड की सजा सुनाई। प्राणदण्ड देने के लिए यमपाल नामक चाण्डाल को बुलाया, किन्तु यमपाल चाण्डाल द्वारा मुनि महाराज के समक्ष चतुर्दशी के दिन किसी भी प्रकार की हिंसा न करने का नियम लेने के कारण व राजपुत्र को प्राणदण्ड देने वाले दिन भी चतुर्दशी होने के कारण राजा के समक्ष राजपुत्र को मारने से मना कर दिया। ऐसा सुनकर राजा और अधिक कुपित हो गया और उसने राजपुत्र व चाण्डाल दोनों को सुंसुमार नामक तालाब में फेंकने का आदेश दे दिया। दोनों को पत्थर बांधकर तालाब में पटक दिया गया। किन्तु अहिंसा व्रत के प्रभाव से यमपाल चाण्डाल जलदेवों द्वारा निर्मित कमल के सिंहासन पर विराजमान होकर पूजा गया और राजपुत्र सेवक के रूप में चाण्डाल पर छत्र डुलाने लगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

18. जुआ खेलने का दुष्परिणाम

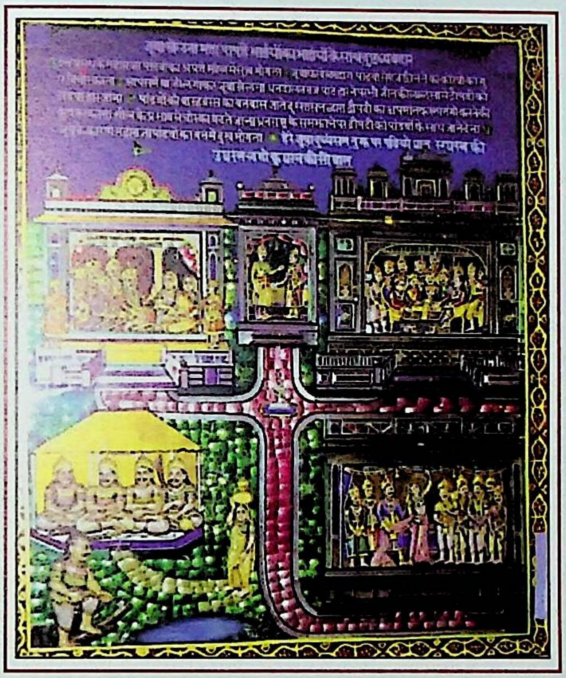

इस चित्र में जुआ खेलने के दुष्प्रभाव को महाभारत के कथानक के माध्यम से चित्रित किया गया है। महाभारत के इस कथानक को चित्रकार ने पाँच खण्डों में चित्रित किया है और प्रत्येक खण्ड से सम्बन्धित विवरण क्रमबद्ध रूप में ऊपर की ओर लिखा भी है। चित्र के सबसे ऊपर के भाग में "जुआ खेलना महापाप है भाईयों का भाईयों के साथ दुष्ट व्यवहार" अंकित है। इसके उपरान्त महाभारत की घटना को क्रमबद्ध रूप में इस प्रकार लिखा गया है – 1. इन्द्रप्रस्थ में महाराजा पाण्डवों का अपने महल में सुख भोगना, 2. जुआ के खेल में पांडवों से राज छीनने का कोरवौं का गुप्त विचार करना, 3. आपस में बाजी लगाकर जुआ खेलना धन–दौलत–राजपाट हारने पर भी जीत की लालसा में द्रौपदी को दांव पर हार जाना, 4. पांडवों को बारह वर्ष का वनवास जाना, दुशासन द्वारा द्रौपदी का अपमान करना व चीर हरण (निर्वस्त्र) करने की कुचेष्टा करना, शील के प्रभाव से चीर का बढ़ते जाना, घृतराष्ट्र के समझाने पर द्रौपदी को पांडवों के साथ जाने देना, 5. जुऐ के कारण महाराजा पांडवों का वन में दुःख भोगना। इसके बाद लिखा हुआ है – **हे रे जुवा दुर्व्यसन तुझ पर पडियो धान, सुधरन की उधरन लगी कुधरन की सी बात।** इस प्रकार इस चित्र में महाराज पाण्डवों का इन्द्रप्रस्थ में सुख भोगने से लेकर जुआ खेलने, उसमें धन–दौलत–राजपाट व साथ ही द्रौपदी को हारने के बाद वनवास पर जाने और दुःख भोगने की घटनाओं को सरलतापूर्वक चित्रित किया गया है।

19. सत्याणुव्रत का महात्मय

इस चित्र में सत्य व्रत के धारक एक चोर को सद्गति मिलने की कथा का रूपांकन किया गया है और कथानक भी चित्र के निचले भाग में लिखा हुआ है – एक चोर ने मुनि महाराज के समक्ष कभी भी झूठ न बोलने का नियम लिया। अपनी आदत के अनुरूप अगले दिन वह चोर चोरी करने की नियत से राजमहल में प्रवेश करने लगा। पहरेदारों द्वारा पूछने पर उसने अपने आपको चोर बताया और कहा कि मैं राजमहल में चोरी करने आया हूँ। पहरेदारों ने उस चोर की बात पर यह समझकर विश्वास नहीं किया कि कोई चोर क्यों अपने मुख से स्वयं को चोर कहेगा? पहरेदारों ने उसे राजमहल का कोई विशिष्ट व्यक्ति समझकर महल में प्रवेश करने दिया। चोर राजा के हीरे–जवाहरात चुराकर आसानी से महल से बाहर निकलकर चला गया। सुबह जब चोरी की इस घटना का पता चला तो राजा ने कोतवाल को चोर को पकड़ने की आज्ञा दी। जब कोतवाल ने उस चोर को पकड़ लिया, तब भी उस चोर ने सत्य बोलते हुए अपने द्वारा की गई चोरी को स्वीकार किया। चोर को पकड़कर राजा के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। चोर की सत्यवादिता से प्रभावित होकर राजा ने उस चोर को अपने राज्य में प्रधान का पद दिया। इस प्रकार इस कथादृश्य से स्पष्ट होता है कि सत्य–व्रत के प्रभाव से चोर भी स्वर्ग प्राप्त कर सकता है।

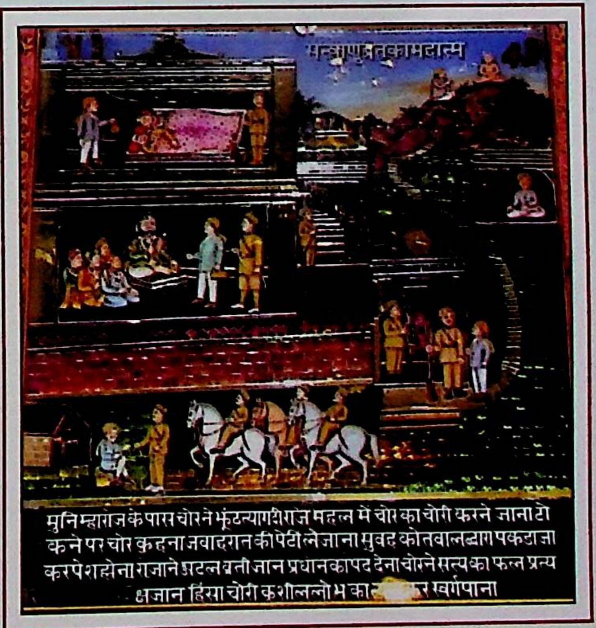

Gyan Vani Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

20. वेश्या संसर्ग के दुष्परिणाम

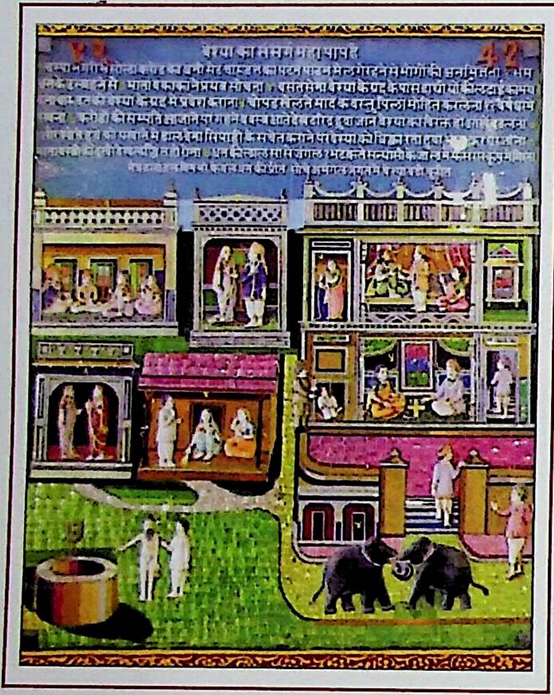

इस चित्र में सेठ चारुदत्त के एक वेश्या के संसर्ग में आने से हुए विनाश की कथा को चित्रित किया गया है। कथानक को चित्र के ऊपर लिखा भी गया है – चम्पापुरी के राजा शूरसेन के राज्य में सेठ भानुदत्त और उसकी पत्नी सुभद्रा से चारुदत्त नामक नीतिवान् पुत्र उत्पन्न हुआ। नित्य पठन–पाठन में लगे रहने से वह विषय–भोगों से अनभिज्ञ रहा और 25 वर्ष की आयु तक विषय–वासना उसे छू तक नहीं पाई। माता–पिता के बहुत आग्रह पर उसने अपने मामा की पुत्री मित्रवती से विवाह कर लिया। विवाहोपरान्त भी चारुदत्त विवाह के रहस्य को नहीं समझ सका। इससे चारुदत्त की माता को चिन्ता हुई। विषयों की ओर प्रवृत्त करने के लिए चारुदत्त की माता एवं काका ने बसन्तसेना नामक वेश्या के घर के समीप हाथियों की लड़ाई का भय दिखाकर चारुदत्त को उस वेश्या के घर में प्रवेश करा दिया। बसंतसेना वेश्या ने चौपड़ खेलते समय चारुदत्त को मादक वस्तु पिलाकर मोहित कर लिया। चारुदत्त उस वेश्या के साथ विषयों में इतना फंस गया कि 12 वर्षों तक वह उस वेश्या के यहाँ रहा। सोलह करोड़ के धनी सेठ चारुदत्त ने अपनी समग्र सम्पदा वेश्या पर लुटा दी। पूरी तरह से दरिद्र होने पर वेश्या चारुदत्त की ओर से विमुख हो गई। वेश्या को धिक्कारता हुआ चारुदत्त वहाँ से भाग गया और पुनः धन की लालसा में भटकते हुए दुःख भोगने लगा। धन–लालसा में एक सन्यासी की बातों में आकर वह सोना बनाने वाले रसायन को पाने के लोभ में कूप में गिर पड़ता है। इस प्रकार किसी समय का बहुत बड़ा धनी सेठ विषयासक्त होकर भिखारी बन गया और तरह–तरह के दुःख भोगने लगा। लिखा भी है – **नेत्र हलाहल विष भरे केवल धन की प्रीत, सोचे अमंगल जगत में वैश्या बडी कुरीत।**

21. अचौर्याणुव्रत पालने का महात्म (महात्म्य)

इस चित्र में अणुव्रती वारिषेण की कथा का चित्रांकन मिलता है। सम्बन्धित कथानक भी चित्र के नीचे लिखा हुआ है – राजगृह नगर के राजा श्रेणिक व रानी चेलना का पुत्र वारिषेण उत्तम श्रावक धर्म के पालनकर्ता थे। उसी राज्य में श्रीकीर्ति सेठ की सेठानी के गले का हीरों का हार देखकर मगधसुन्दरी नामक वेश्या के मन में उसे पाने का लोभ उत्पन्न हो गया। वेश्या ने विद्युत्प्रभ नामक चोर से उसे चुराने को कहा। चोर ने उस हार को चुरा लिया और भाग खड़ा हुआ। कोतवाल के पीछा करने पर डरकर चोर ने वह हार श्मशान में चतुर्दशी के दिन कायोत्सर्गपूर्वक तपस्यारत वारिषेण के चरणों में डाल दिया और छिप गया। कोतवाल ने मुनि वारिषेण के चरणों में हार देखकर उन्हें चोर बताकर राजा श्रेणिक के सम्मुख प्रस्तुत किया। राजा ने बिना विचारे कुपित होकर मुनि वारिषेण के शिरच्छेद का आदेश दे दिया। किन्तु अचौर्याणुव्रत के प्रभाव से तलवारें पुष्पमालाओं में बदल गई। तदनन्तर राजपुत्र वारिषेण ने मुनि दीक्षा ले ली।

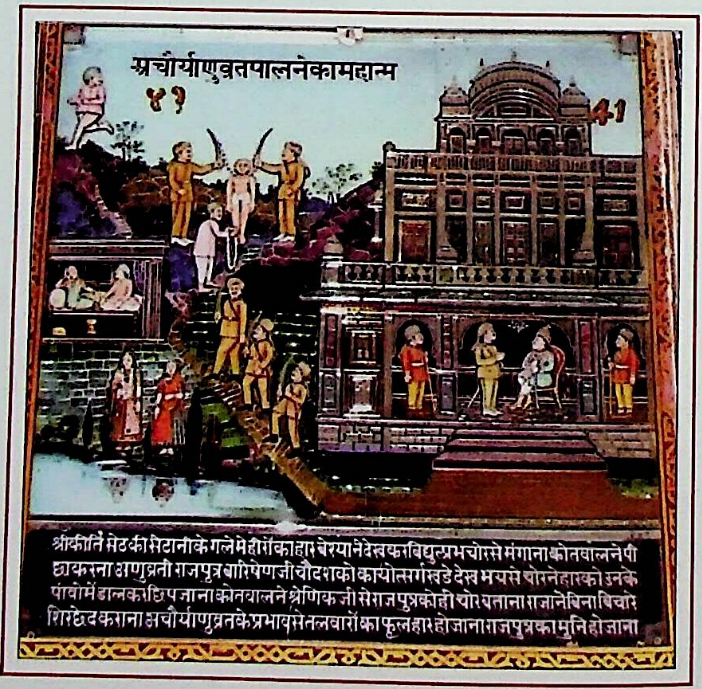

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन संस्थान नरिया वाराणसी पुस्तक सं०........

22. चोरी के दुष्परिणाम

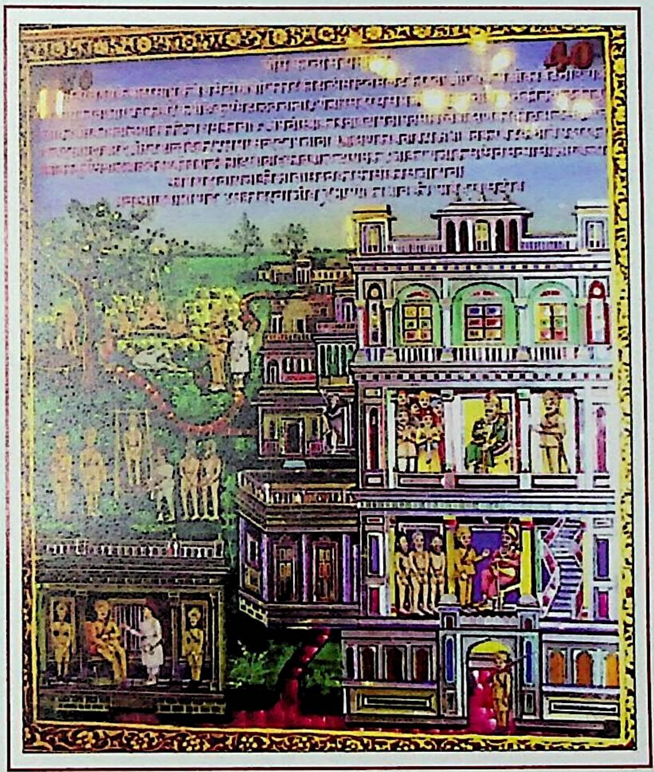

इस चित्र में ढोंगी चोरों का दिन में साधुओं के वेश में तपस्या और रात्रि में चोरी करने के कथानक को चित्रांकित किया गया है। तत्सम्बन्धी कथा भी चित्र के ऊपर संक्षेप में लिखी हुई है। कथानुसार कौशाम्बी नगर के बाहर साधु के वेश में ढोंगी चोर दिन में काबड़ में बैठकर व पेड़ से लटककर तपस्या करने का दिखावा करते थे और रात्रिकाल में चोरी करके चोरी का सारा माल समीप में बने कुएँ में डाल देते थे। ढोंगी साधु के साथ उसके दो चेले भी इस पापकर्म में लिप्त थे। लगातार हो रही चोरियों से घबराकर प्रजाजनों ने राजा से इसकी शिकायत की। राजा ने कोतवाल को तुरन्त चोरों को पकड़ने का आदेश दिया। एक ब्राह्मण ने अपनी पत्नी के सतीपन से विरक्त होकर कोतवाल से शिकायत कर दी कि वहीं ढोंगी साधु ही चोर हैं। ब्राह्मण अंधा बनकर उसी कुएँ के पास बड़ के पेड़ के नीचे रहने लगा। जैसे ही ढोंगी चोरों ने चोरी का माल कुएँ में डाला तो ब्राह्मण के संकेत पर कोतवाल ने उन तीनों ढोंगी चोरों को पकड़ लिया। राजा ने तीनों चोरों को फांसी की सजा सुनाई। कहा भी गया है –धन ग्यारहवां प्राण है, उसका हरता जीव, है प्राणों का घात की पावे दुःख सदीव।

23. ब्रह्मचर्याणुव्रत का महात्म (महात्म्य)

इस चित्र में सेठ सुदर्शन पर कामासक्त होकर महारानी का उनके साथ संसर्ग करने पर सफल न होना और तब उन्हें फंसाकर फांसी दिलवाने की कथा के माध्यम से ब्रह्मचर्य व्रत के पालने के प्रभाव का रूपांकन किया गया है। तत्सम्बन्धी कथा भी संक्षेप में नीचे लिखी हुई है। कथानुसार पटना नगर के अति रूपवान सेठ सुदर्शन को रथ में सवार होकर राजमहल के नीचे से जाते देख महारानी उनके प्रति कामासक्त रहने लगी। ब्रह्मचर्य व्रत के धारी सेठ सुदर्शन एक दिन जब ध्यान में मग्न थे तो महारानी ने अपनी दासियों को आज्ञा देकर उन्हें उठवाकर महल में बन्द कर दिया। महारानी ने सेठ सुदर्शन के साथ काम सेवन का बहुविध प्रयास किया, किन्तु अचल सेठ सुदर्शन अपने व्रत पर अड़े रहे। अपनी कुचेष्टा समझकर स्वयं बचने के लिए महारानी ने सेठ सुदर्शन को झूठे आरोपों में फंसा दिया। राजा ने भी बिना विचारे महारानी की कपटी बातों में आकर सेठ सुदर्शन को सूली पर चढ़ाने का आदेश दे दिया। किन्तु शील व्रत के प्रभाव से सूली सिंहासन बन गई। फलस्वरूप सेठ सुदर्शन ने मुनि दीक्षा ग्रहण कर मोक्ष की प्राप्ति की।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

24. परिग्रह प्रमाण व्रत का फल

इस चित्र में महाराज भरत के सेनापति परिग्रहप्रमाण (परिमाण) व्रत के धारी जयकुमारजी की देवों द्वारा परीक्षा एवं इस व्रत के महात्मय को जानकर उनका मुनि दीक्षा लेने के कथानक का अंकन किया गया है और साथ में तत्सम्बन्धी लेख को भी चित्र के नीचे लिखा गया है। कथानुसार महाराज भरत के सेनापति जयकुमारजी ने कैलाश पर्वत पर मन्दिर में परिग्रह प्रमाण व्रत धारण कर उसकी साधना की। इस व्रत के प्रभाव से सर्वत्र जयकुमारजी की जय–जयकार होने लगी। इन्द्र ने जब जयकुमारजी के परिग्रह विरक्ति की प्रशंसा सुनी तो उन्होंने देव को उनकी परीक्षा हेतु कैलाश पर भेजा। देव ने जयकुमारजी को रत्न–रत्नादि विविध परिग्रहों से ललचाने के बहुत प्रयास किये, किन्तु जयकुमारजी अपने परिग्रह प्रमाण व्रत पर अटल रहे। देव ने भी उन्हें अटलव्रती जान उनकी स्तुति की। परिग्रह प्रमाण व्रत के महात्म्य को जानकर जयकुमारजी ने मुनि होकर मोक्ष प्राप्त किया।

25. परपुरुष व्यभिचार एवं संकल्पी हिंसा के दुष्प्रभाव

इस चित्र में परपुरुष सेवन और संकल्पी हिंसा के दुष्परिणामों को चित्र के ऊपर लिखे अधोलिखित कथानक के द्वारा बताया गया है। राजा और रानी सुख के साथ अपने महल में सो रहे थे। महल के बाहर से महावत की सुमधुर ध्वनि और वीणा की तान सुनकर रानी मुग्ध होकर बैठ गई। रानी ने आसक्तिवश महावत के साथ काम सेवन किया। राजा को सन्देह हुआ। राजा ने छिपकर रानी के इस कृत्य को देखा तो उसे अत्यन्त दुःख हुआ। दुःखी राजा देखकर राजमाता ने कारण पूछा। राजा ने माता को दुःस्वप्न के बारे में बताया। माता ने बलि–दान से शान्ति प्राप्त होने का उपाय बताया। राजा ने बलि देने से मना कर दिया, तब माता ने आटे के मुर्गे की बलि देने की युक्ति बताई। मातृस्नेह के वशीभूत राजा ने देवी के समक्ष आटे के मुर्गे की बलि दे दी। रानी को महल में बैठा देख राजा ने रानी के ऊपर कमलनाल फेंक कर मारी। रानी ने मूर्च्छित होने का बहाना बनाया, तब राजा ने महावत को कोड़ों से पीटा। रानी ने भेद खुल जाने पर राजा को मारने की युक्ति सोची। राजा ने उदासीन होकर पुत्र को राजभार सौंप दीक्षा लेने की इच्छा प्रकट की। रानी ने कपट से राजा व राजमाता के भोजन में विष मिलाकर दोनों को मार दिया और रानी ने बनावटी विलाप किया। रानी को व्यभिचार एवं पति हिंसा से कोढ़ हुआ। रानी मरकर दुःखी कुत्ती, अंगभंग शूकरी, दुर्गंधा चंडालनी व तीसरे नरक में लोहे के गरम खम्बों से बांधी जाकर दुःख उठाने की पात्र हुई। राजा आटे के मुर्गे की संकल्पी हिंसा के कारण विभिन्न गतियों मुर्गा, मोर, सेही, बिलाव, मगर, कछवा, भैंसा में भ्रमण कर भील बना। साधु महाराज का अनुगृह पाकर वह मनुष्य होकर तपस्या कर स्वर्ग गया। **नारी व्यभिचारी बुरी, खोवे कुल का नाव। दुख पावे संसार में, मिले नरक का ठांव।**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

26. भोग भूमि में कल्पवृक्षों द्वारा इच्छाओं की पूर्ति होने का अंकन

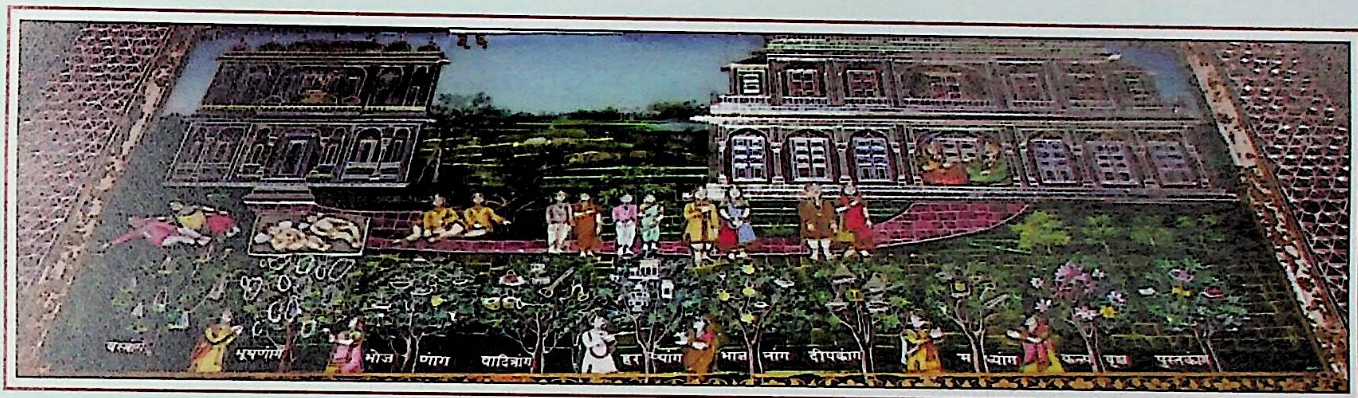

इस चित्र में भोगभूमि में कल्पवृक्षों के द्वारा मनुष्य की सभी प्रकार की इच्छाओं की पूर्ति के युग को दिखाया गया है। भगवान् ऋषभदेव के पूर्व भोग भूमि में 10 प्रकार के कल्पवृक्षों – वस्त्रांग, भूषणांग, भोजणांग, वादित्रांग, हरम्यांग, भाजनांग, दीपकांग, मध्यांग, कल्पवृक्ष एवं पुस्तकांग (पानांग, तूर्यांग, भूषणांग, वस्त्रांग, भोजनांग, आलयांग, दीपांग, भाजनांग, मालांग एवं ज्योतिरंग) से व्यक्ति की सभी इच्छाओं की पूर्ति होती थी।

27. परस्त्री सेवन के दुष्परिणाम

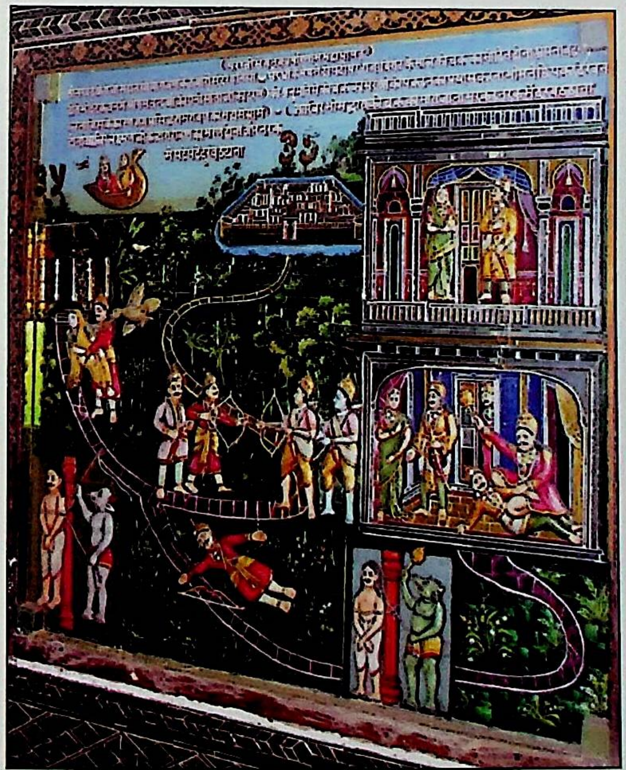

इस चित्र में परस्त्री सेवन के भयावह दुष्परिणामों को रामायण एवं महाभारत की कथाओं के द्वारा चित्रित किया गया है। इस चित्र को चित्रकार ने दो खण्डों में विभाजित किया है। दायीं ओर के खण्ड में लंकापति रावण द्वारा सीता हरण की घटना और बायीं ओर के खण्ड में राजा कीचक का द्रौपदी पर मोहित होना और भीम द्वारा कीचक का वध होने के कथानक को अंकित किया गया है। इन दोनों कथानकों का विवरण चित्र में सबसे ऊपर के भाग में यथास्थान लिखा भी गया है। इसमें सीता–हरण की घटना का विवरण इस प्रकार लिखा हुआ है – तीन खण्ड के राजा महान योद्धा रावण के हजारों सुंदर रानियाँ होते भी दंडक वन में श्री रामचंद्रजी की रानी सीताजी का हरण करना जिसके कारण जग प्रसिद्ध राम–रावण का महासंग्राम हुआ आखिर लक्ष्मणजी के द्वारा रावण का मरण होना और नरक में पड़े–पड़े दुख उठाना । इस प्रकार तीन खण्ड के महान योद्धा रावण के हजारों सुन्दर रानियाँ होने के बाद भी उन्होंने दण्डक वन में वनवास भोग रहे श्री रामचन्द्रजी की रानी सीता का हरण किया, जिसके कारण राम व रावण के मध्य भीषण युद्ध हुआ । अन्त में लक्ष्मणजी ने रावण का वध किया और रावण नरक को प्राप्त हुआ। चित्र में बायीं ओर के खण्ड में महाभारत के परस्त्री सेवन की कथा का विवरण इस प्रकार लिखा है – सैरंध्री के भेष में द्रौपदी पर राजा विराट के साले कीचक का मोहित होना अपनी बहन की अनुमति से कीचक को सैरंध्री को पकड़ने का प्रयास करना भीम ने छिपकर देखना आखिर भीम द्वारा कीचक का मारा जाना, मरकर नरक में दुःख उठाना ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

28. बीस तीर्थंकरों के नामांकन

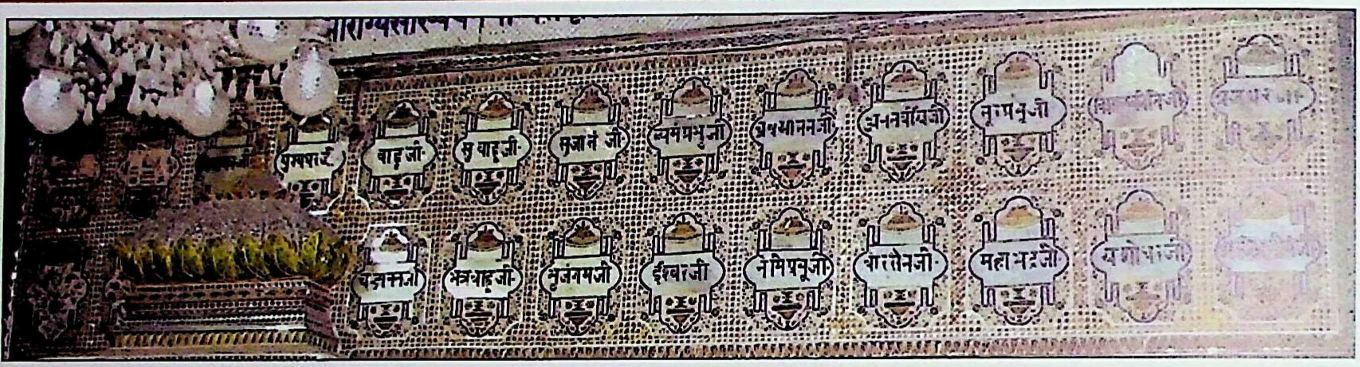

इस चित्र में ऊपर व नीचे दो पंक्तियों में 20 खाने बने हुए हैं और प्रत्येक खाने में जड़े कांच के ऊपर एक–एक करके विद्यमान बीस तीर्थंकरों के नाम अंकित हैं, जो इस प्रकार है –सिमंधरजी, युग्मंधरजी, बाहुजी, सुबाहुजी, सुजानजी, स्वयंप्रभूजी, वृषभाननजी, अनंतवीर्यजी, सूर्यप्रभूजी, विशालकीर्तिजी, व्रजधरजी, चन्द्राननजी, भद्रबाहूजी, भुजंगमजी, ईश्वरजी, नेमिप्रभूजी, वीरसेनजी, महाभद्रजी, यशोधरजी और अजितवीर्यजी।

29. सूर्य एवं चन्द्रमा में जिन मन्दिर

इस चित्र में ऊपर की ओर पृथ्वी के उपग्रह चन्द्रमाा पर जिन मन्दिर और नीचे की ओर सौरमण्डल के केन्द्र सूर्य पर जिन मंदिर को दिखाया गया है। साथ में क्रमशः लिखा भी हुआ है कि – "चंद्र में जिन मंदिर" तथा "सूर्य में जिन मंदिर" ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

30. अष्टापद आदीश्वर स्वामी - कैलाश पर्वत का दृश्य

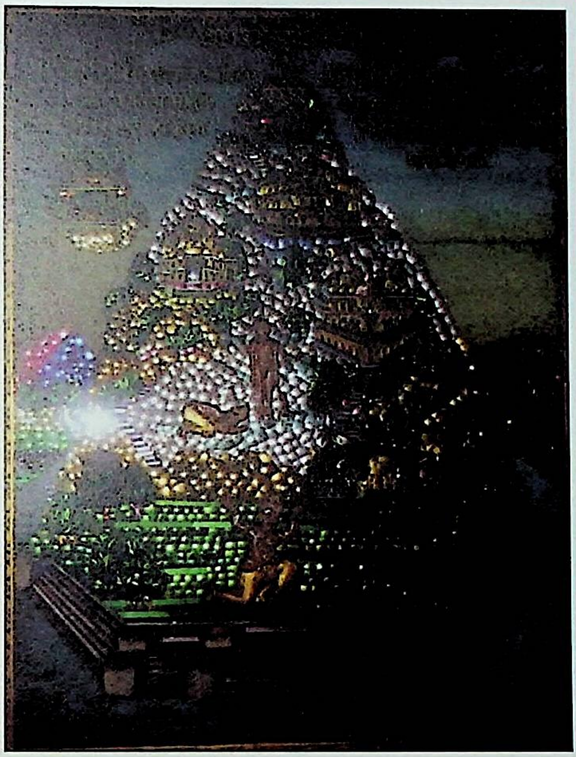

इस चित्र में कैलाश पर्वत पर बालि मुनि की तपस्या के दौरान रावण के विमान के उड़ने में अवरोध आने पर रावण द्वारा गर्वोन्मत्त होकर कैलाश पर्वत को उठाने की चेष्टा करते एवं बालि मुनि द्वारा अपने पैर की अंगूठे से कैलाश पर्वत को दबाते हुए एवं इससे लाचार होकर रावण को बालि मुनि से क्षमा–याचना करने के कथानक का अंकन किया गया है। कथानक चित्र में ऊपर के भाग में लिखा भी हुआ है।

चित्र में कैलाश पर्वत पर जिनायतनों के मध्य में बालि मुनि महाराज तपस्या करते दिखाए गए हैं। ऊपर की ओर रावण अपने विमान में भ्रमण कर रहा है और उसके मार्ग में विशाल कैलाश पर्वत ने अवरोध उत्पन्न कर दिया। घमंड में आकर रावण ने अपनी भुजाओं से कैलाश पर्वत को उठाने की चेष्टा की। इससे कैलाश पर्वत हिलने लगा। मुनि महाराज ने अपने अवधि ज्ञान से रावण के इस कृत्य को जानकर मात्र अपने पैर के अंगूठे को दबा दिया। इससे लाचार होकर रावण वहीं की वहीं झुका रह गया और उसका गर्व चूर–चूर हो गया। जैसे ही मुनि महाराज ने अपना अंगूठा ढ़ीला किया तो रावण ने कैलाश पर्वत को यथास्थान रखकर मुनि महाराज को नमस्कार करते हुए क्षमा मांग ली।

31. चम्पापुरीजी का दृश्य

इस चित्र में तीर्थंकर वासुपूज्य की निर्वाण भूमि चम्पापुरीजी का चित्रण किया गया है। चम्पापुरी बिहार राज्य में भागलपुर शहर से लगभग 4 कि. मी., पूर्णिया से लगभग 110 कि. मी. और पटना से लगभग 230 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। इस पवित्र स्थल पर 12वें तीर्थंकर भगवान् वासुपूज्य के पाँचों कल्याणक हुए थे। चित्र पर सबसे ऊपर के भाग में दो पंक्तियों में **''वासुपूज्य-चंपापुरि नामि''** लिखा हुआ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

32. श्री गिरनारजी का दृश्य

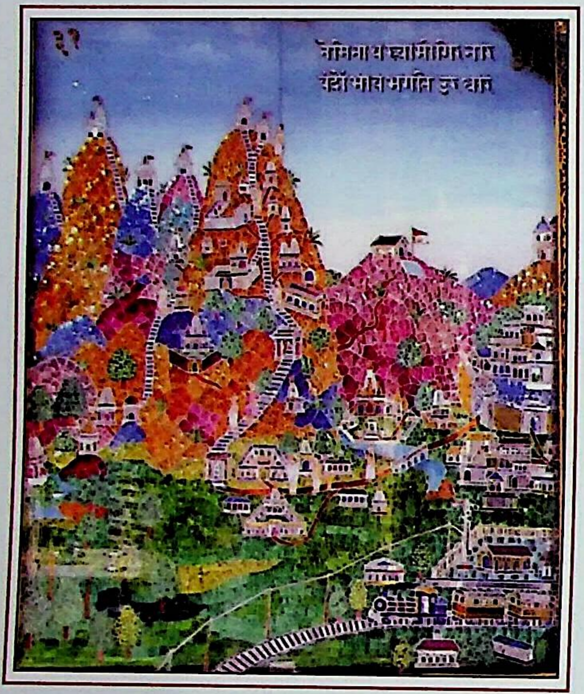

यह चित्र सम्मेदशिखरजी के उपरान्त जैनों के सबसे बड़े तीर्थ श्री गिरनार जी का है। गिरनारजी गुजरात राज्य के जूनागढ़ जिले में जूनागढ़ से 7 कि. मी. और राजकोट से लगभग 100 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। इस क्षेत्र पर कुल पाँच मन्दिर हैं। इनमें एक मन्दिर जूनागढ़ में, तीन मन्दिर पहाड़ की तलहटी में तथा एक मन्दिर पहाड़ पर है। इसे 'मंगलक्षेत्र' या 'ऊर्जयन्त क्षेत्र' के नाम से भी माना जाता है, क्योंकि यहाँ पर 22वें तीर्थंकर भगवान अरिष्टनेमि के तीन कल्याणक हुए थे। षट्खण्डागम ग्रन्थ के रचनाकार भूतबलि, पुष्पदन्त आचार्य को धरसेन आचार्य ने गिरनारजी में ही शिक्षा दी थी। यहाँ से 72 करोड़ 700 मुनि महाराजों को मोक्ष प्राप्त हुआ था। पर्वत पर पाँच टोंक भी हैं। कुल 9999 सीढ़ियाँ है। इस चित्र पर ऊपर के भाग में लिखा हुआ है –

नेमिनाथ स्वामी गिरनार
वंदों भाव भगति उरधार

33. श्री पावापुरीजी का दृश्य

यह चित्र 24वें तीर्थंकर भगवान् महावीर की निर्वाणस्थली पावापुरीजी का है। पावापुरी बिहार राज्य में पटना शहर से लगभग 98 कि. मी.और गया से लगभग 85 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। पावापुरीजी में विशाल पद्म सरोवर के मध्य भाग में श्वेत संगमरमर से निर्मित जैन मन्दिर एवं धर्मशाला बने हुए हैं। इस चित्र में भी पद्म से आच्छादित सरोवर के मध्य भाग में एक विशाल जैन मंदिर दिखाया गया है। यह मंदिर "जल मन्दिर" के नाम से प्रसिद्ध है। सरोवर के किनारे अन्य जिनालय एवं ग्राम बसा हुआ है। इस चित्र के ऊपर तीन पंक्तियों में **"पावापुर स्वामि महावीर श्री महावीर स्वामि की निर्वाण भूमि पावापुर जल मंदिर"** लिखा हुआ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

34. जैन परम्परा में सूक्ष्म लेखन कला के चित्र

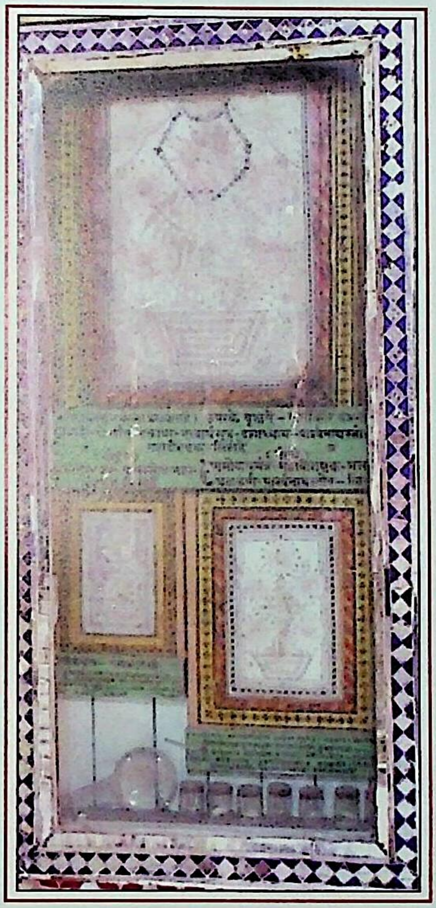

जैन परम्परा में भी सूक्ष्म लेखन कला का प्रचलन इन चित्रों के माध्यम से प्रकट होता है। इनमें सबसे ऊपर के चित्र में णमोकार मन्त्र, तीन चौबीसी, दो दर्शन, भक्तामर, तत्त्वार्थ सूत्र, दशाध्याय, पार्श्वनाथ स्त्रोत व महावीराष्टक लिखे हुए हैं। नीचे दायीं ओर के छोटे चित्र में भक्तामर, पार्श्वनाथ स्त्रोत एवं महावीराष्टक लिखे हुए हैं, जबकि दायीं ओर के चित्र में णमोकार मन्त्र, महावीराष्टक, भक्तामर, घंटाकर्ण व पार्श्वनाथ स्त्रोत लिखे हुए हैं। सबसे नीचे कांच की सात शीशीयाँ रखी हुई हैं। इनमें से एक शीशी में चना की दाल पर **'सब नर को सुख देत है - चन्द्र उगे ते ज्यों कुमुदसर घर में छ विलेत'** दूसरी शीशी में गेहूं के दाने पर **'अहिंसा परमो धर्मः - यतो धर्मस्ततो जय'**, तीसरी शीशी में सरसों के दाने पर **'दीर्घयूहो हुकमचन्दजी'**, चौथी शीशी में मसूर की दाल पर **'कदरेगोहरशाह दानद-यावदानद जोहरी'**, पाँचवी शीशी में चांवल के दाने पर **'श्री दानवीर भक्त शिरोमणी राय बहादुर राज्यभूषण रावराजा सरनाईट हुकमचंदजी'**, छठवीं शीशी में चना की दाल के दाने पर **'ज्योंतरुअन-कल्पतरु-ज्योंतारन मे चंद-हुकमीचंद-जेनीन मे-सोहेसदाअनंद'** (जिस प्रकार वृक्षों में कल्पतरु और तारों में चन्द्रमा श्रेष्ठतम् है उसी प्रकार जैनों में हुकमचंद्र श्रेष्ठतम् हैं, वे सदा आनंद में रहें।) और सातवीं शीशी में इमली के पत्ते पर **'धनस्मपति - अरुउदारता - गुणगरु अरि मांहि - विद्याज्ञान विचार जस-धर्म से शोमा आहि'** लिखा हुआ है।

35. समवशरण का दृश्य

इस चित्र में तीर्थंकर के समवशरण को चित्रांकित किया गया है। जैन मान्यता के अनुसार तीर्थंकरों को घोर तपश्चरण के उपरान्त केवल ज्ञान की प्राप्ति होती है। केवल ज्ञान की प्राप्ति के बाद जिस सभा में तीर्थंकर उपदेश देते हैं, उसे "समवशरण" कहा जाता है। इस समवशरण की रचना के मध्य भाग में तीर्थंकर ऊँचे सिंहासन पर विराजमान होते हैं और उनके चारों ओर गोल परिधि में चारों गतियों के जीव बैठकर तीर्थंकर की दिव्य वाणी को प्राप्त करते हैं। हर एक जीव के लिए इस समवशरण में सुनिश्चित स्थान होता है।

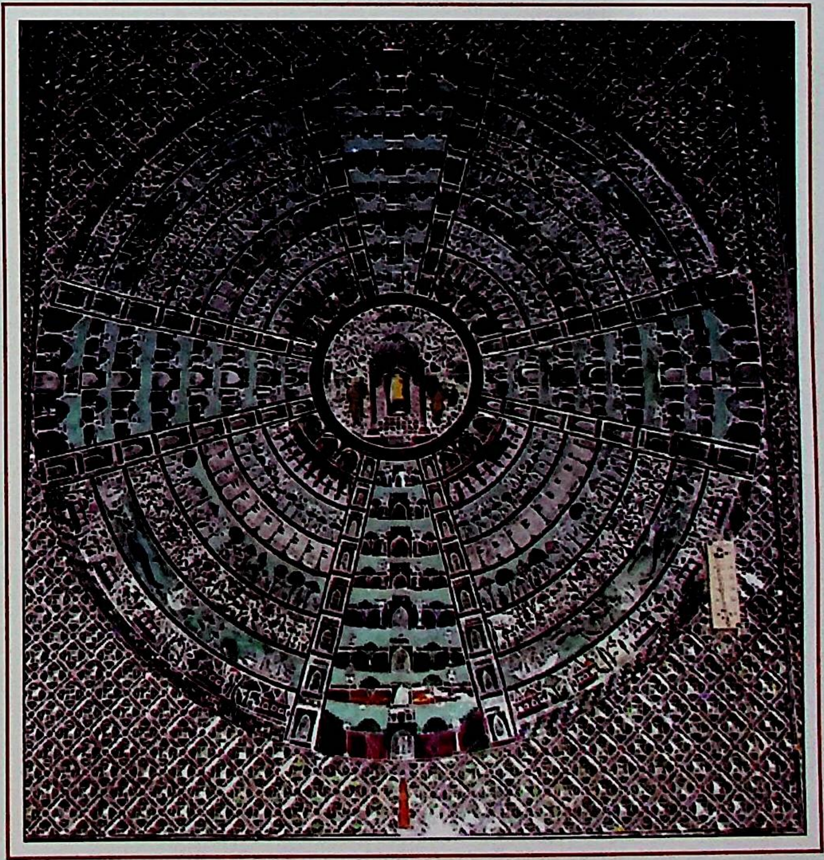

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

36. राजकुमार नेमि की बारात का दृश्य

इस चित्र में राजकुमार नेमिनाथ की बारात एवं उनके वैराग्य लेने की घटना का चित्रण किया गया है। चित्र में दिखाया गया है कि महाराज समुद्रविजय के पुत्र राजकुमार नेमि और महाराज उग्रसेन की पुत्री राजकुमारी राजुल के विवाह के अवसर पर राजकुमार नेमि की बारात निकल रही है। महाराज उग्रसेन के महल के समीप एक बाड़े में पशुओं को बांध कर रखा गया है। राजकुमार नेमि ने बाड़े में बंधे पशुओं की चीत्कार सुनकर अपने सारथी से इनका प्रयोजन पूछा तो उन्हें ज्ञात हुआ कि बारात के भोज में मांस के व्यंजन बनाने के लिए इन पशुओं को बांध कर रखा गया है। पशुओं की करुण चीत्कार सुनकर राजकुमार नेमि का मन दया से भर गया और उन्हें सांसारिक जीवन से विरक्ति हो गई। चित्र में वैराग्य के उपरान्त नेमिनाथ को गिरनार पर्वत पर मुनि महाराज के स्वरूप में तपस्या करते हुए दिखाया गया है। राजुल ने भी नेमिनाथ के मार्ग का अनुसरण कर वैराग्य को प्राप्त किया।

37. सुकुमाल मुनि के वैराग्य लेने की घटना का दृश्य

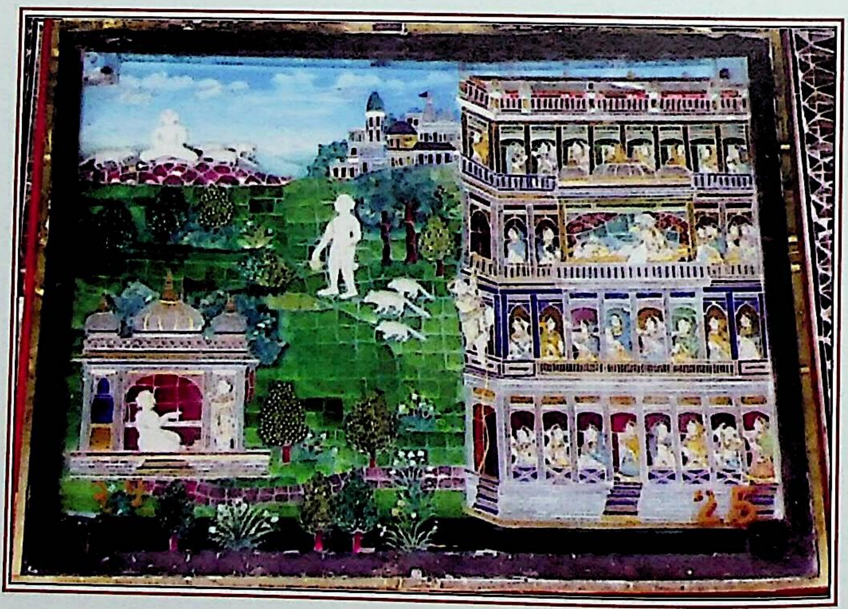

इस चित्र में परम तपस्वी सुकुमाल मुनि के वैराग्य लेने की घटना को चित्रांकित किया गया है। उज्जैन नगर में सेठ सुरेन्द्रदत्त व सेठानी यशोभद्रा से नीतिवान् पुत्र सुकुमाल का जन्म हुआ। यशोभद्रा को एक अवधिज्ञानी मुनिराज से ज्ञात हुआ कि पुत्र का मुख देखते ही सुरेन्द्रदत्त मुनि–दीक्षा ग्रहण कर लेगें और पुत्र भी जब किसी जैन मुनि को देखेगा, तो वह भी वैराग्य को प्राप्त होगा। कथनीनुसार सुकुमाल का मुख देखते ही सेठ ने उसे सेठ–पद का तिलक कर दीक्षा ले ली। सुकुमाल के बड़ा होने पर माँ यशोभद्रा को मुनिराज की कही बातों को लेकर चिन्ता हुई। यशोभद्रा ने सुकुमाल को विषयों में फांसने के लिए उसका विवाह 32 सुन्दर कन्याओं के साथ कर दिया। समयोपरान्त दिगम्बर गणधराचार्य (सुकुमाल के मामा) महल के पीछे उद्यान में आकर ठहरे। उनकी दिव्य वाणी को सुनकर सुकुमाल को अपना जाति स्मरण हो गया। सुकुमाल गुप्त रूप से अपने महल को छोड़कर मुनिराज के पास गये और मुनि–दीक्षा ले ली। एक दिन सुकुमाल मुनि वन से जा रहे थे तो उनके पांवों में कंकड़ से खून बहने लगा। सुकुमाल को देखकर उनके पूर्व भव की भाभी जो इस भव में श्रृंगालिनी हुई को अपने देवर के प्रति बैर का स्मरण हो गया। श्रृंगालिनी ने सुकुमाल मुनि पर क्रोधित होते हुए अपने तीन बच्चों के साथ उनके शरीर का भक्षण शुरू कर दिया। पूर्व बैर के कारण श्रृंगालिनी ने उन्हें तीन दिन तक खाया, किन्तु सुकुमाल मुनि शिला के समान धीर बने रहे। शान्त परिणामी होकर तीसरे दिन सुकुमाल मुनि शरीर छोड़कर अच्युत स्वर्ग में महर्द्धिक देव हुए। इस पाप के फल से श्रृंगालिनी मरकर कुगति में गई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

38. राजा श्रेयांस द्वारा ऋषभदेव को प्रथम आहार-दान का दृश्य

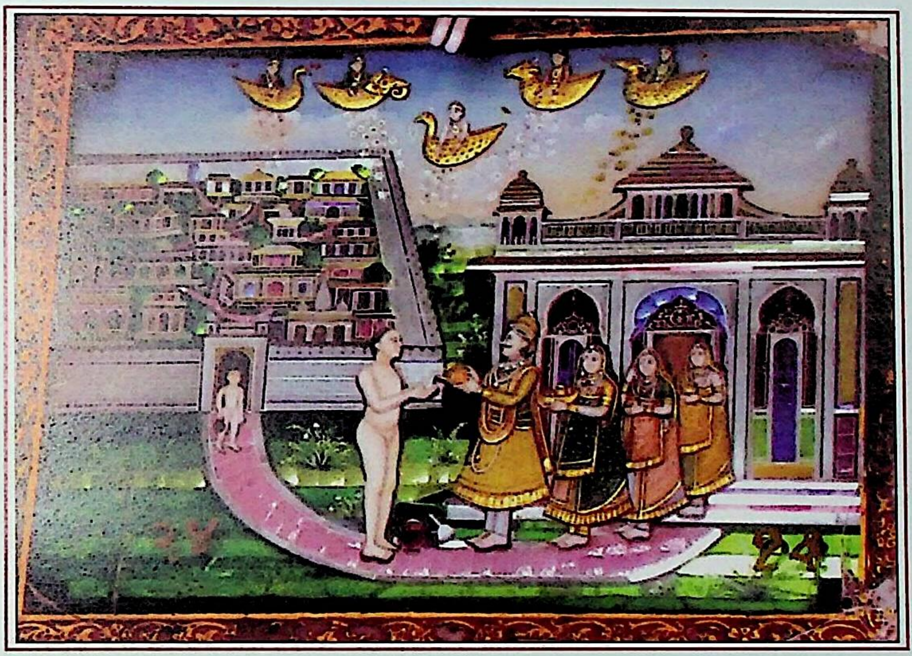

इस चित्र में हस्तिनापुर के महाराज श्रेयांस को हस्तिनापुर में वैशाख शुक्ल तृतीया के दिन भगवान् ऋषभदेव को सर्वप्रथम आहार–दान करते हुए चित्रांकित किया गया है। तभी से जैन धर्म में **अक्षय तृतीया** पर्व का प्रचलन आरंभ हुआ।

39. क्रोध का दुष्परिणाम

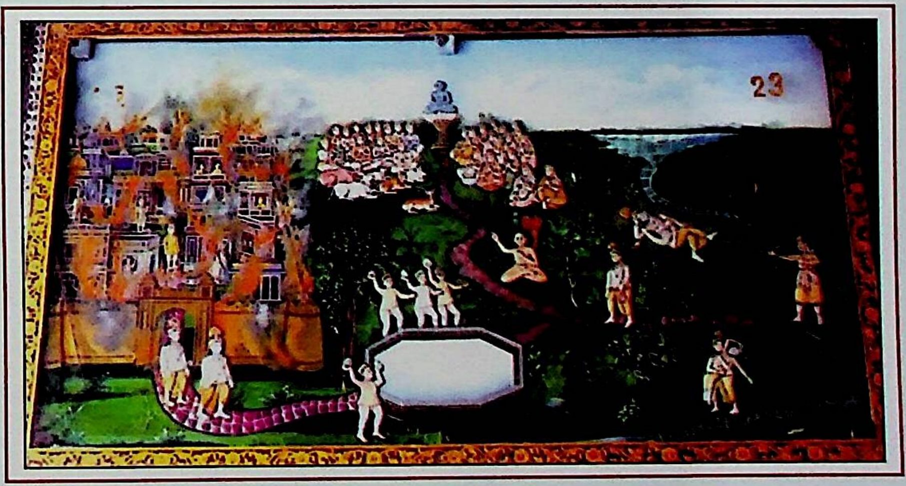

इस चित्र में द्वीपायन मुनि के क्रोध के दुष्परिणाम को इस कथानुसार दिखाया गया है – द्वारावती नगरी में बलभद्र और वासुदेव (श्रीकृष्ण) दो राजा थे। गिरनार पर अरिष्टनेमि के समवशरण में बलभद्र द्वारा प्रभु से पूछने पर कि कितने काल तक यह विभूति रहेगी, प्रभु ने बताया कि 12 वर्ष तक। अनन्तर मद्य (शराब) से यादवों का नाश हो जायेगा। तुम्हारे मामा द्वीपायन की कोपाग्नि से द्वारावती का दाह होगा। तुम्हारे छुरे से जरत्कुमार के हाथ वासुदेव का मरण होगा। यह सुनकर बलभद्र ने राज्य की सम्पूर्ण मद्य को गिरनार पर्वत की गुफा में फिकवा दिया और मद्य पर कड़ा प्रतिबन्ध लगा दिया। अपनी छुरी समुद्र में फैंक दी, जिसे मत्स्य ने ग्रहण कर लिया। बाद में जरत्कुमार ने उस छुरी को प्राप्त कर बाण के अग्रभाग में लगा लिया। 12 वर्ष बीत जाने पर मामा द्वीपायन मुनि होकर उष्ट्रग्रीव पर्वत पर योग से स्थित हो गए। उसी दिन शम्बुकुमार आदि क्रीड़ा के लिए उसी पर्वत पर गए। प्यास में मद्य का जल पीकर उन्मत्त होकर उन्होंने द्वीपायन मुनि को पत्थरों से चूर कर दिया। द्वीपायन मुनि की कोपाग्नि से द्वारावती जलकर नष्ट हो गई। बलभद्र और वासुदेव ने मुनि से क्षमा कराई। द्वीपायन ने दो अंगुली दिखाई। बलभद्र और वासुदेव को छोड़कर सब जल गये। जंगल में जरत्कुमार ने उसी बाण से विश्राम कर रहे वासुदेव को मार डाला। बलभद्र उनकी मृत देह को अपने कन्धे पर वहन कर घूमते रहे। देवों द्वारा सम्बोधित होने पर श्रीकृष्ण का अन्तिम संस्कार कर बलभद्र तुगींगिरि पर तप कर ब्रह्म स्वर्ग में देव हुए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

40. त्रिलोक का दृश्य

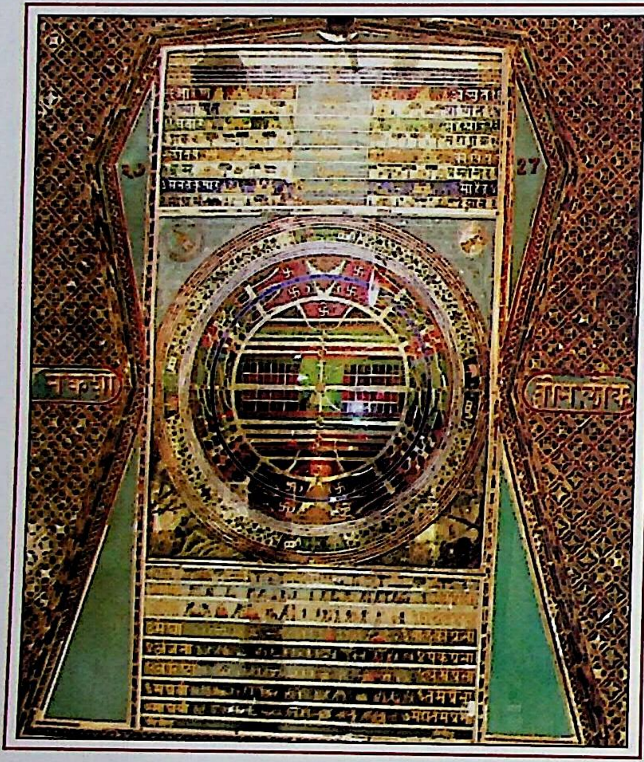

इस चित्र में जैन मान्यतानुसार तीनों लोकों का स्वरूप दिखलाया गया है। इस पुरुषाकार आकृति के मध्य भाग में मध्यलोक (मनुष्य), निचले भाग में अधोलोक (नरक) और सबसे ऊपर के भाग में ऊर्ध्वलोक (स्वर्ग) है।

41. नन्दीश्वर द्वीप की रचना

इस चित्र में जैन मान्यतानुसार नन्दीश्वर द्वीप की रचना दिखलाई गई है। नन्दीश्वर द्वीप में 52 जिनालय विराजमान हैं, जो शाश्वत हैं। इन 52 जिनालयों को 'अकृत्रिम चैत्यालय' कहा जाता है। इस चित्र पर मध्य भाग में "नन्दीश्वर द्वीप की रचना" लिखा हुआ है। चित्र के ऊपर "प्रत्येक दिशा में 1 अंजनगिरि 4 दधिमुख 8 रतिकर 13 लिखा हुआ हैं। चित्र के नीचे

''कातिक फागुन अषाढ़ के......आठ दिन मांहि,
नन्दीसुर सुर जात हैं -हम पूजैं इस ठाहिं''
अंकित है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

42. तपरत सुकुमाल मुनि

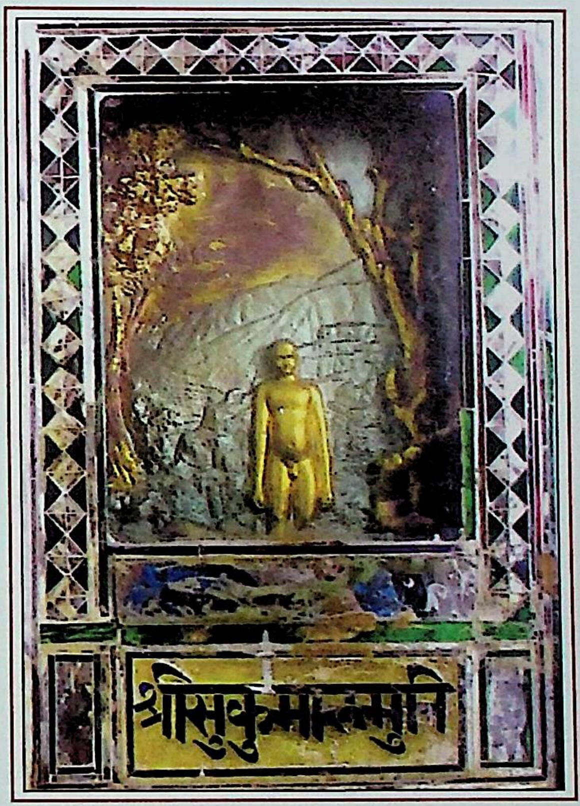

इस चित्र में सुकुमाल मुनि को घोर जंगल में तपस्यारत चित्रित किया गया है।

43. चौबीस तीर्थंकरों के नामांकन

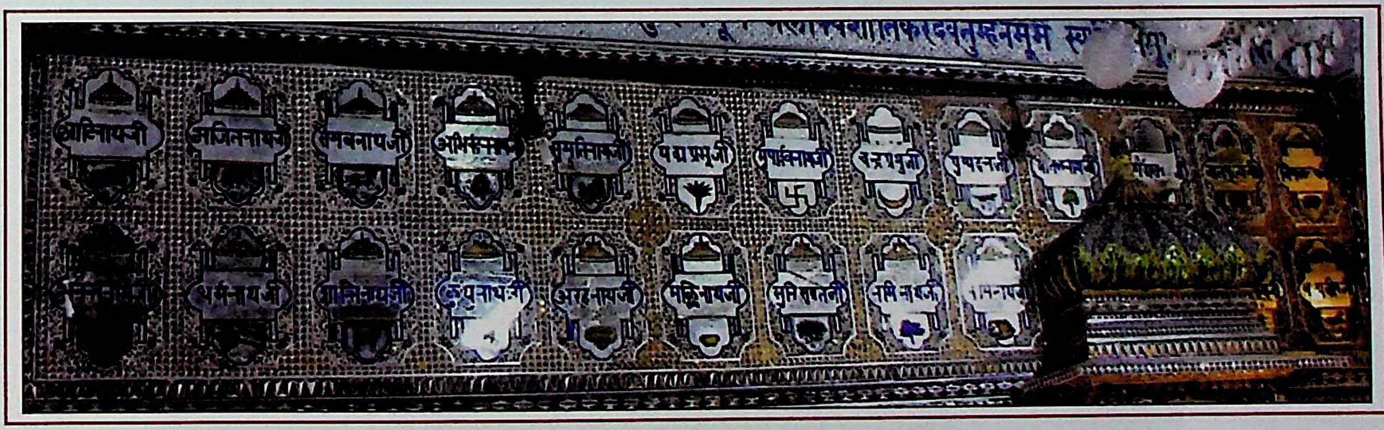

इस चित्र में ऊपर व नीचे दो कतारों में बने 12–12 खानों में जड़ित कांचों पर चौबीस तीर्थंकरों में से प्रत्येक खाने में एक–एक तीर्थंकर का नाम लिखा हुआ है एवं उनके लांछन भी चित्रित किए गये हैं। आदिनाथजी, अजितनाथजी, संभवनाथजी, अभिनन्दननाथजी, सुमतिनाथजी, पद्मप्रभुजी, सुपार्श्वनाथजी, चन्द्रप्रभुजी, पुष्पदन्तजी, शीतलनाथजी, श्रेयांसनाथजी, वासुपूज्यनाथजी, विमलनाथजी, अनन्तनाथजी, धर्मनाथजी, शांतिनाथजी, कुंथुनाथजी, अरहनाथजी, मल्लिनाथजी, मुनिसुव्रतनाथजी, नमिनाथजी, नेमिनाथजी, पार्श्वनाथजी, महावीरजी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

44. श्री तारंगाजी का दृश्य

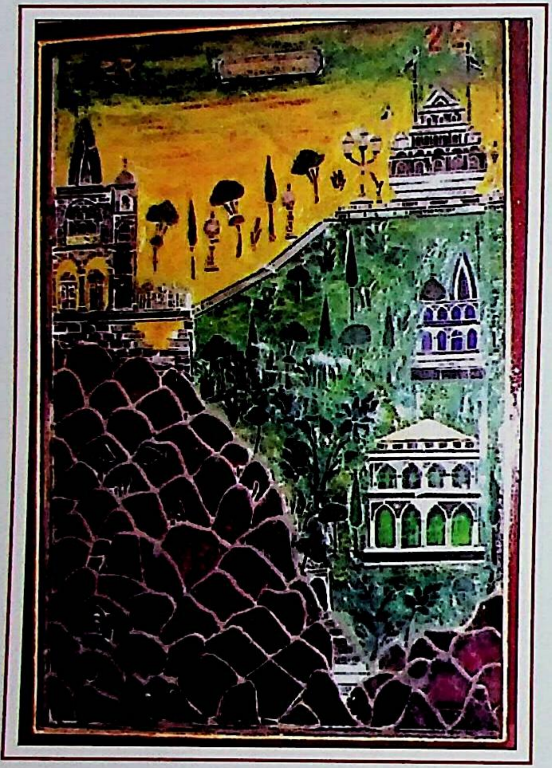

इस चित्र में गुजरात के प्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र तारंगाजी (प्राचीन तारापुर) का मनोहारी दृश्य चित्रित किया गया है। गुजरात राज्य के मेहसाणा जिले की सतलासणा तहसील से 8 कि. मी. और मेहसाणा से लगभग 80 कि. मी. की दूरी पर स्थित तारंगाजी में पहाड़ एवं तलहटी दोनों जगहों पर जिन मन्दिर बने हुए हैं। इनमें कोटिशिला, सिद्धशिला सहित 18 जैन मन्दिर मुख्य हैं। इस क्षेत्र से सागरदत्त, वरदत्त, वराग आदि साढ़े तीन करोड़ मुनिराज मोक्ष को प्राप्त हुए थे।

45. श्री मांगीतुंगीजी का दृश्य

यह चित्र सिद्धक्षेत्र श्री मांगीतुंगीजी का है। मांगीतुंगीजी महाराष्ट्र राज्य में मनमाड़ नगर से लगभग 100 कि. मी., मालेगाँव से लगभग 60 कि. मी. और नासिक से लगभग 125 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ लगभग 4360 फुट की ऊँचाई की दो पहाड़ियों पर कुल 10 जिनालय बने हुए हैं। इन पवित्र पहाड़ियों से शुद्ध–बुद्ध महामुनीश्वर मोक्ष को प्राप्त हुए थे। सती सीता तप के उपरान्त यहीं से 16वें स्वर्ग में इन्द्र हुई थीं। भगवान रामचन्द्रजी, 28 हजार विद्याधर मुनि, 46 हजार आर्यिका माताजी, सुग्रीव, सुडील आदि यहाँ से मोक्ष को प्राप्त हुए थे। रामचन्द्र के सेनापति क्रतांतवक्र ने भी यहीं तप किया था। भगवान् श्री कृष्ण का दाह–संस्कार भी यहीं हुआ था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

46. श्री कुंथलगिरिजी का दृश्य

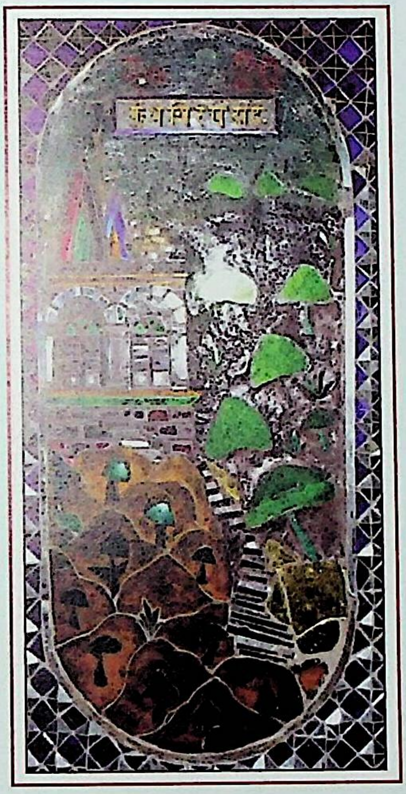

इस चित्र में अतिशय क्षेत्र कुन्थलगिरिजी का मनोज्ञ दृश्य रूपायित किया गया है। अतिशय क्षेत्र कुन्थलगिरि महाराष्ट्र राज्य के उस्मानाबाद जिले में अवस्थित है।

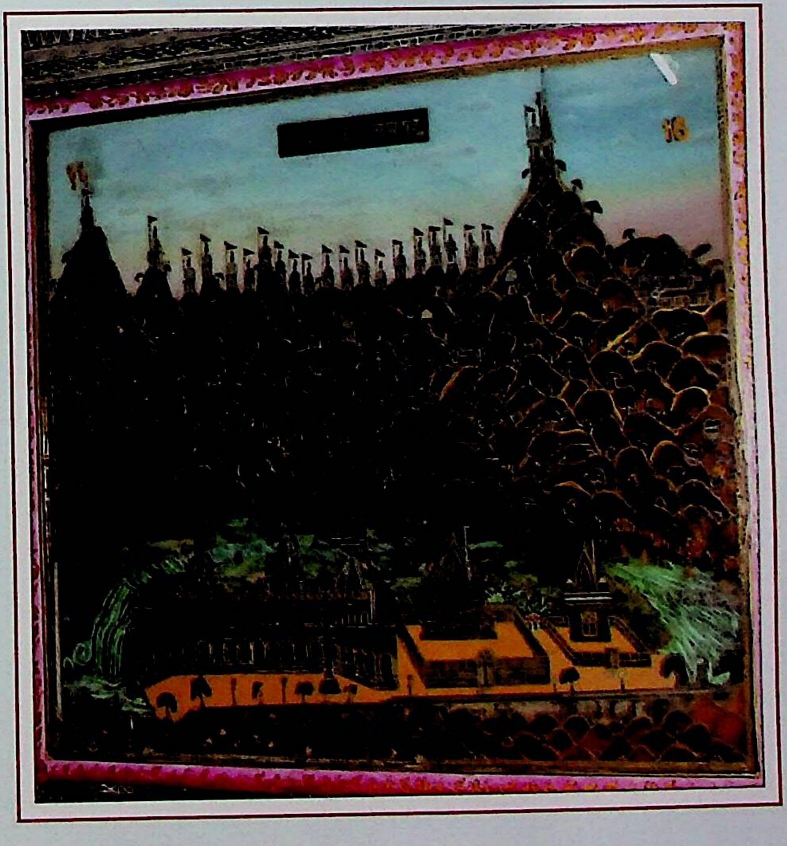

47. श्री सम्मेदशिखरजी का दृश्य

इस चित्र में जैन धर्मावलम्बियों के सर्वप्रसिद्ध जैन तीर्थ सम्मेदशिखरजी पर्वतराज एवं तलहटी में स्थित मंदिरों का विहंगम एवं मनोहारी दृश्य चित्रित किया गया है। सम्मेदशिखरजी झारखण्ड राज्य के गिरिडीह जिले के मधुवन ग्राम में गिरिडीह से लगभग 32 कि. मी. और ईसरी से लगभग 23 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। इस पर्वतराज से 20 तीर्थंकर निर्वाण को प्राप्त हुए थे। यह परम पवित्र पावन निर्वाणस्थली के रूप में जगत् विख्यात् है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

48. विमानवासी देवों द्वारा जिनेन्द्र भगवान् की पूजा से सौधर्म स्वर्ग में इन्द्र पद व सुख

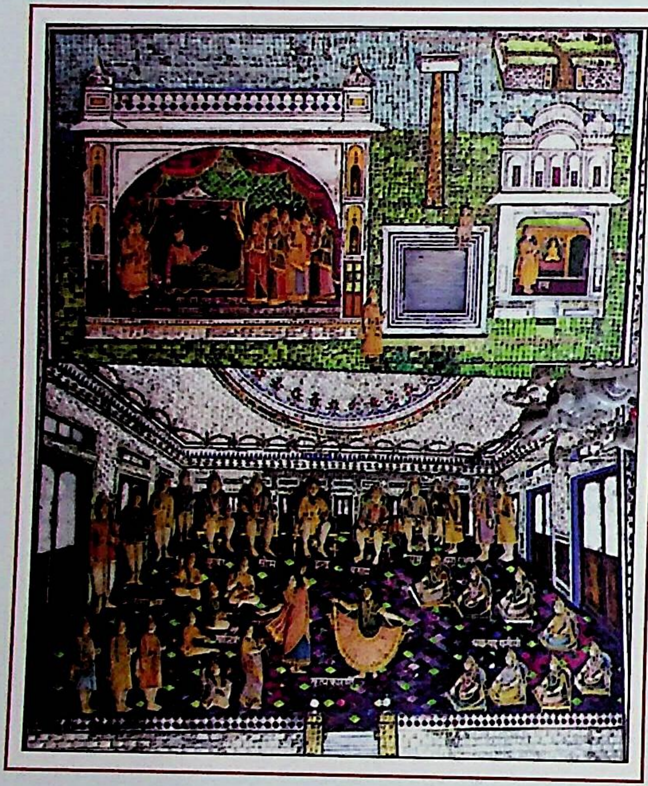

इस चित्र में दिखाया गया है कि कषायों की मन्दता, सराग, संयम, तप एवं जिन–पूजा, दान आदि शुभ भावों द्वारा समाधिमरण के फल से सौधर्म स्वर्ग में इन्द्र पद की प्राप्ति होती है और वहाँ के सुखों का भोग करते हैं। इस चित्र के एक भाग में सौधर्म इन्द्र का शयन कक्ष, आठ पट्टरानियाँ एवं आज्ञाकारी देवों का वैभव दिखाया गया है। साथ ही इन्द्र को अमृत बावड़ी में स्नानोपरान्त जिन मंदिर में दर्शन करते दिखाया गया है। सबसे ऊपर मानस्तम्भ बना हुआ है।

इस चित्र के दूसरे भाग में इन्द्र की नृत्य सभा को चित्रित किया गया है। इस सभा में इन्द्र सिंहासन पर विराजमान हैं और उनके दायीं ओर कुबेर व सोम तथा बायीं ओर वरुण व यम अपने–अपने आसन पर बैठे हुए हैं। नीचे आठों पट्टरानियाँ बैठी हुई हैं। ये सभी नृत्यागनाओं के नृत्य का आनंद ले रहे हैं।

49. ज्योतिर्लोक की रचना

इस चित्र में जैन शास्त्रानुसार ज्योतिर्लोक की रचना और उसके अन्तर्गत सूर्य, चन्द्र, तारों आदि की स्थिति दिखाई गई है। इस चित्र के नीचे लिखा हुआ है कि जम्बू वृक्ष के ऊपर पृथ्वी से 790 योजन ऊँचे तारे और 800 योजन पर सूर्य विमान, 880 योजन पर चन्द्रमा है। जम्बूद्वीप में दो सूर्य और दो चन्द्रमा हैं। एक चन्द्रमा का परिवार 88 गृह, 28 नक्षत्र, 66975 कोड़ा कोड़ी तारे का हैं। अन्य द्वीप और समुद्र में भी ज्योतिषी हैं।

इस चित्र में सबसे ऊपर मध्य लोक को दिखाया गया है। इस मध्य लोक में आठ प्रकार के व्यन्तर देव – किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, भूत व पिशाच निवास एवं विचरण करते हैं और इनका स्वभाव कौतुहलपूर्ण होता है।

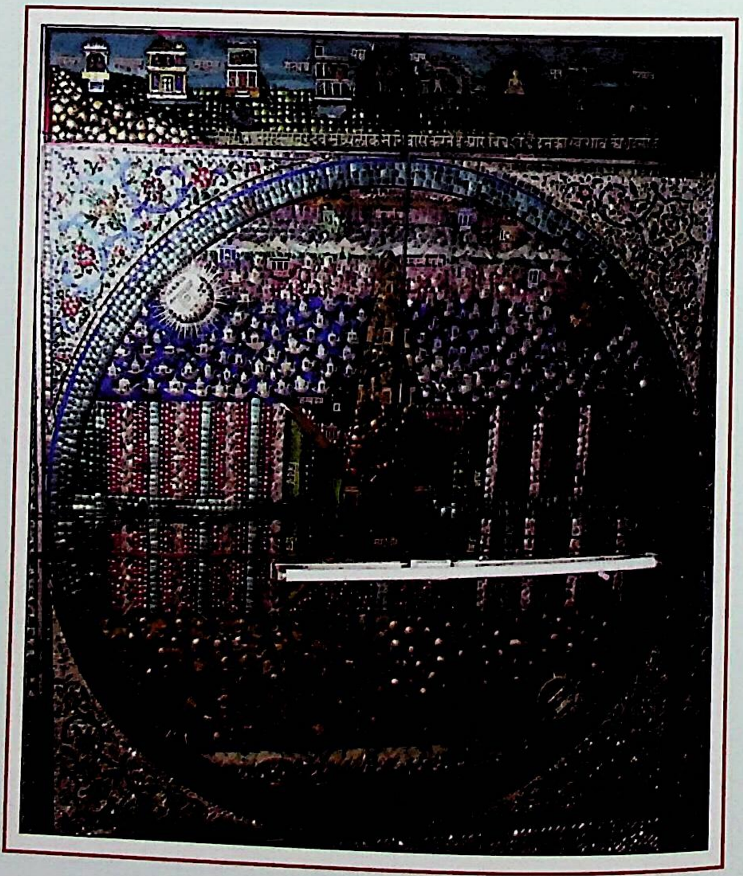

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

50. इन्द्रादि उत्सवरत होकर भगवान् को पाण्डुक शिला की ओर ले जाते हुए

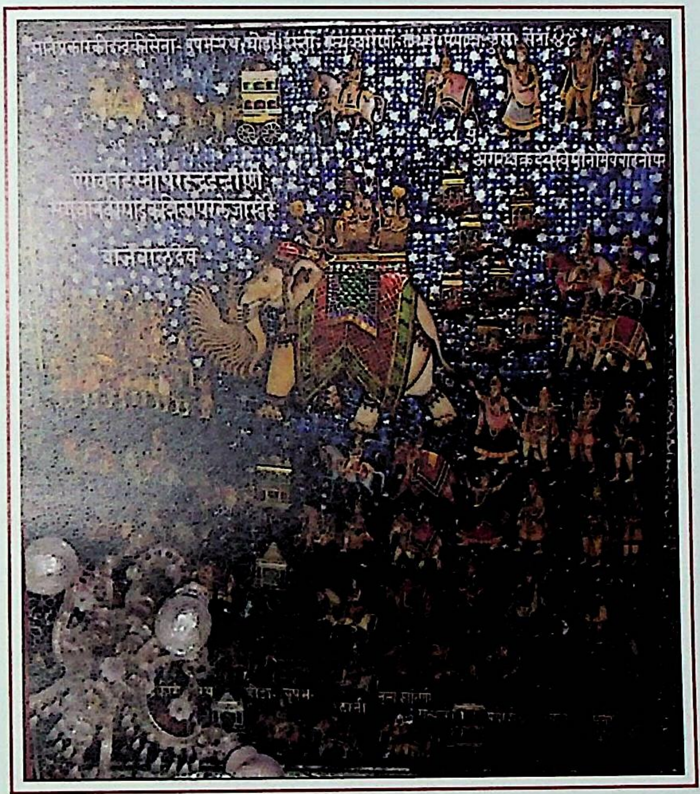

इस चित्र में सौधर्म इन्द्र एवं इन्द्राणी ऐरावत हाथी पर सवार होकर भगवान् को उनके जन्म के उपरान्त पाण्डुक शिला की ओर ले जा रहे हैं, जहाँ क्षीरसागर के जल से भरे 1008 कलशों की जलधारा से भगवान् बालक का अभिषेक होता है। साथ में इन्द्र की सात प्रकार की सेनाएँ– वृषभ, रथ, घोड़ा, हाथी, नृत्यकारिणी, गन्धर्व व प्यादा; विमानों में सवार होकर अंगरक्षक देव आदि बहुविध तरीकों से उत्सव मनाते हुए पाण्डुक शिला की ओर बढ़ रहे हैं। जैन परम्परा में इन्द्र को जिनों का प्रधान सेवक स्वीकार किया गया है। जिनों के कल्याणकों के अवसरों पर इन्द्र का शीघ्रता से पृथ्वी पर आगमन होता है।

51. मानस्तम्भ

इस चित्र में एक विशाल मानस्तम्भ और उसके शीर्ष पर जिनालय को शोभित दिखाया गया है। इस मानस्तम्भ के मध्य भाग में एक पंक्ति में "मान स्थंभ" लिखा हुआ है। जैन परम्परा के अनुसार मानस्तम्भ को इन्द्र द्वारा तीर्थंकर के समवशरण में प्रथम प्राचीर पर स्थापित किया जाता है। इन मानस्तम्भों के शिखर भाग पर चारों दिशाओं में अभिमुखी जिन प्रतिमाएँ प्रतिष्ठापित होती हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

52. मुनि यशोधर का उपसर्ग सहने पर भी शान्त भाव

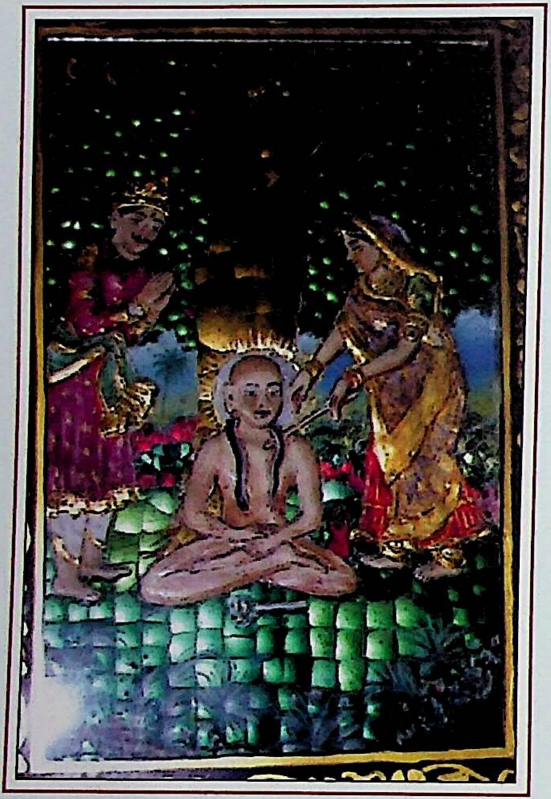

इस चित्र में मुनि यशोधर पर उपसर्गकर्ता राजा श्रेणिक को अपनी पत्नी चेलना सहित उनसे क्षमायाचना करते हुए दिखाया गया है। राजा श्रेणिक ने एक बार मुनि यशोधर को जंगल में ध्यानमग्न देखकर उन पर 500 शिकारी कुत्ते छुड़वा दिये, किन्तु मुनि महाराज की तपस्या के प्रभाव से वे कुत्ते मुनि यशोधर के चरणों में शान्तभाव से बैठ गये। इसके बाद भी राजा श्रेणिक मुनि महाराज के गले में मृत सर्प डालकर चले गये। महल में पहुँचकर जब राजा श्रेणिक ने गर्वपूर्वक रानी चेलना को अपने कृत्यों के बारे में बताया तो रानी चेलना राजा को साथ लेकर तुरन्त मुनि महाराज के समक्ष पहुँची और उनके गले में पड़े हुए सर्प को हटाकर मुनि महाराज का उपसर्ग दूर किया। प्रस्तुत चित्र में इसी घटना का अंकन किया गया है। ध्यान समाप्त होने पर मुनि यशोधर ने शान्त भाव से राजा–रानी को देखा और धर्मवृद्धि का आशीर्वाद दिया।

53. अतिशय क्षेत्र श्री ऋषभदेव केशरियाजी का दृश्य

यह चित्र अतिशय क्षेत्र ऋषभदेव (केशरियाजी) का है। ऋषभदेव राजस्थान राज्य के उदयपुर जिले में उदयपुर से लगभग 35 कि. मी. और डूंगरपुर से लगभग 40 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ परकोटे से घिरे एक विशाल मंदिर के मुख्य गर्भगृह में मूलनायक तीर्थंकर भगवान् ऋषभनाथ की श्याम वर्ण के पाषाण से निर्मित लगभग 7 फुट ऊँची एक मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान है। इस प्रतिमा के अलावा भी इस मन्दिर में अनेक जैन प्रतिमाएँ विराजमान हैं और उनमें से अधिकांश पर महत्त्वपूर्ण अभिलेख उत्कीर्ण हैं। इस मंदिर के साथ अतिशय की अनेक कथाएँ जुड़ी हुई हैं। मनोती पूरी होने पर यहाँ लोग केशर चढ़ाते हैं। इसलिए इस क्षेत्र का नाम 'केशरियाजी' पड़ गया है। इस चित्र में सबसे ऊपर तीन पंक्तियों में अधोलिखित लेख अंकित है –

श्री रिषभदेव जी

अतिशय क्षेत्र

धूलेव - मेवाड़

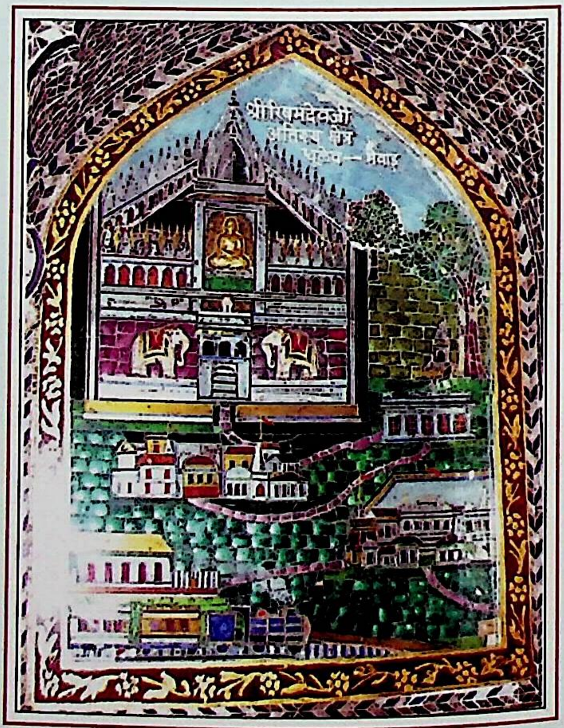

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

54. अतिशय क्षेत्र श्रवणबेलगोलाजी का दृश्य

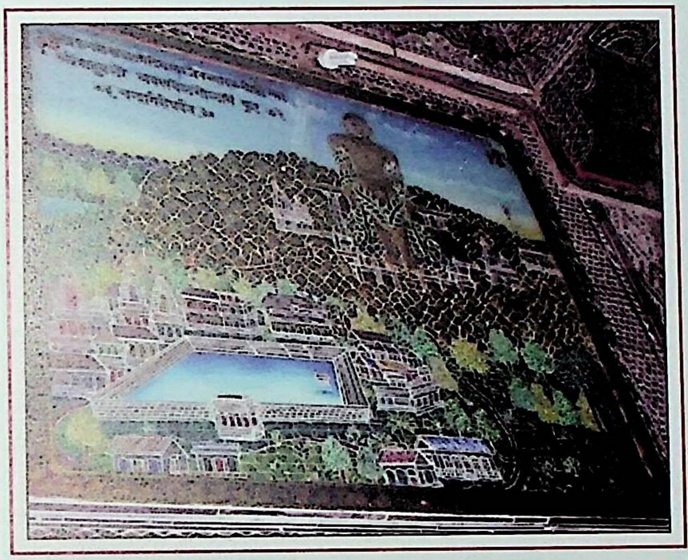

इस चित्र में विश्वविख्यात् जैन तीर्थ श्रवणबेलगोलाजी का विहंगम् दृश्य चित्रित किया गया है। जैन कला के अपूर्व केन्द्र के रूप में गणनीय अतिशय क्षेत्र श्रवणबेलगोला दक्षिण भारत में कर्नाटक राज्य के हासन जिले में बंगलुरू (बैंगलोर) से 146 कि. मी. और मैसूर से लगभग 85 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। यह तीर्थ ग्रेनाइट पाषाण से बनी 58 फीट ऊँची स्वतन्त्र रूप से खड़ी हुई भगवान् बाहुबली की विशालकाय प्रतिमा के लिए जगप्रसिद्ध है। इस मूर्ति का निर्माण जैन महामंत्री चामुण्डराय ने करवाया था। श्रवणबेलगोला में चन्द्रगिरि पर्वत पर ही सम्राट चन्द्रगुप्त ने अपनी मुनि अवस्था में तपश्चर्या की थी। प्रत्येक 12 वर्ष में यहाँ महामस्तकाभिषेक समारोह सम्पन्न होता है। इस चित्र में ऊपर के भाग में 3 पंक्तियों में अधोलिखित प्रकार से लेख अंकित है –

दक्षिण कर्नाटक देश में दिगम्बर जैन स्मारक गोमटेश्वर
श्री बाहुबली श्रवणबेलगोला में फुट ७२ (?) चन्द्रगिरि पर्वत

55. सिद्धक्षेत्र चूलगिरि-बड़वानीजी का दृश्य

सिद्धक्षेत्र चूलगिरि–बड़वानीजी मध्यप्रदेश राज्य के बड़वानी जिला में बावनगजा ग्राम में स्थित है। यह सिद्धक्षेत्र इन्दौर से लगभग 165 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ पहाड़ में 84 फुट अथवा 52 गज (?) ऊँची खड्गासन मुद्रा में तीर्थंकर ऋषभनाथ की एक विशालकाय शैलोत्कीर्ण प्रतिमा बनी हुई हैं। 52 गज की होने के कारण इसे "बावनगजा" कहा जाता है। यहाँ पर्वत पर स्थित 11 मन्दिरों के अलावा तलहटी में 19 मन्दिर एवं मानस्तम्भ बने हुए हैं। मान्यता है कि इस क्षेत्र से साढ़े पाँच करोड़ मुनिराज मोक्ष को प्राप्त हुए थे। यहाँ प्रत्येक 12 वर्ष में एक बार महामस्तकाभिषेक समारोह आयोजित होता है। इस चित्र में चित्रित पर्वत के दायीं ओर तीन पंक्तियों में इस प्रकार लिखा हुआ है –

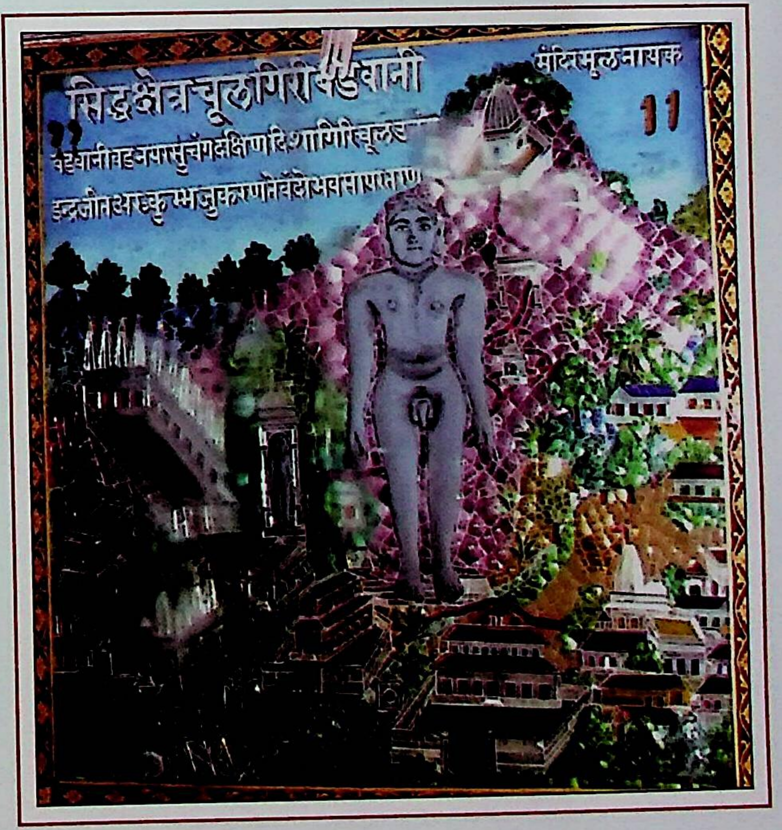

सिद्धक्षेत्र चूलगिरी बडवानी
वडवानी वड नयर सुचंग दक्षिण दिशा गिरि चूल उतुंग
इन्द्रजीत अरु कुम्भजु करण ते वंदो भव सायर तरण

पर्वत के बायीं ओर एक पंक्ति में "मंदिर मूलनायक" लिखा हुआ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

56. सिद्धक्षेत्र श्री सोनागिरिजी का दृश्य

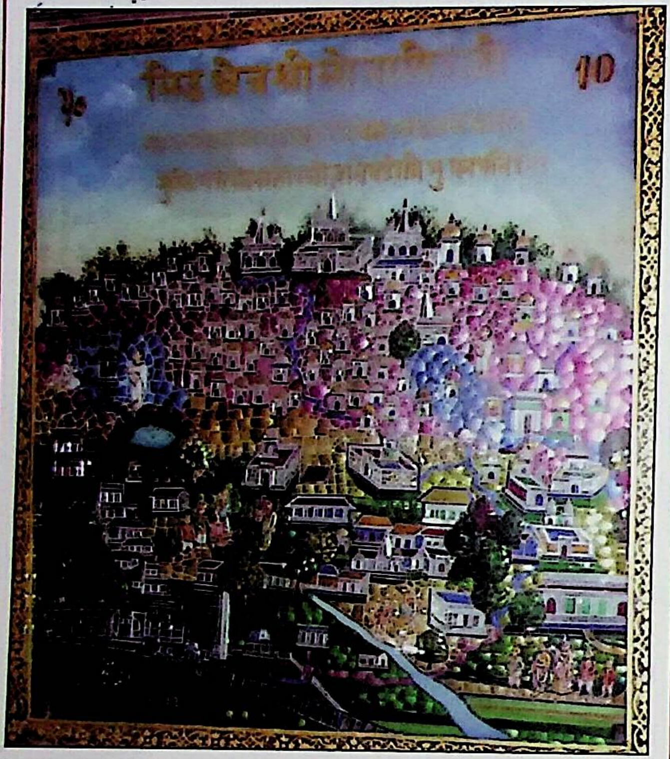

इस चित्र में बुन्देखण्ड के सर्वप्रमुख जैन तीर्थ सोनागिरजी का विहंगम दृश्य चित्रित किया गया है। सोनागिर मध्यप्रदेश राज्य के दतिया जिले में जिला मुख्यालय से लगभग 15 कि. मी. और ग्वालियर से लगभग 75 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। यह सिद्धक्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध है। मान्यता है कि यहाँ पर 8वें तीर्थंकर चन्द्रप्रभ भगवान् का समवशरण आया था। इस पर्वत से नंग व अनंग कुमार सहित साढ़े पाँच करोड़ मुनिराज मोक्ष को प्राप्त हुए थे। सोनागिर (प्राचीन स्वर्णगिरि) में एक पर्वत पर प्राचीन काल के 77 जिनालय एवं हाल ही निर्मित कुछ और जिनालय बने हुए हैं। पर्वत की तलहटी में सिनावल ग्राम बसा हुआ है। इस ग्राम में 27 जैन मंदिर और कई धर्मशालाएँ बनी हुई हैं।

इस चित्र में सबसे ऊपर के भाग में तीन पंक्तियों में लेख लिखा हुआ है। इस अभिलेख की निचली दो पंक्तियाँ अब मिट गई हैं। इस अभिलेख का पाठ अधोलिखित प्रकार है –

सिद्धक्षेत्र श्री सोनागिरजी

नग अनंग कुमार सुजान...........अर्घ प्रमान

मुक्ति गये सोनागिर सीश ते वंदा त्रिभुवनपति ईश।

57. सिद्धक्षेत्र श्री पावागढ़जी का दृश्य

इस चित्र में सिद्धक्षेत्र पावागढ़ का विहंगम् दृश्य दिखाया गया है। पावागढ़ (प्राचीन पावापुरी) गुजरात राज्य में पंचमहल जिले की होलोल तहसील में स्थित है। पावागढ़ बड़ोदरा से लगभग 50 कि. मी. और गोधरा से लगभग 48 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ पहाड़ पर 10 तथा तलहटी में 3 जिनालय बने हुए हैं। मान्यता है कि यहाँ से रामचन्द्रजी के दो पुत्रों अनंग लवण (लव) और मंदना कुश (कुश) ने निर्वाण प्राप्त किया था। लाट देश के पाँच करोड़ नरेशों ने भी यही से मुक्ति प्राप्त की थी। इस चित्र में सबसे ऊपर लिखी एक पंक्ति में **''श्री पावागढ सिद्धक्षेत्र''** अंकित है।

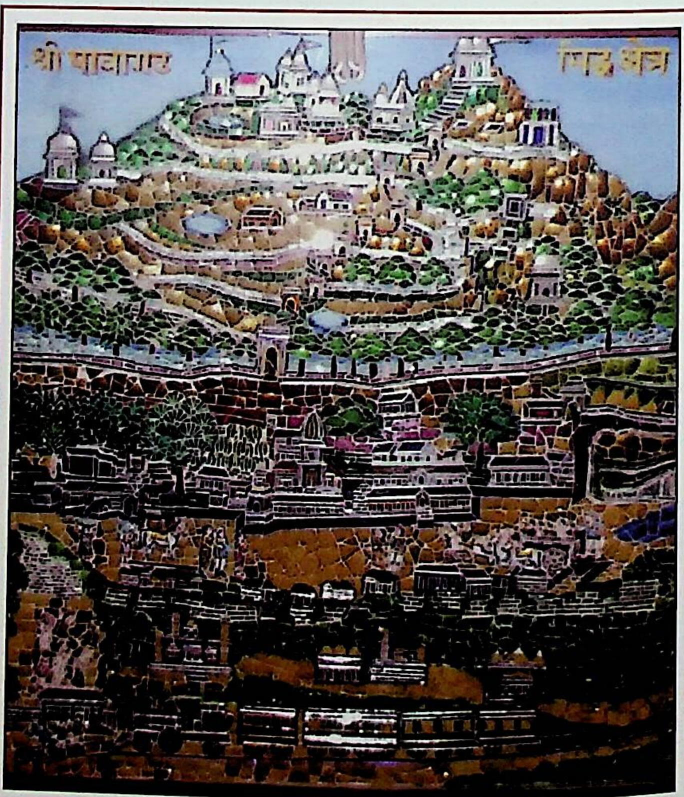

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

58. सिद्धक्षेत्र श्री मुक्तागिरि का दृश्य

इस चित्र में सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि का विहंगम दृश्य चित्रित किया गया है। मुक्तागिरि मध्यप्रदेश राज्य के बैतूल जिले की भैंसदेही तहसील में बैतूल से 50 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। मुक्तागिरि में सतपुड़ा पर्वत के नयनाभिराम सुरम्य पर्वतश्रृंखला के मध्य में लगभग 250 फुट की ऊँचाई से गिरते जलप्रपात के आसपास लगभग 16वीं शती ई. के 52 जैन मन्दिर बने हुए हैं। इनमें पार्श्वनाथ मन्दिर शिल्पकला का अनुपम उदाहरण है। पर्वत की तलहटी में भी 2 जैन मंदिर बने हुए हैं। माना जाता है कि 10वें तीर्थंकर शीतलनाथजी के यहाँ आगमन पर मोतियों की वर्षा हुई थी, जिस कारण इस क्षेत्र का नाम मुक्तागिरि पड़ा। पर्वत पर स्थित मंदिर क्र. 10 'मेंढागिरि' के नाम से जाना जाता है। इस चित्र में सबसे ऊपर तीन पंक्तियों में लिखा लेख अधोलिखित प्रकार है – **मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र**

अचलापुर की दिश ईशान तहां मेंढ्रगिरि नाम प्रधान

साडे तीन कोडि मुनिराय तिनके चरण नमूं चित लाय

59. सिद्धक्षेत्र श्री सिद्धवरकूटजी का दृश्य

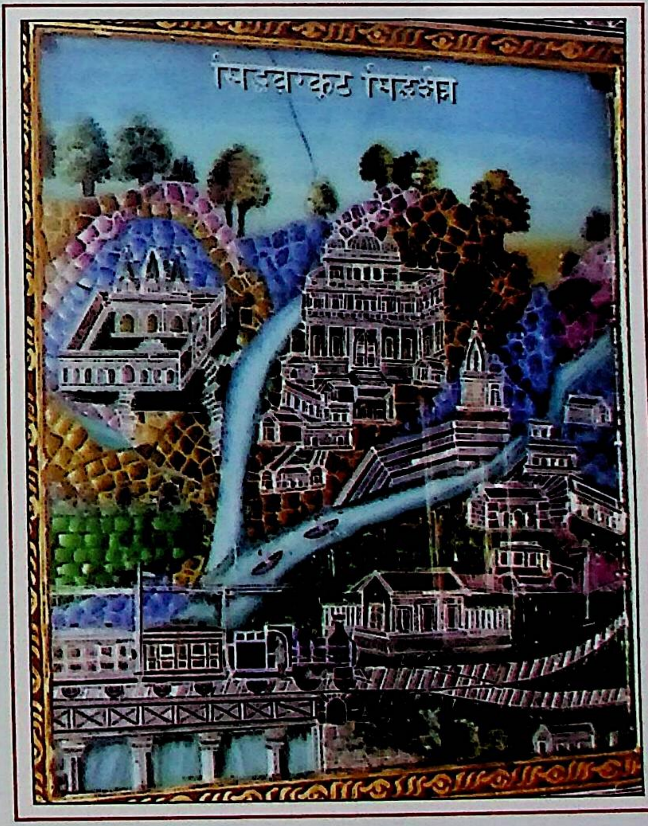

यह चित्र सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट का मनोहारी दृश्य प्रस्तुत करता है। मध्यप्रदेश राज्य के खण्डवा जिले में बड़वाह से लगभग 18 कि. मी. और इन्दौर से लगभग 70 कि. मी. दूरी पर स्थित सिद्धवरकूट अपने नाम के अनुरूप सिद्धक्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध है। सिद्धवरकूट में नर्मदा एवं कावेरी नदियों के संगमस्थल पर सघन वन्य क्षेत्र में पहाड़ पर कुल 13 जिन मन्दिर बने हुए हैं। इस क्षेत्र का उल्लेख निर्वाण काण्ड में मिलता है। कालान्तर में विलुप्त से हो चुके इस क्षेत्र की खोज एवं जीर्णोद्धार एक स्वप्न के पश्चात् संवत् 1935 में भट्टारक महेन्द्रकीर्ति द्वारा करवाया गया था। यहाँ से दो चक्रवर्ती, 10 कामदेव एवं साढ़े तीन करोड़ मुनि महाराज मोक्ष गये थे। इस चित्र में सबसे ऊपर के भाग में एक पंक्ति में **''सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र''** लिखा हुआ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

60. सिद्धक्षेत्र श्री शत्रुंजय पालीताणाजी का दृश्य

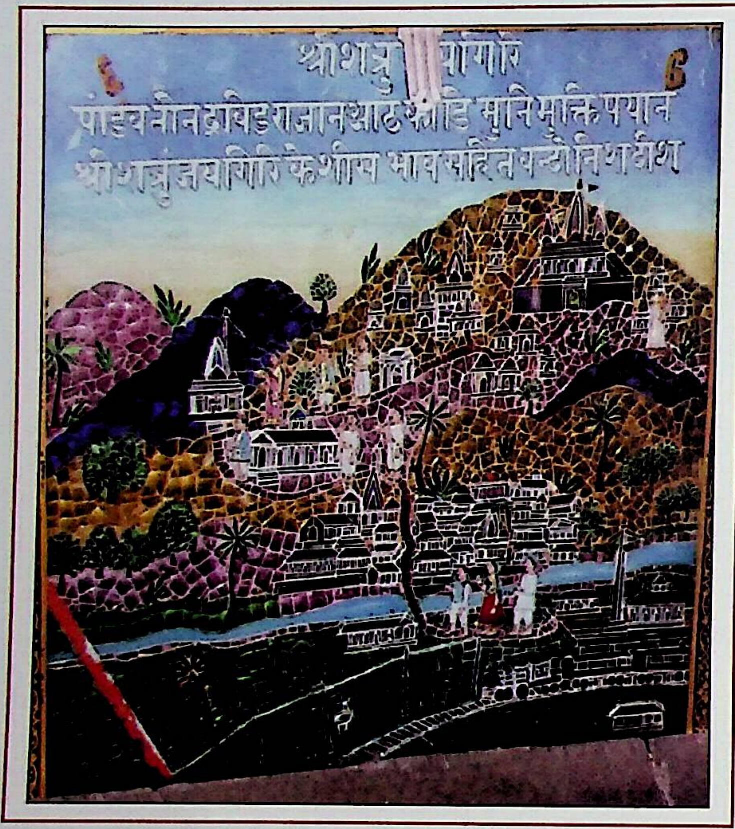

यह चित्र प्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र शत्रुंजयजी का नयनाभिराम दृश्य प्रस्तुत करता है। शत्रुंजय गुजराज राज्य के भावनगर जिले की पालीताणा तहसील व ग्राम में स्थित है। शत्रुंजय भावनगर से लगभग 55 कि. मी. और सोनगढ़ से लगभग 24 कि. मी. की दूरी पर अवस्थित है। शत्रुंजयजी में कुल दो दिगम्बर जैन मन्दिर बने हुए हैं। इनमें एक जैन मंदिर नगर के मध्य में बना हुआ है, जिसमें मुख्य वेदी पर भगवान् शान्तिनाथ की एक प्रतिमा विराजमान है। इस मन्दिर का सभामण्डप अत्यन्त सुन्दर है। सिद्धक्षेत्र के पीछे मान्यता है कि यहाँ से युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन – तीन पाण्डव तथा आठ करोड़ द्रविड़ राजा मुक्त हुए थे। इस क्षेत्र को पालीताणा भी कहते हैं। इस चित्र में सबसे ऊपर तीन पंक्तियों में से पहली पंक्ति में **''श्री शत्रुंजयगिरि''** लिखा हुआ है, शेष दो पंक्तियाँ अधोलिखित प्रकार हैं –

पांडव तीन द्रविड राजान आठ कोडि मुनि मुक्ति पयान
श्री शत्रुंजयगिरि के शीस भाव सहित वन्दो निश दीश

61. सिद्धक्षेत्र श्री गजपंथाजी का दृश्य

यह चित्र महाराष्ट्र के प्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र गजपंथाजी का विहंगम दृश्य प्रस्तुत करता है। गजपंथा नासिक से लगभग 6 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ एक अत्यन्त ऊँचे पहाड़ पर तीन गुहा मंदिर और दो नवनिर्मित मन्दिर बने हुए हैं। इनमें पार्श्वनाथ गुहा दर्शनीय है। यह एक प्राचीन एवं पौराणिक क्षेत्र है। प्राकृत भाषा में निर्वाण काण्ड की एक गाथा के अनुसार गजपंथ गिरि से सात बलभद्र और आठ करोड़ यादव राजा मुक्ति को प्राप्त हुए थे। इस चित्र में सबसे ऊपर तीन पंक्तियों में से पहली पंक्ति में **''सिद्धक्षेत्र गजपंथागिरि''** लिखा हुआ है। नीचे की दो पंक्तियाँ इस प्रकार हैं –

जेवल भद्र मुकति में गये आठ कौडि मुनि ओर हिं भये
श्रीगजपंथशिखर सुविशाल तिनके चरणनमूंतिहुं काल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

62. अतिशयक्षेत्र श्री बनेडया (बनेड़ियजी) का दृश्य

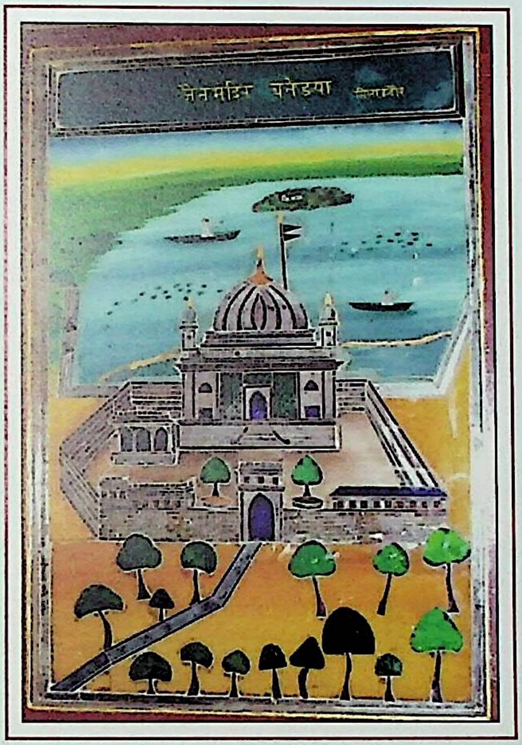

इस चित्र में प्रकृति के सुरम्य क्षेत्र के मध्य में अतिशय क्षेत्र बनेड़िया जी स्थित मन्दिर का दृश्य दिखाया गया है। बनेड़ियाजी मध्यप्रदेश राज्य के इन्दौर जिले की देपालपुर तहसील में इन्दौर से लगभग 45 कि. मी. और देपालपुर से लगभग 5 कि. मी. की दूरी पर अवस्थित है। बनेड़िया ग्राम में एक बहुत बड़े सरोवर के निकट एक जैन मन्दिर बना हुआ है, जिसमें मूलनायक के रूप में भगवान् अजितनाथ की मनोहारी प्रतिमा विराजमान है। इसके अतिरिक्त मंदिर की तीन देवरियों में सैकड़ों की संख्या में अन्य प्रतिमाएँ रखी हुई हैं। माना जाता है कि यह मन्दिर 800 वर्ष पूर्व देवों द्वारा स्थापित किया गया था अथवा उड़कर आया था। इस चित्र में सबसे ऊपर एक पंक्ति में **''जैन मंदिर बनेडिया जिला इन्दौर''** लिखा हुआ है।

5165

63. मुनि सुकौशलजी का व्याघ्रनी द्वारा भक्षण का दृश्य

आत्मध्यान में लीन मुनिराज के शरीर का व्याघ्रनी द्वारा पूर्वसंचित बैर के कारण भक्षण किया जा रहा है। किन्तु शरीर को आत्मा से भिन्न मानने वाले मुनिराज समता भाव से आत्म स्वरूप का चिंतन कर रहे है।

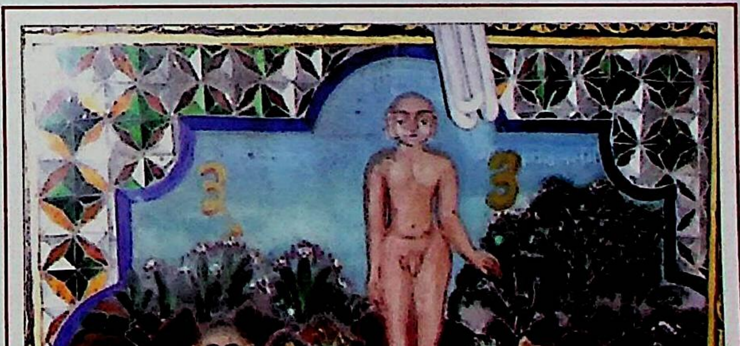

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

64. कांच मन्दिर का दृश्य

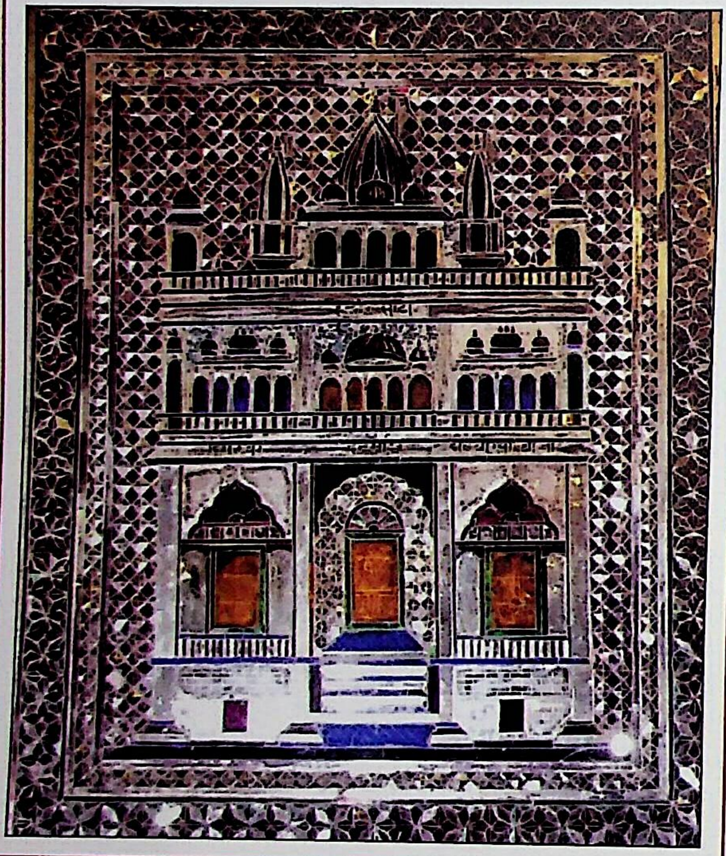

इस चित्र में प्रस्तुत पुस्तक में विवेचित कांच मन्दिर के बाहरी दृश्य को चित्रित किया गया है। इस चित्र में बने मन्दिर के मध्य भाग में ऊपर की ओर एक पंक्ति में 'इन्दौर सीटी' और नीचे की ओर भी एक पंक्ति में "दिगम्बर जैन मन्दिर दीतवारया बाजार" लिखा हुआ है।

65. मन्दिर का दृश्य

यह चित्र सर हुकमचंद्र मार्ग की ओर से मन्दिर भवन में प्रवेश करते ही बरामदे में पहुँचने पर एक आले में बना हुआ है। इस चित्र में जिनालयों को चित्रित किया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

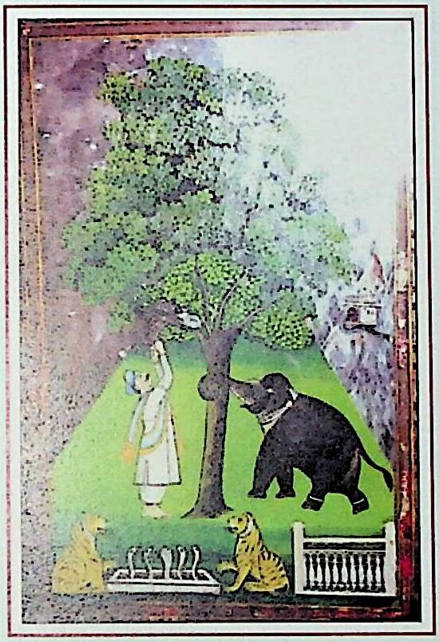

66. संसार वृक्ष का दृश्य

यह चित्र भूतल पर स्थित गर्भगृह के दायीं ओर के द्वार के निचले भाग में जड़े एक कांच के ऊपर बना हुआ है। इस चित्र में संसार वृक्ष के माध्यम से सांसारिक जीव की दुर्दशा को चित्रित किया गया है कि किस प्रकार शहद की एक बूंद के लोभ में व्यक्ति अपने प्राणों को संकट में डाल रहा है। इस चित्र की विस्तृत व्याख्या के लिए पूर्व में वर्णित चित्र क्र. 2 देखें।

67. षट् लेश्या का दृश्य

यह चित्र भूतल पर स्थित गर्भगृह के दायीं ओर के द्वार के निचले भाग में जड़े एक कांच के ऊपर बना हुआ है। इस चित्र में षट् लेश्याओं के माध्यम से व्यक्ति के स्वभावों की विविधता को चित्रांकित किया गया है। वृक्ष से आम्रफल प्राप्त करने के लिए कोई सम्पूर्ण वृक्ष को ही उखाड़ना चाहता है, तो कुछ तने को काटना चाहते हैं, तो कुछ शाखा को तोड़ना चाहते हैं, कुछ टहनी को तोड़कर फल प्राप्त करना चाहते हैं, कुछ शाखा पर बैठकर ही फल प्राप्त करना चाहता हैं, तो कुछ जमीन पर गिरे हुए फलों को ही प्राप्त कर संतुष्ट हो जाते हैं। चित्र क्रमांक – 3 में भी यही भाव है।

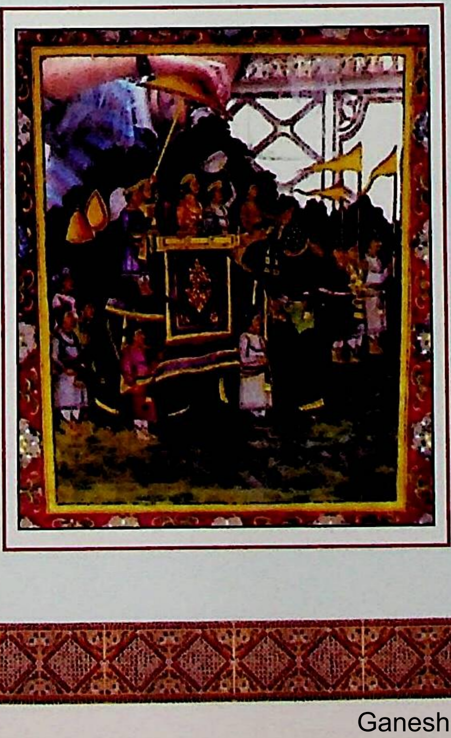

68. गजरथ महोत्सव का दृश्य

यह चित्र भूतल पर स्थित गर्भगृह के मध्य भाग में स्थित द्वार के निचले भाग में जड़े एक कांच के ऊपर बना हुआ है। इस चित्र में गजरथ प्रतिष्ठा महोत्सव के राजसी जुलूस को निकलते हुए चित्रित किया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

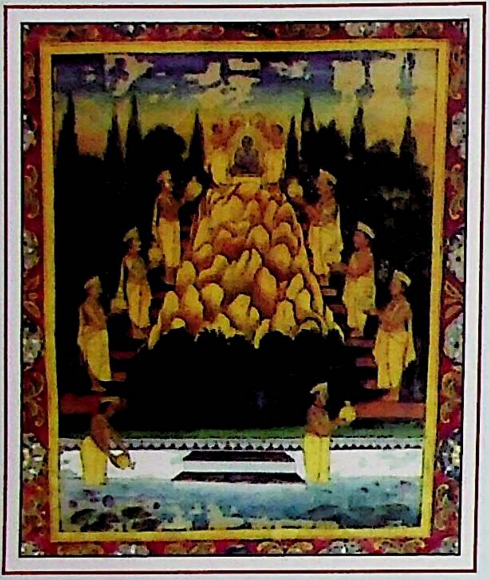

69. पाण्डुक शिला पर तीर्थंकर के अभिषेक का दृश्य

यह चित्र भूतल पर स्थित गर्भगृह के मध्य भाग के मुख्य द्वार के निचले भाग में जड़े एक कांच के ऊपर बना हुआ है। इस चित्र में पाण्डुक शिला पर विराजमान तीर्थंकर का अभिषेक होते हुए चित्रित किया गया है। यही दृश्य चित्र क्र. – 1 में चित्रित है।

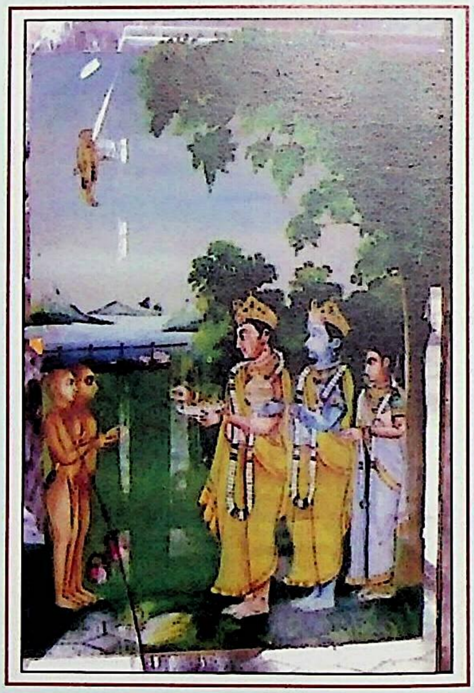

70. राम, लक्ष्मण व सीता द्वारा चारण मुनियों को आहार-दान का दृश्य

यह चित्र भूतल पर स्थित गर्भगृह के बायीं ओर के द्वार के निचले भाग में जड़े एक कांच के ऊपर बना हुआ है। इस चित्र में श्रीरामचन्द्रजी, लक्ष्मणजी और सीताजी द्वारा दण्डक वन में युगल चारण मुनियों को आहार–दान देते हुए चित्रांकित किया गया है। चारण मुनियों के समीप ही जटायु पक्षी को दिखाया गया है। यही दृश्य चित्र क्रं – 04 में भी दिखाया गया है।

71. कमठ के उपसर्ग का दृश्य

यह चित्र भूतल पर स्थित गर्भगृह के बायीं ओर के द्वार के निचले भाग में जड़े एक कांच के ऊपर बना हुआ है। इस चित्र में बालक पार्श्व द्वारा नाग–नागिन के जोड़े को तापसी कमठ के उपसर्गों से बचाते हुए चित्रांकित किया गया है। एक दिन बालक पार्श्वनाथ गजारूढ़ होकर सैर पर निकलते हैं और देखते हैं कि कमठ नामक एक तापसी अग्नि जलाकर तपस्या में मग्न है। बालक पार्श्व को अवधिज्ञान से ज्ञात होता है कि जल रही एक लकड़ी के अन्दर नाग–नागिन का जोड़ा मरणोन्मुख अवस्था में है। बालक पार्श्व ने जब तापसी कमठ को यह बात कही तो कमठ को क्रोध आ गया। कमठ ने जब कुल्हाड़ी से लकड़ी को चीरा तो उसमें नाग–नागिन का जोड़ा निकला। बालक पार्श्व ने मरणासन्न नाग–नागिन के जोड़े के कानों में णमोकार मन्त्र सुनाया, जिसके प्रभाव से वे मरकर भवनवासी देव–देवी धरणेन्द्र एवं पद्मावती हुए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कांच मन्दिर में भित्तिचित्रों की नवीन व पुरानी क्रमसंख्या के आधार पर सूची

नवीन क्रमसंख्या	पुरानी क्रम संख्या	विवरण
1	55	श्री कांच मन्दिर की प्रतिष्ठा के समय भगवान्‌जी के अभिषेक का दृश्य
2	1	संसार वृक्ष का दृश्य
3	56	षट् लेश्या का अंकन
4	57	वनवास काल में श्री रामचन्द्र, लक्ष्मण एवं सीताजी द्वारा चारण मुनियों को आहार दान का दृश्य
5	54	ज्ञानावरणी कर्म का स्वरूप
6	53	दर्शनावरणी कर्म का स्वरूप
7	52	वेदनीय कर्म का स्वरूप
8	51	मोहनीय कर्म का स्वरूप
9	50	आयु कर्म का स्वरूप
10	49	नाम कर्म का स्वरूप
11	48	गोत्र कर्म का स्वरूप
12	47	अन्तराय कर्म का स्वरूप
13	–	अष्ट प्रातिहार्यों का चित्रण
14	–	अष्ट मंगल द्रव्यों का चित्रण
15	–	मन्दिरजी का दृश्य
16	45	रिद्धीधारी (ऋद्धिधारी) मुनि महाराज की तपस्या का प्रभाव
17	46	अहिंसा व्रत का फल
18	44	जुआ खेलने का दुष्परिणाम
19	43	सत्याणुव्रत का महात्मय
20	42	वेश्या संसर्ग के दुष्परिणाम
21	41	अचौर्याणुव्रत पालने का महात्म्य
22	40	चोरी का दुष्परिणाम
23	39	ब्रह्मचर्याणुव्रत का महात्म्य
24	38	परिग्रह परिमाण व्रत का फल
25	37	परपुरुष व्यभिचार एवं संकल्पी हिंसा के दुष्प्रभाव
26	36	भोग भूमि में कल्पवृक्षों के द्वारा इच्छाओं की पूर्ति होने का अंकन
27	35	परस्त्री सेवन के दुष्परिणाम
28.	–	बीस तीर्थंकरों के नामांकन
29	34	सूर्य एवं चन्द्रमा में जिन मन्दिर
30	33	अष्टापद आदीश्वर स्वामी –कैलाश पर्वत का दृश्य
31	32	चम्पापुरीजी का दृश्य
32	31	श्री गिरनारजी का दृश्य
33	30	श्री पावापुरीजी का दृश्य
34	–	जैन परम्परा में सूक्ष्म लेखन कला के चित्र
35	28	समवशरण का दृश्य
36	26	राजकुमार नेमि की बारात का दृश्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

37	25	सुकुमाल मुनि के वैराग्य लेने की घटना का दृश्य
38	24	राजा श्रेयांस द्वारा ऋषभनाथ को प्रथम आहार–दान का दृश्य
39	23	क्रोध का दुष्परिणाम
40	27	त्रिलोक का दृश्य
41	29	नन्दीश्वर द्वीप की रचना
42	–	तपरत सुकुमाल मुनि
43	–	चौबीस तीर्थंकरों के नामांकन
44	22	श्री तारंगाजी का दृश्य
45	21	श्री मांगीतुंगीजी का दृश्य
46	20	श्री कुंथलगिरिजी का दृश्य
47	16	श्री सम्मेदशिखरजी का दृश्य
48	17	विमानवासी देवों द्वारा जिनेन्द्र भगवान् की पूजा से सौधर्म स्वर्ग में इन्द्र पद व सुख
49	18	ज्योतिर्लोक की रचना
50	19	इन्द्रादि उत्सवरत होकर भगवान् को पाण्डुक शिला की ओर ले जाते हुए
51	15	मानस्तम्भ
52	14	मुनि यशोधर का उपसर्ग सहने पर भी शान्त भाव
53	13	अतिशय क्षेत्र श्री ऋषभदेव केशरियाजी का दृश्य
54	12	अतिशय क्षेत्र श्री श्रवणबेलगोलाजी का दृश्य
55	11	सिद्धक्षेत्र चूलगिरि–बड़वानीजी का दृश्य
56	10	सिद्धक्षेत्र सोनागिरिजी का दृश्य
57	9	सिद्धक्षेत्र श्री पावागढ़जी का दृश्य
58	8	सिद्धक्षेत्र श्री मुक्तागिरिजी का दृश्य
59	7	सिद्धक्षेत्र श्री सिद्धवरकूटजी का दृश्य
60	6	सिद्धक्षेत्र श्री शत्रुंजय पालीताणाजी का दृश्य
61	5	सिद्धक्षेत्र श्री गजपंथाजी का दृश्य
62	2	अतिशय क्षेत्र श्री बनेड़ियाजी का दृश्य
63	3	मुनि का व्याघ्रनी द्वारा भक्षण का दृश्य
64	–	कांच मन्दिर का दृश्य
65	–	मन्दिरजी का दृश्य
66	–	संसार वृक्ष का दृश्य
67	–	षट् लेश्या का दृश्य
68	–	गजरथ महोत्सव का दृश्य
69	–	पाण्डुक शिला पर तीर्थंकर के अभिषेक का दृश्य
70.	–	राम, लक्ष्मण एवं सीताजी द्वारा चारण मुनियों को आहार दान का दृश्य
71	–	कमठ के उपसर्ग का दृश्य

पूर्व में बताया जा चुका है कि पुरानी क्रमसंख्या के आधार पर इस मन्दिर में कुल 57 चित्र गिने जा सकते हैं, जबकि नवीन क्रमसंख्या के आधार पर इनकी संख्या 71 निर्धारित की गई है। इनमें से अधिकांश चित्रों पर पुराने क्रमांक अंकित हैं, हालांकि कुछ उदाहरणों में वे मिट गये हैं, अथवा पढ़ने में नहीं आ सके हैं। अतः इनकी क्रमसंख्या का निर्धारण पूर्व क्रमांकों के बढ़ने अथवा घटने के आधार पर किया गया है। विवेच्य सूची में पुरानी क्रम संख्या के कॉलम में जिन चित्रों के साथ – लगा हुआ है, उन्हें पुरानी क्रमसंख्या के कुल 57 चित्रों में सम्मिलित नहीं किया गया था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अध्याय 3

मूर्तिकला एवं अभिलेख

कांच मन्दिर में स्थित तीन वेदियों में कुल मिलाकर 25 मूर्तियाँ एवं 24 धातु से निर्मित यन्त्रजी विराजमान हैं, जिनकी प्रतिदिन विधिविधानानुसार पूजा–अर्चना होती है। मूर्तियों में सर्वाधिक संख्या धातु से निर्मित मूर्तियों की हैं। धातु से निर्मित कुल 19 मूर्तियाँ इस मन्दिर में विराजमान हैं और ये मूर्तियाँ तीर्थंकर ऋषभनाथ, चन्द्रप्रभ, शीतलनाथ, पुष्पदन्त, शान्तिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर की हैं। इनमें एक प्रतिमा सिद्ध भगवान् की है। अष्ट धातु के संयोग से बनी इन सभी मूर्तियों में तीर्थंकर आकृतियों को पद्मासन मुद्रा में दिखाया गया है। केवल धातुनिर्मित पंचबालयति एवं त्रितीर्थीका प्रतिमाओं में जिन आकृतियों को कायोत्सर्ग मुद्रा में रूपांकित किया गया है।

संगमरमर पाषाण से निर्मित कुल 4 मूतियों में तीर्थंकर ऋषभनाथ, चन्द्रप्रभ व शान्तिनाथ तथा भगवान् बाहुबली को निरूपित किया गया है। इनमें भगवान् बाहुबली को छोड़कर सभी जिन आकृतियों को पद्मासन मुद्रा में दिखाया गया है। भगवान् बाहुबली को परम्परागत कायोत्सर्ग मुद्रा में तपरत अवस्था में दर्शाया गया है।

कृष्ण वर्ण के पाषाण से निर्मित कुल 2 मूर्तियों में तीर्थंकर शान्तिनाथ एवं तीर्थंकर पार्श्वनाथ को पद्मासन मुद्रा में निरूपित किया गया है। कृष्ण वर्ण के पाषाण से निर्मित तीर्थंकर शान्तिनाथ इस मन्दिर के मूलनायक जिन हैं और भूतल पर स्थित वेदी पर मध्य भाग में विराजमान हैं।

इन मूर्तियों के आकार–प्रकार में विविधता देखी जा सकती है। सबसे छोटी मूर्ति लगभग 5 x 3 सें. मी. की है, जबकि सबसे बड़ी मूर्ति लगभग 150 x 115 सें. मी. की है।

कालक्रम की दृष्टि से इनमें सर्वाधिक प्राचीन प्रतिमाएँ भूतल की वेदी पर विराजमान धातु से निर्मित तीर्थंकर पार्श्वनाथ एवं त्रितीर्थीका प्रतिमाएँ हैं और ये लगभग 16वीं–17वीं शती ई. की प्रतीत होती हैं। इसके बाद की धातु से बनी तीर्थंकर पार्श्वनाथ की एक प्रतिमा एवं सिद्ध भगवान् की एक प्रतिमा 1902 ई. की हैं। कुछ प्रतिमाएँ 1912 ई. की हैं, जैसे – भूतल की वेदी पर विराजमान कृष्ण वर्ण के पाषाण से निर्मित तीर्थंकर शान्तिनाथ की मूलनायक प्रतिमा, संगरमरमर से निर्मित ऋषभनाथ व चन्द्रप्रभ प्रतिमाएँ आदि। अष्ट धातु से बनी प्रथम तल की वेदी पर विराजमान तीर्थंकर महावीर, पुष्पदन्त व शीतलनाथ प्रतिमाएँ 1921 ई. की हैं। शेष अन्य मूर्तियाँ इसके बाद के विभिन्न कालक्रमों की हैं।

प्रतिमाविज्ञान की दृष्टि से इन प्रतिमाओं में जिन आकृतियों को पद्मासन एवं कायोत्सर्ग दोनों मुद्राओं में प्रदर्शित किया गया है। यद्यपि सर्वाधिक संख्या पद्मासनस्थ मूर्तियों की है। अधिकांश मूर्तियों के वक्षस्थल पर श्रीवत्स अंकित है। भगवान् बाहुबली की संगमरमर से निर्मित एक प्रतिमा में उन्हें परम्परागत रूप में तपरत अवस्था में पुष्प–लताओं से आवेष्ठित दिखाया गया है। सभी मूर्तियों पर उनकी पहचान सम्बन्धी लांछन यथास्थान अंकित हैं। प्रायः प्रतिमाओं की पीठिका पर देवनागरी लिपि एवं संस्कृत भाषा में अभिलेख अंकित हैं, जिससे उनके निर्माणकर्ता, निर्माणकाल, प्रतिष्ठास्थल, प्रतिष्ठाचार्य, प्रेरणा गुरु आदि जानकारियाँ प्राप्त होती हैं।

धातुनिर्मित 24 यन्त्रजी में से सर्वाधिक 15 यन्त्रजी भूतल की वेदी पर विराजमान हैं। छह यन्त्रजी प्रथम तल की मुख्य वेदी पर और तीन यन्त्रजी प्रथम तल पर ही निर्मित दूसरी वेदी पर विराजमान हैं। इन यन्त्रजी पर भी अभिलेख अंकित हैं, जो प्रायः मन्त्रों के रूप में लिखे हुए हैं। ये यन्त्रजी वृत्ताकार, वर्गाकार एवं आयताकार रूप में बने हुए हैं।

इन प्रतिमाओं और यन्त्रजी का वेदिकानुसार विवरण अधोलिखित है –

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूतल पर स्थित वेदी

कांच मन्दिर के भूतल पर स्थित वेदी 11'3" x 21'4" माप के एक आयताकार कक्ष के अन्तर्गत बनी हुई है। यह वेदी संगमरमर के प्रस्तर खण्डों से बनी हुई सतह से लगभग 4' की ऊँचाई तक बनी हुई है। इस वेदी पर कुल 17 जिन प्रतिमाएँ एवं 15 यन्त्रजी विराजमान हैं। 17 जिन प्रतिमाओं में से 12 धातु से, 3 प्रतिमाएँ संगमरमर पाषाण से एवं 2 प्रतिमाएँ कृष्ण वर्ण के पाषाण से निर्मित हैं। कृष्ण वर्ण के पाषाण से निर्मित दो प्रतिमाओं में से एक तीर्थंकर शान्तिनाथ की और दूसरी तीर्थंकर पार्श्वनाथ की हैं। इनमें तीर्थंकर शान्तिनाथ इस वेदी एवं मन्दिर के मूलनायक जिन हैं और वेदी पर मध्य भाग में पद्मासन मुद्रा में प्रतिष्ठित हैं। संगमरमर पाषाण से निर्मित दो प्रतिमाओं में से एक तीर्थंकर ऋषभनाथ की और एक तीर्थंकर चन्द्रप्रभ की हैं और ये क्रमशः मूलनायक प्रतिमा के बायीं एवं दायीं ओर पद्मासन मुद्रा में विराजमान हैं। धातु निर्मित 12 प्रतिमाओं में से तीन उदाहरणों में तीर्थंकर पार्श्वनाथ, एक उदाहरण में पंचबालयति, एक उदाहरण में सिद्ध भगवान्, एक उदाहरण में त्रितीर्थीका, एक उदाहरण में ऋषभनाथ, एक उदाहरण में चन्द्रप्रभ, एक उदाहरण में पुष्पदन्त, एक उदाहरण में शान्तिनाथ, एक उदाहरण में नेमिनाथ और एक उदाहरण में तीर्थंकर महावीर का अंकन मिलता है। इनमें पंचबालयति एवं त्रितीर्थीका प्रतिमाओं में जिन आकृतियों को कायोत्सर्ग मुद्रा में दिखाया गया है, जबकि शेष प्रतिमाओं में जिन आकृतियाँ पद्मासन मुद्रा में हैं। इनमें से अधिकांश धातुनिर्मित प्रतिमाएँ वर्तमान में इसी वेदी पर रखे हुए एक बड़े से संदूक में सुरक्षित रूप से रखी हुई हैं। इस संदूक के चारों ओर दर्शनार्थ कांच लगे हुए हैं। इन सभी 17 जिन प्रतिमाओं में से धातु से बनी तीर्थंकर पार्श्वनाथ की दो प्रतिमाएँ एवं एक त्रितीर्थीका प्रतिमा को छोड़कर सभी प्रतिमाओं पर अभिलेख अंकित हैं। कालक्रम की दृष्टि से ये प्रतिमाएँ 16वीं शती ई. से लेकर अर्वाचीन काल तक की हैं।

इसी वेदी पर विराजमान 15 यन्त्रजी में से अधिकांश भी वर्तमान में उपरोक्त संदूक में जिन प्रतिमाओं के साथ ही रखे हुए हैं। ये यन्त्रजी वृत्ताकार एवं वर्गाकार दोनों आकारों में बने हुए हैं और इनके ऊपर मन्त्रलेख अंकित हैं। इन प्रतिमाओं एवं यन्त्रजी का विवरण अधोलिखित है–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शान्तिनाथ

माध्यम	:	कृष्ण पाषाण
माप	:	150 x 115 सें. मी.
मुद्रा	:	पद्मासन
काल	:	सं. 1969 माघ शुक्ल 13 (1912 ई.)
अभिलेख	:	2 पंक्तियाँ
लिपि	:	नागरी
भाषा	:	संस्कृत

इस प्रतिमा में तीर्थंकर शान्तिनाथ सादे आसन पर लांछन 'मृग' सहित प्रदर्शित हैं।

अभिलेख का पाठ अधोलिखित है –

1. ऊँ सम्वत् 1969 माघ शुक्ला 13 श्री कुन्दकुन्दादि दिगम्बर गुरूपदेशात् प्रतिष्टितम् रामगढे सेढ
2. मल भयरामल गोपिरामैः प्रणमति त राम् माणिकचन्द मगनीरामयोः शुभम् करोतु ईन्दोरः

इस अभिलेख में रामगढ़ के सेढमल भयरामल गोपीराम द्वारा 1912 ई. में इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा का उल्लेख हुआ है। साथ ही माणिकचन्द्र मगनीराम के शुभ की कामना व्यक्त की गई है।

अभिलेख से इंगित होता है कि 1912 ई. में कांच मन्दिर की नींव रखने के उपरान्त ही रामगढ़ के सेढमल, भयरामल व गोपीराम ने इन मूर्तियों की प्रतिष्ठा माणिकचन्द्र मगनीराम गोठ के अन्तर्गत स्थापित कांच मन्दिर के लिए करवाई थी। संभवतः इस मूर्ति के विशालाकार होने के कारण मन्दिर–भवन के निर्माण के दौरान ही इसे मन्दिरजी में स्थापित करवा दिया गया था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऋषभनाथ

माध्यम : संगमरमर
माप : 110 x 95 सें. मी.
मुद्रा : पद्मासन
काल : सं. 1969 माघ शुक्ल 13 (1912 ई.)
अभिलेख : 2 पंक्तियाँ
लिपि : नागरी
भाषा : संस्कृत

इस प्रतिमा में तीर्थंकर ऋषभनाथ सादे आसन पर लांछन 'वृषभ' एवं अभिलेख सहित प्रदर्शित हैं।

अभिलेख का पाठ अधोलिखित है –

1. ऊँ सम्वत् 1969 माघ शुक्ला 13 श्री कुन्दकुन्दादि दिगम्वर गुरुपदेशात् प्रतिष्टितम् रामगढे
2. सेढमल भयरामल गोपीरामैः प्रणमति तराम् माणिकचन्द्र मगनीरामयोः शुभम् करोतु

इस अभिलेख में रामगढ़ के सेढमल भयरामल गोपीराम द्वारा 1912 ई. में इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा का उल्लेख हुआ है। साथ ही माणिकचन्द्र मगनीराम के शुभ की कामना व्यक्त की गई है।

अभिलेख से इंगित होता है कि 1912 ई. में कांच मन्दिर की नींव रखने के उपरान्त ही रामगढ़ के सेढमल, भयरामल व गोपीराम ने इन मूर्तियों की प्रतिष्ठा माणिकचन्द्र मगनीराम गोठ के अन्तर्गत स्थापित कांच मन्दिर के लिए करवाई थी। संभवतः इस मूर्ति के विशालाकार होने के कारण मन्दिर–भवन के निर्माण के दौरान ही इसे मन्दिरजी में स्थापित करवा दिया गया था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चन्द्रप्रभ

माध्यम : संगमरमर
माप : 110 x 95 सें. मी.
मुद्रा : पद्मासन
काल : सं. 1969 माघ शुक्ल 13 (1912 ई.)
अभिलेख : 2 पंक्तियाँ
लिपि : नागरी
भाषा : संस्कृत

इस प्रतिमा में तीर्थंकर चन्द्रप्रभ सादे आसन पर लांछन 'अर्द्धचन्द्र' एवं अभिलेख सहित प्रदर्शित हैं।

अभिलेख का पाठ अधोलिखित है –

1. ऊँ सम्वत् 1969 माघ शुक्ला 13 श्री कुन्दकुन्दादि दिगम्वर गुरुपदेशात् प्रतिष्टितम् रामगढे
2. सेढ़(ठ)मल भयरामल गोपीरामैः प्रणमति तराम् माणिकचन्द्र मगनीरामयोः शुभम् करोतु

इस अभिलेख में रामगढ़ के सेढमल भयरामल गोपीराम द्वारा 1912 ई. में इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा का उल्लेख मिलता है। साथ ही माणिकचन्द्र मगनीराम के शुभ की कामना व्यक्त की गई है।

अभिलेख से इंगित होता है कि 1912 ई. में कांच मन्दिर की नींव रखने के उपरान्त ही रामगढ़ के सेढमल, भयरामल व गोपीराम ने इन मूर्तियों की प्रतिष्ठा माणिकचन्द्र मगनीराम गोठ के अन्तर्गत स्थापित कांच मन्दिर के लिए करवाई थी। संभवतः इस मूर्ति के विशालाकार होने के कारण मन्दिर–भवन के निर्माण के दौरान ही इसे मन्दिरजी में स्थापित करवा दिया गया था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाहुबली

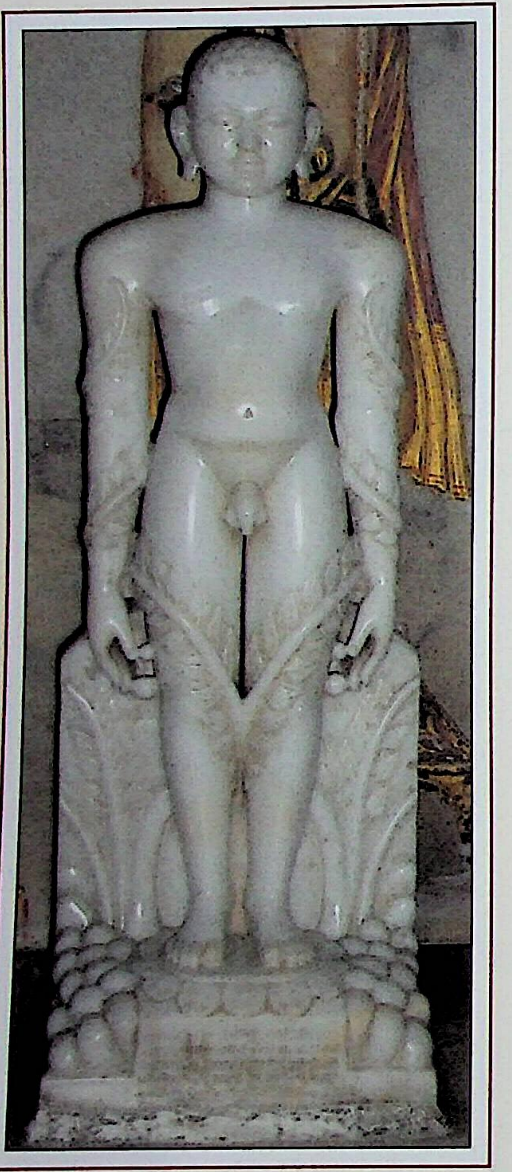

माध्यम	:	संगमरमर
माप	:	85 X 30 सें. मी.
मुद्रा	:	कायोत्सर्ग
काल	:	वीर सं. 2467 विक्रम सं. 1997 माघ शुक्ल 11 (1940 ई.)
अभिलेख	:	5 पंक्तियाँ
लिपि	:	नागरी
भाषा	:	संस्कृत

इस प्रतिमा में भगवान् बाहुबली को पर्वत पर स्थानक मुद्रा में तप करते हुए दर्शाया गया है। भगवान् बाहुबली के पैरों के नीचे कमलासन बिछा हुआ है और उनके हाथों एवं पैरों पर पत्र–लताएँ विस्तृत हैं। इस प्रतिमा में भगवान् बाहुबली के घुटनों तक परिकर का निर्माण किया गया है और इस परिकर पर बेल–पत्रों का उत्कीर्णन किया गया है।

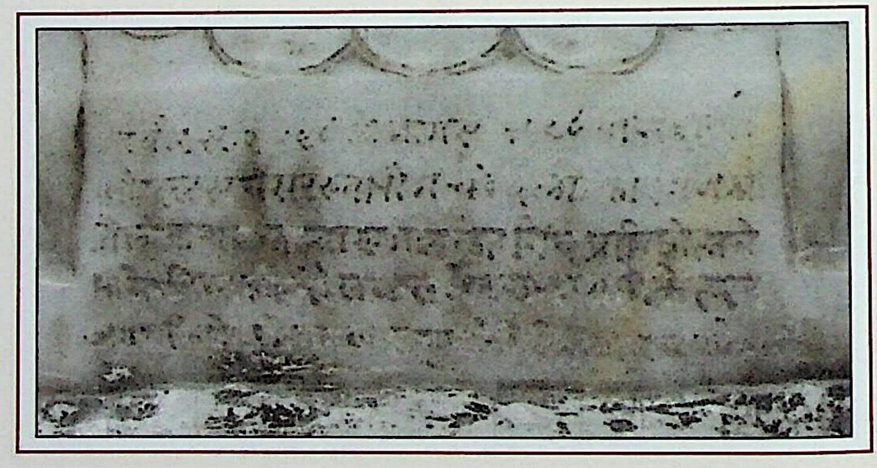

अभिलेख का पाठ अधोलिखित है –

1. श्री वीर सं. 2467 विक्रम सं. 1997 माघ शु. 11
2. श्री मूल संघे सरस्वती गच्छे वलात्कार गणे श्री
3. तिलोकचंद कल्याणमल कृत सिंध प्रतिष्ठोत्सवे
4. ....तत्पुत्र
5. ....तत्पुत्र..................

इस अभिलेख की चौथी एवं पाँचवीं पंक्तियाँ स्पष्ट रूप से नहीं पढ़ी जा सकी हैं। शेष अंश में मूल संघ बलात्कारगण सरस्वती गच्छ के अन्तर्गत त्रिलोकचन्द्र कल्याणमल द्वारा 1940 ई. में सम्पन्न प्रतिष्ठा महोत्सव का उल्लेख मिलता है और इसी महोत्सव में किन्हीं श्रावकों द्वारा इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा करवाई गई थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पार्श्वनाथ

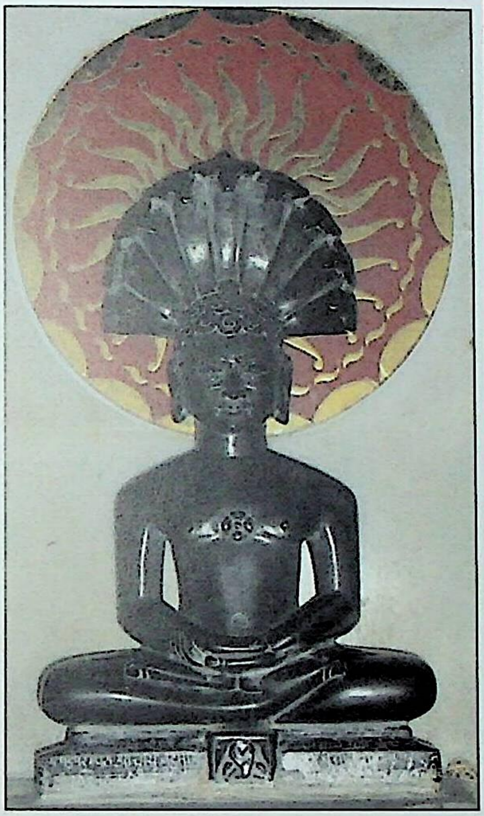

माध्यम	:	कृष्ण पाषाण
माप	:	45 X 25 सें. मी.
मुद्रा	:	पद्मासन
काल	:	13 शनीवासरे
अभिलेख	:	3 पंक्तियाँ
लिपि	:	नागरी
भाषा	:	संस्कृत

इस प्रतिमा में तीर्थंकर पार्श्वनाथ सिर के ऊपर नौ सर्पफणों की छत्रावली से शोभित है और उन्हें सादे आसन पर लांछन 'सर्प' एवं अभिलेख सहित दर्शाया गया है। उनके वक्षस्थल पर श्रीवत्स सुशोभित है।

पीठिका पर उत्कीर्ण अभिलेख पीठिका के चारों ओर के भाग में खुदा हुआ है और इस मूर्ति का पिछला भाग दीवार के कारण छिपा हुआ है तथा पिछले हिस्से में चूना भरा होने के कारण अभिलेख को नहीं पढ़ा जा सका है। इसी भाग में तिथि होने के कारण अब वह स्पष्ट नहीं हो सकी है। अभिलेख की तीसरी पंक्ति भी चूने में दबी हुई है। दृष्टव्य भाग का पाठ अधोलिखित है –

1. ....माघ शुक्ला 13 शनीवासरे श्रीमद कुन्दकुन्दाम्नाये मूल संघे चरित्र च............
2. ....आ. शांतिसागरस्य पट्ट परम्परा आचार्य वर्द्धमानसागर उपदेशात् सान्निध्ये सना..........
3. ....चन्द श्रीमती तारादेवी.................कासलीवाल..........

इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि इस मूर्ति की प्रतिष्ठा मूल संघ के अन्तर्गत आचार्य शान्तिसागर के पट्टशिष्य आचार्य वर्द्धमानसागर के उपदेश एवं सानिध्य में श्रीमती तारादेवी कासलीवाल एवं उनके परिवार के श्रावकों ने करवाई थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचबालयति

माध्यम	:	धातु
माप	:	22 x 18 सें. मी.
मुद्रा	:	कायोत्सर्ग
काल	:	वीर निर्वाण सं. 2505 विक्रम सं. 2036 ज्येष्ठ शुक्ल 5 गुरुवार (1979 ई.)
अभिलेख	:	2 पंक्तियाँ
लिपि	:	नागरी
भाषा	:	संस्कृत

इस प्रतिमा में पंचबालयति के रूप में पाँच तीर्थंकरों को कायोत्सर्ग मुद्रा में दो तलों में दर्शाया गया है। इनमें से निचले तल में तीन तीर्थंकरों – महावीर को मध्य भाग में, उनके दायीं ओर पार्श्वनाथ को और बायीं ओर नेमिनाथ को सादी पीठिकाओं पर खड़ा दिखाया गया है। ऊपर के तल पर दो तीर्थंकरों – मल्लिनाथ व वासुपूज्य को दर्शाया गया है। पाँचों तीर्थंकरों की पीठिकाओं पर तत्सम्बन्धी लांछन भी अंकित हैं।

इस प्रतिमा पर सबसे ऊपर के भाग में एक पंक्ति में "पंच बालयति प्रतिमा" उत्कीर्ण है। इसके अलावा दो पंक्तियों का अभिलेख पीठिका पर अंकित है। इस अभिलेख का पाठ अधोलिखित है –

1. श्री वीर नि. सं. 2505 विक्रम सं. 2036 ज्येष्ठ शु. 5 गुरुवासरे दि. जैन कुन्दकुन्दा..........................गजरथोत्सव
2. पं. नाथूलाल शास्त्री एवं पं. गुलाब चन्द्र पुष्प........तयो प्रतिष्ठाचा..............

इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि इस मूर्ति की प्रतिष्ठा गजरथ महोत्सव के दौरान पंडित नाथूलाल शास्त्री एवं पंडित गुलाबचन्द्र 'पुष्प' के प्रतिष्ठाचार्यत्व में 1979 ई. में हुई थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्ध भगवान्

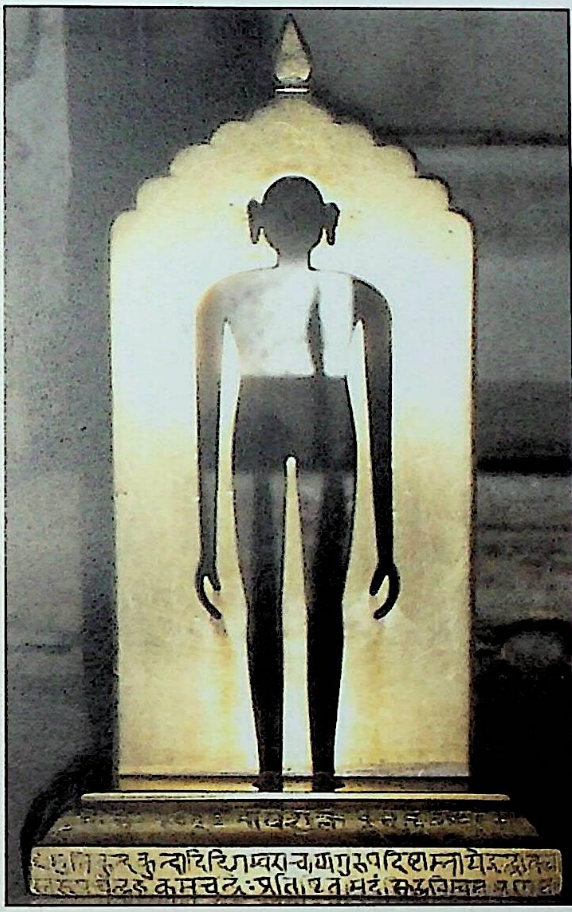

माध्यम	:	धातु
माप	:	22 x 13 सें. मी.
मुद्रा	:	कायोत्सर्ग
काल	:	सं. 1959 माघ शुक्ल 5 चन्द्रवार (1902 ई.)
अभिलेख	:	3 पंक्तियाँ
लिपि	:	नागरी
भाषा	:	संस्कृत

सिद्ध भगवान की प्रतिमा पर अंकित अभिलेख पीठिका पर तीनों ओर के भाग में खुदा हुआ है। पिछले भाग में अभिलेख अंकित नहीं किया गया है। इस अभिलेख का पाठ अधोलिखित है –

1. ।। ऊ नमः सिदेभ्यः स. 1959 माघ शुक्ल 5 चन्द्रवासरे श्री मूल संघे सरस्व–

2. ती गच्छे वलात्का गण श्री....मुनि कुन्दकुन्दादि दिगम्वराचाय्य गुरुपदिष्टाम्नाये इन्द्रा कया..........

3. ...लीवाल गोत्रीयः स्वरूप चन्द्र हुकमचन्द्रैः प्रतिष्टित मिदं सिद्ध विम्वम् प्रणमति...........

इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि सिद्ध भगवान् की इस मूर्ति की प्रतिष्ठा मूल संघ बलात्कार गण के गुरुओं के उपदेश पर कासलीवाल गोत्र के स्वरूपचन्द्र हुकुमचन्द्र ने 1902 ई. में करवाई थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पार्श्वनाथ

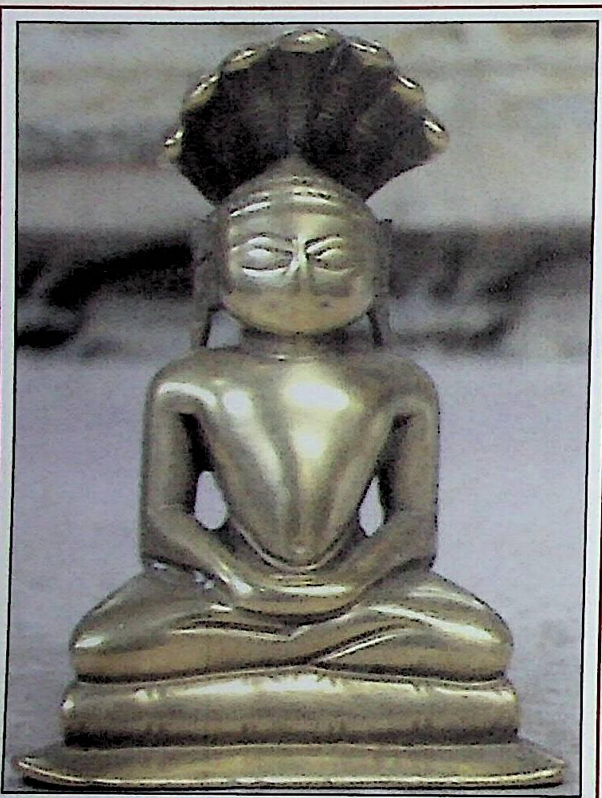

माध्यम : धातु

माप : 7 x 5 सें. मी.

मुद्रा : पद्मासन

काल : लगभग 16वीं–17वीं शती ई.

इस प्रतिमा में तीर्थंकर पार्श्वनाथ सिर के ऊपर सात सर्पफणों की छत्रावली से शोभित सादे आसन पर विराजमान हैं।

पुष्पदन्त

माध्यम : धातु

माप : 12 x 10 सें. मी.

मुद्रा : पद्मासन

काल : सं. 1987 (1930 ई.)

अभिलेख : 2 पंक्तियाँ

लिपि : नागरी

भाषा : संस्कृत

इस प्रतिमा में तीर्थंकर पुष्पदन्त सादे आसन पर लांछन 'महिष' सहित प्रदर्शित हैं। अभिलेख का पाठ अधोलिखित है –

1. नमः सिद्धेभ्यः वि. सं. 1987...........

2. मु. स. ग. ब. ग. गु. उ. बडवानी न............

इस अभिलेख में मूल संघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण के गुरुओं के उपदेश पर बड़वानी नगर में 1930 ई. में मूर्ति प्रतिष्ठा का उल्लेख हुआ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रितीर्थीका

माध्यम : धातु

माप : 13 x 9 सें. मी.

मुद्रा : कायोत्सर्ग

काल : लगभग 16वीं–17वीं शती ई.

इस प्रतिमा में तीन तीर्थंकर आकृतियों को एक ऊँची पीठिका पर कायोत्सर्ग मुद्रा में खड़ा दिखाया गया है। इस प्रतिमा का परिकर तोरण द्वार के रूप में बना हुआ साधारण है। तीनों तीर्थंकर आकृतियों के सिर के ऊपर छत्र व उसके ऊपर शिखर बना हुआ है। तीनों तीर्थंकर आकृतियाँ लांछनविहीन तथा पहचान होने वाली अन्य विशेषताओं से अपूर्ण हैं। इस प्रकार के सामान्य प्रचलन के आधार पर इन्हें तीर्थंकर शान्तिनाथ–कुन्थुनाथ–अरहनाथ के रूप में पहचाना जा सकता है।

पार्श्वनाथ

माध्यम : धातु

माप : 5 x 3 सें. मी.

मुद्रा : पद्मासन

काल : लगभग 18वीं शती ई.

इस प्रतिमा में तीर्थंकर पार्श्वनाथ को एक ऊँची पीठिका पर सर्पासन पर विराजमान दिखाया गया है। उनके सिर के ऊपर पाँच सर्पफणों की छत्रावली निरूपित है, किन्तु सर्पासन पर लांछन सर्प के आधार पर उनकी पहचान पार्श्वनाथ के रूप में सुस्पष्ट है। इस प्रतिमा का परिकर अत्यन्त भव्य है। तोरण द्वार के रूप में बने परिकर भाग में शीर्ष पर कीर्तिमुख अलंकृत है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पार्श्वनाथ

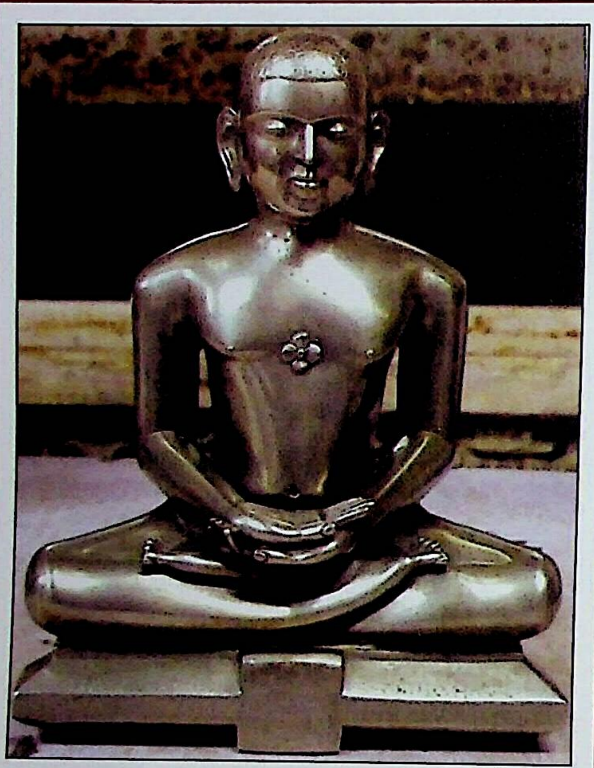

माध्यम	:	धातु
माप	:	18 x 14 सें. मी.
मुद्रा	:	पद्मासन
काल	:	वीर सं. 2467 माघ शुक्ल 1 बुधवार (1940 ई.)
अभिलेख	:	2 पंक्तियाँ
लिपि	:	नागरी
भाषा	:	संस्कृत

इस प्रतिमा में तीर्थंकर महावीर सादी पीठिका पर लांछन "सिंह" के साथ प्रदर्शित हैं। पीठिका पर अंकित अभिलेख का पाठ अधोलिखित है –

1. श्री वीर सं. 2467 माघ शु 1 वुधे श्री मूल सं. स. ग. ब ग..........
2. ....केस्वदास जगदीसदास................

अभिलेखानुसार इस मूर्ति की प्रतिष्ठा मूल संघ सरस्वतीगच्छ बलात्कार गण के अन्तर्गत केशवदास जगदीशदास आदि श्रावकों ने 1940 ई. में करवाई थी।

ऋषभनाथ

माध्यम	:	धातु
माप	:	18 x 14 सें. मी.
मुद्रा	:	पद्मासन
काल	:	वीर सं. 2519 माघ शुक्ल 6 सोमवार (30 नवम्बर 1992 ई.)
अभिलेख	:	3 पंक्तियाँ
लिपि	:	नागरी
भाषा	:	संस्कृत

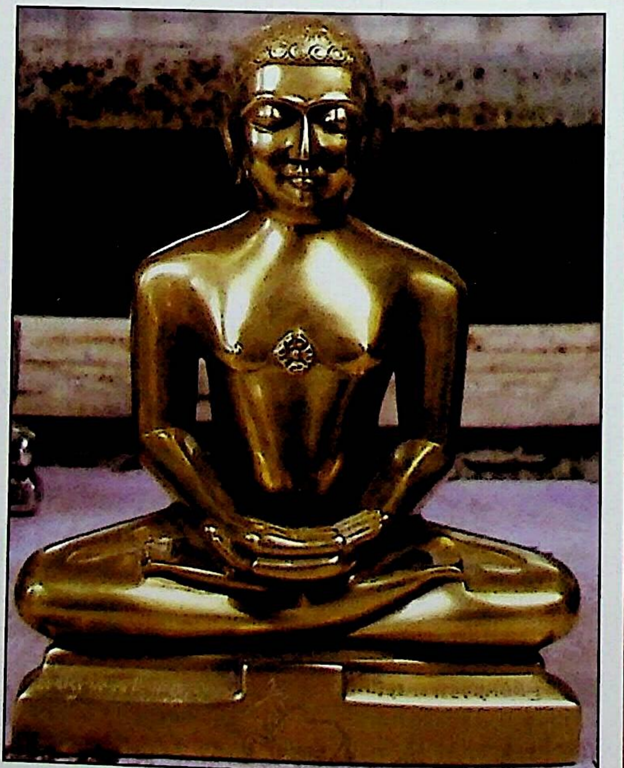

इस प्रतिमा में तीर्थंकर ऋषभनाथ सादी पीठिका पर लांछन "वृषभ" सहित दर्शित हैं। पीठिका पर अंकित लेख का पाठ अधोलिखित है –

1. श्री वीर नि. सं. 2519 मा. शु. 6 सोमवासरे दि. 30 नव. 1992 मूल संघे कुन्दकुन्द.............
2. आ. दर्शनसागर ततशिष्य समतासागर ससंघ सा. पं. फतह............
3. विनोद कुमार ध. पं. जयमालायाः पुत्राः पुष्पेन्द्र देवेन्द्र धर्मेन्द्र.........

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चन्द्रप्रभ

माध्यम	:	धातु
माप	:	20 X 16 सें. मी.
मुद्रा	:	पद्मासन
काल	:	वीर सं. 2457 विक्रम सं. 1987 (1930 ई.)
अभिलेख	:	2 पंक्तियाँ
लिपि	:	नागरी
भाषा	:	संस्कृत

इस प्रतिमा में तीर्थंकर चन्द्रप्रभ को सादी पीठिका पर लांछन "अर्द्धचन्द्र" के साथ दिखाया गया है। पीठिका पर अंकित अभिलेख का पाठ अधोलिखित है –

1. उँ नमः सिद्धेभ्यः श्री. वी. नि. सं. 2457 च वी. सं. 1987...........
2. न्वये परम दिगम्बर जैन गुरुउपदेशात् वडवानी न....................

इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि इस मूर्ति की प्रतिष्ठा कुन्दकुन्द अन्वय के दिगम्बर गुरुओं के उपदेश पर बड़वानी नगर में 1930 ई. में हुई थी।

शान्तिनाथ

माध्यम	:	धातु
माप	:	30 X 22 सें. मी.
मुद्रा	:	पद्मासन
काल	:	विक्रम सं. 1987 माघ शुक्ल 10 गुरूवार (1930 ई.)
अभिलेख	:	2 पंक्तियाँ
लिपि	:	नागरी
भाषा	:	संस्कृत

इस प्रतिमा में तीर्थंकर शान्तिनाथ सादी पीठिका पर लांछन "मृग" सहित दर्शित हैं। पीठिका पर अंकित अभिलेख का पाठ अधोनुसार है–

1. ऊँ वि. सं. 1987 माघ शु. 10 गु. वा. मू. सं. स. ग. व. ग. कुंदकुंदान्वे दि. जै. गु. उ. बडवानी नगरे प्रतिष्ठितम् । दा. राज्य भू. रा. रावराजा सर सेठ हुकमचंद तत्पुत्र हीरालाल राजकुमार
2. सीह तत्पौत्र नरेंद्र कुमार सिंहभ्यौ मंगलं ददातु

अभिलेखानुसार इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा मूल संघ बलात्कारगण सरस्वती गच्छ के अन्तर्गत राज्यभूषण राजा रावराजा सर सेठ हुकुमचंद्र के पुत्र हीरालाल व राजकुमार एवं पौत्र नरेन्द्र कुमार सिंह द्वारा 1930 ई. में बड़वानी नगर में करवाई गई थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नेमिनाथ

माध्यम : धातु
माप : 24 X 18 सें. मी.
मुद्रा : पद्मासन
काल : वीराब्दे 2447 विक्रम सं. 1978 वैशाख शुक्ल 2 चंद्रवार (1921 ई.)
अभिलेख : 1 पंक्ति
लिपि : नागरी
भाषा : संस्कृत

इस प्रतिमा में तीर्थंकर नेमिनाथ सादी पीठिका पर लांछन "शंख" सहित प्रदर्शित हैं। पीठिका पर अंकित अभिलेख का पाठ अधोलिखित है –

1. श्री वीराब्दे 2447 वि. 1978 वैशाख शु. 2 चन्दवासरे.........(उड़े)सर नगरे प्रतिष्ठतम भद्रं भूयात् इन्दोर

अभिलेखानुसार इस मूर्ति की प्रतिष्ठा 1921 ई. में संभवतः उड़ेसर नगर में हुई थी।

पार्श्वनाथ

माध्यम : धातु
माप : 23 X 15 सें. मी.
मुद्रा : पद्मासन
काल : विक्रम सं. 1987 माघ शुक्ल 10 गुरुवार (1930 ई.)
अभिलेख : 2 पंक्तियाँ
लिपि : नागरी
भाषा : संस्कृत

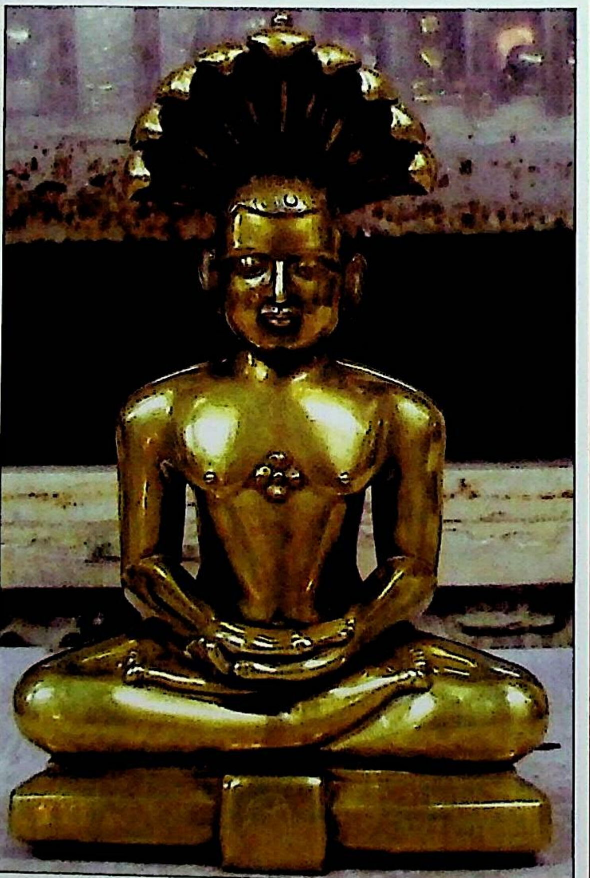

इस प्रतिमा में तीर्थंकर पार्श्वनाथ को सिर के ऊपर नौ सर्पफणों की छत्रावली से शोभित एवं सादी पीठिका पर लांछन "सर्प" सहित दिखाया गया है। पीठिका पर अंकित अभिलेख का पाठ अधोलिखित है –

1. उँ वि. सं. 1987 मा. शु. 10 गु वार
2. मू. सं. स. ग. व. ग. कुंदकुंदायो वि.

इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि इस मूर्ति की प्रतिष्ठा मूलसंघ, सरस्वतीगच्छ, बलात्कारगण कुन्दकुन्द अन्वय के अन्तर्गत 1930 ई. में हुई थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऊँ यन्त्र

माध्यम : धातु
काल : आधुनिक काल
अभिलेख : अभिलिखित
लिपि : नागरी
भाषा : संस्कृत

वर्तुलाकार इस ऊँ यंत्र पर मध्य भाग में एक लघु वृत्त के अन्तर्गत "ऊँ" उत्कीर्ण है। इस वृत्त के बाहर बढ़ते हुए क्रम में बने तीन वृत्ताकार सोपानों के अन्तर्गत क्रमशः 8, 16 व 24 खाने बने हुए हैं और प्रत्येक खाने में एक–एक पंक्ति में "क्लीं" लिखा हुआ है। सबसे बाहरी वृत्त को शंक्वाकार रचनाएँ घेरे हुए हैं। सबसे बाहर किनारों पर चारों दिशाओं में "ऊँ ह्रीं क्लीं" अंकित है।

णमोकार यन्त्र

माध्यम : धातु
काल : आधुनिक काल
अभिलेख : अभिलिखित
लिपि : नागरी
भाषा : संस्कृत

वर्तुलाकार इस णमोकार यंत्र पर मध्य भाग में बने एक बड़े वृत्त के अन्तर्गत "ह्रीं" एवं अन्य मंत्राक्षर उत्कीर्ण हैं। इस वृत्त से आठ पत्तियाँ एवं उनके मध्य में लम्बे अरें जुड़े हैं। इनमें प्रत्येक लम्बे अरों में 'णमो अरहंताणं' लिखा हुआ है, जबकि प्रत्येक पत्ती में क्रमशः 'ऊँ णमो सिद्धाणं स्वाहा 1', 'ऊँ णमो आयरियाणं स्वाहा 2', 'ऊँ णमो उवज्झायाणं स्वाहा 3', 'ऊँ णमो लोए सव्वसाहूणं स्वाहा 4', 'ऊँ सम्यग्दर्शनाय स्वाहा 5', 'ऊँ सम्यग्ज्ञानाय स्वाहा 6', 'ऊँ सम्यग्चारित्राय स्वाहा 7' और 'ऊँ सम्यग्तपये स्वाहा 8' लिखा हुआ है। इन पत्तियों के बाद बने दो घेरों में भी मंत्राक्षर लिखे हुए हैं। इसके बाद पुनः आठ पत्तियाँ बनी हुई हैं और इनमें से प्रत्येक पत्ती में क्रमशः 'ऊँ ह्रीं अर्ह अनाहर विद्यायै अ आ इ ई उ ऊ क्र क्र ल्ह ल्ह ए ऐ ओ औ अं अः णमो अरहंताणं स्वाहा 1', ऊँ ह्रीं अर्ह अनाहत विद्यायै क ख ग घ ड़ णमो सिद्धाणं स्वाहा 2', 'ऊँ ह्रीं अर्ह अनाहत विद्यायै च छ ज झ त्र णमो आयरियाणं स्वाहा 3', 'ऊँ ह्रीं अर्ह अनाहत विद्यायै ट ठ ड ढ ण णमो उवज्झायाणं स्वाहा 4', 'ऊँ ह्रीं अर्ह अनाहत विद्यायै त थ द ध न णमो लोए सव्वसाहूणं स्वाहा 5', 'ऊँ ह्रीं अर्ह अनाहत विद्यायै प फ व भ म सम्यग्दर्शनाय स्वाहा 6', 'ऊँ ह्रीं अर्ह अनाहत विद्यायै य र ल व स सम्यग्ज्ञानाय स्वाहा 7' और 'ऊँ ह्रीं अर्ह अनाहत विद्यायै श ष स ह सम्यग्चारित्राय स्वाहा 8' अंकित है। इसके बाद बने एक वृत्त में पूरी परिधि में "ठं" अंकित है। सबसे अंतिम गोल घेरे में मंत्र लिखे हुए हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

षोड़ शकारण यन्त्र

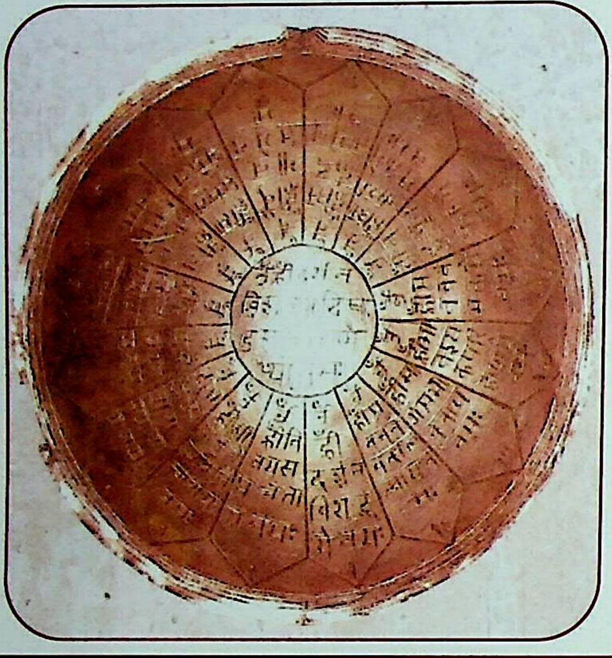

माध्यम : धातु

काल : आधुनिक काल

अभिलेख : अभिलिखित

लिपि : नागरी

भाषा : संस्कृत

वर्तुलाकार इस षोड़शकारण यन्त्र पर मध्य भाग में एक वृत्त के अन्तर्गत "ऊँ ह्रीं दर्शन विशुद्धादि षोडशकारणेभ्यो नमः" अंकित है। इस वृत्त से जुड़ी 16 पत्तियों में से प्रत्येक पत्ती में ऊँ ह्रीं दर्शन विशुद्धये नमः 1, ऊँ ह्रीं विनय सम्पन्नताये नमः 2, ऊँ ह्रीं शील वृते समतिचाराय नमः 3, ऊँ ह्रीं अ......ज्ञानोपयोगाय नमः 4, ऊँ ह्रीं ....वययन नमः 5, ऊँ ह्रीं भक्तिवस्त्गाय नमः 6, ऊँ ह्रीं शक्तितस्तपये नमः 7, ऊँ ह्रीं साधु समधये नमः 8, ऊँ ह्रीं वैयावृतये नमः 9, ऊँ ह्रीं अर्हदताये नमः 10, ऊँ ह्रीं आचार्यभक्तये नमः 11, ऊँ ह्रीं बहुश्रतु भक्तये नमः 12, ऊँ ह्रीं श्र वचन भक्तये नमः 13, ऊँ ह्रीं आवश्यक परिहापाये नमः 14, ऊँ ह्रीं मार्गप्रभावनाय नमः 15, ऊँ ह्रीं प्र वचन वत्सत्वायन नमः 16 मंत्रलेख लिखे हुए हैं।

णमोकार यन्त्र

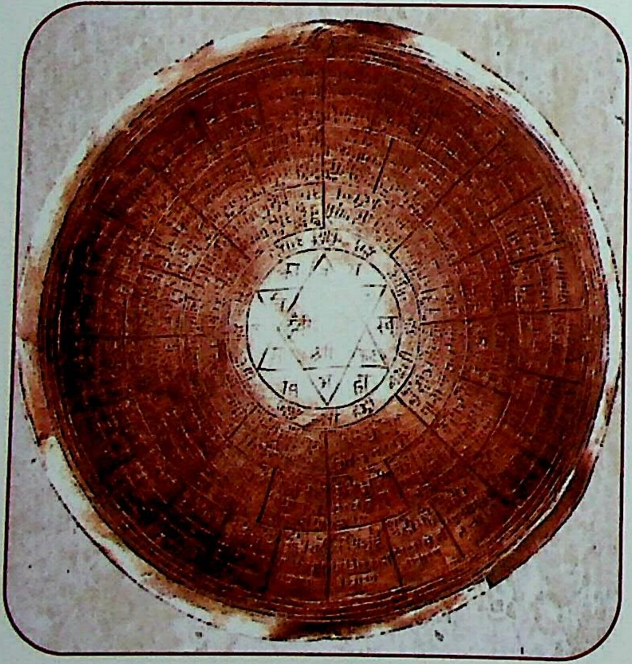

माध्यम : धातु

काल : आधुनिक काल

अभिलेख : अभिलिखित

लिपि : नागरी

भाषा : संस्कृत

वर्तुलाकार इस णमोकार यंत्र पर मध्य भाग में एक ज्यामितीय रचना के अन्तर्गत कई लघु मंत्राक्षर उत्कीर्ण हैं। इस वृत्त के बाहर की ओर बने कई खानों में एक से लेकर चार पंक्तियों में णमोकार महामंत्र एवं अन्य मंत्र लिखे हुए हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचपरमेष्ठि यन्त्र

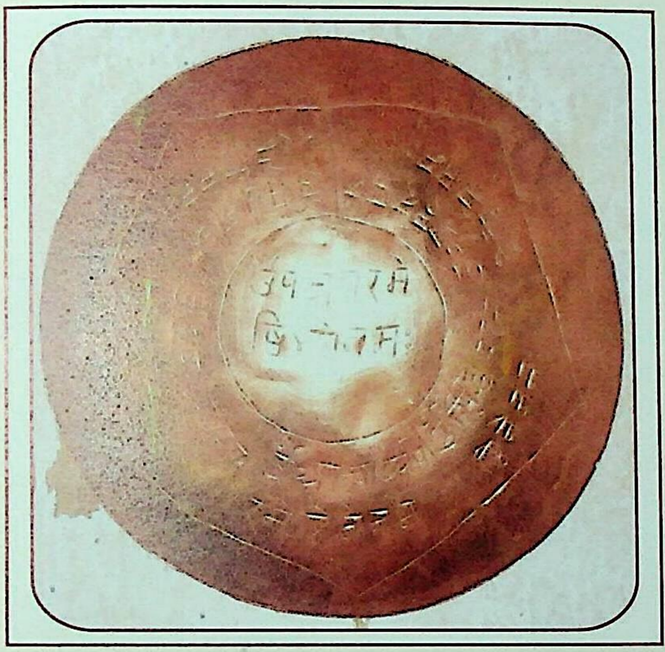

माध्यम	:	धातु
काल	:	आधुनिक काल
अभिलेख	:	अभिलिखित
लिपि	:	नागरी
भाषा	:	संस्कृत

वर्तुलाकार इस पंचपरमेष्ठि यन्त्र पर मध्य भाग में एक वृत्त के अन्तर्गत दो पंक्तियों में "ऊँ पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः" उत्कीर्ण है। इस वृत्त से जुड़े 5 खानों में भी दो–दो पंक्तियों में क्रमशः ऊँ सिद्ध परमेष्ठिने नमः, ऊँ अर्हत् परमेष्ठिने नमः, ऊँ आचार्य परमेष्ठिने नमः' ऊँ उपाध्याय परमेष्ठिने नमः और ऊँ सर्व्व साधु परमेष्ठिने नमः लेख अंकित हैं।

सम्यग्दर्शन यन्त्र

माध्यम	:	धातु
काल	:	आधुनिक काल
अभिलेख	:	अभिलिखित
लिपि	:	नागरी
भाषा	:	संस्कृत

वर्तुलाकार इस यंत्र पर मध्य भाग में एक वृत्त के अन्तर्गत तीन पंक्तियों में "ऊँ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शनाय नमः" उत्कीर्ण है। इस वृत्त से जुड़ी 8 पत्तियों में से प्रत्येक पत्ती में तीन से चार पंक्तियों में क्रमशः ऊँ ह्रीं निःशंकितांगाय नमः, ऊँ ह्रीं निःकाक्षितांगाय नमः, ऊँ ह्रीं निर्विचिकित्सागांय नमः, ऊँ ह्रीं अमूढाद्रष्टयांगाय नमः, ऊँ ह्रीं उपगूहनांगाय नमः, ऊँ ह्रीं स्थितिकरणांगाय नमः, ऊँ ह्रीं वात्सल्यांगाय नमः और ऊँ ह्रीं प्रभावनांगाय नमः मंत्रलेख अंकित हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भक्तामर यन्त्र

माध्यम : धातु
काल : आधुनिक काल
अभिलेख : अभिलिखित
लिपि : नागरी
भाषा : संस्कृत

वर्गाकार इस यंत्र के मध्य भाग में वृत्ताकार रूप में मंत्र एवं मंत्राक्षर अंकित हैं। यंत्र के सिरों पर चौकोर रूप में "भक्तामर प्रणत मौलिमणिप्रभाणामुद्योतकं दलितपापतमो वितानम् सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादावालम्बनं भवजले पततां जनानाम्" लिखा हुआ है।

सिद्धचक्र यन्त्र

माध्यम : धातु
काल : आधुनिक काल
अभिलेख : अभिलिखित
लिपि : नागरी
भाषा : संस्कृत

वर्गाकार इस यंत्र पर मध्य भाग में एक वृत्त के अन्तर्गत "र्ह्रं" उत्कीर्ण है। इस वृत्त से जुड़ी 8 पत्तियों में मंत्राक्षर और इन पत्तियों के बीच मध्य भाग में बने लम्बे अरों में 'णमो अरिहंताणं' लेख अंकित हैं। सबसे ऊपर एक पंक्ति में 'सिद्ध चक्र यंत्र' लिखा हुआ है।

सम्यग्ज्ञान यन्त्र

माध्यम : धातु
काल : आधुनिक काल
अभिलेख : अभिलिखित
लिपि : नागरी
भाषा : संस्कृत

वर्तुलाकार इस यंत्र पर मध्य भाग में एक वृत्त के अन्तर्गत तीन पंक्तियों में "ऊँ ह्रीं अष्टांग सम्यग्ज्ञानाय नमः" उत्कीर्ण है। इस वृत्त से जुड़ी 8 पत्तियों में से प्रत्येक पत्ती में तीन से चार पंक्तियों में क्रमशः ऊँ ह्रीं व्यांजनोर्जितांगाय नमः, ऊँ ह्रीं अर्थसामग्प्रांगाय नमः, ऊँ ह्रीं शब्दार्थोभय पूर्णांगाय नमः, ऊँ ह्रीं कालाप्यायनांगाय नमः, ऊँ ह्रीं उपध्यान समृद्धांगाय नमः, ऊँ ह्रीं विनयो सुद्धितांगाय नमः, ऊँ ह्रीं गुरुवाद्यपहवांगाय नमः और ऊँ ह्रीं वहुमान समुचांगाय नमः मंत्रलेख अंकित हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यन्त्र

माध्यम	:	धातु
काल	:	आधुनिक काल
अभिलेख	:	अभिलिखित
लिपि	:	नागरी
भाषा	:	संस्कृत

दशलक्षण यन्त्र

माध्यम	:	धातु
काल	:	आधुनिक काल
अभिलेख	:	अभिलिखित
लिपि	:	नागरी
भाषा	:	संस्कृत

वर्तुलकार इस यंत्र पर मध्य भाग में एक वृत्त के अन्तर्गत 5 पंक्तियों में "ऊँ ह्रीं उत्तम क्षमादी दश लक्षणयर्मधर्मांगेभ्यो नमः" उत्कीर्ण है। इस वृत्त से जुड़ी 10 पत्तियों में से प्रत्येक पत्ती में चार से पाँच पंक्तियों में क्रमशः अधोलिखित मंत्र लिखे हुए है – ऊँ ह्रीं उत्तम क्षमाधर्म धमीगेभ्यो नमः ऊँ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मांगाय नमः, ऊँ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्मांगाय नमः, ऊँ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय नमः, ऊँ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय नमः, ऊँ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय नमः, ऊँ ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय नमः, ऊँ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय नमः, ऊँ ह्रीं उत्तम आकिंचन धर्मांगाय नमः और ऊँ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय नमः मंत्रलेख अंकित हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कलिकुण्ड यन्त्र

माध्यम : धातु

काल : आधुनिक काल

अभिलेख : अभिलिखित

लिपि : नागरी

भाषा : संस्कृत

वर्तुलाकार इस कलिकुण्ड यंत्र पर मध्य भाग में एक वृत्त के अन्तर्गत पाँच पंक्तियों में "ऊँ ह्रीं श्री क्ली ऐ र्हं कलिकुंड दंड स्वामिन्नतुलवलवीर्य पराक्रमाय नमः देवदत्तस्य अभिष्ट फलसिद्धिं कुरुश्आत्मविद्यां रक्षशपर विद्यां छिंदशमिदश स्फ्राँ स्फ्री स्फ्रूँ स्फ्रौ स्फ्रः हूं फट् स्वाहा" उत्कीर्ण है। इस वृत्त से जुड़ी आठ पत्तियों में मंत्राक्षर लिखे हुए हैं। इन पत्तियों के मध्य बने आठ लम्बे अरों में से प्रत्येक अर में "णमो अरिहंताणं" अंकित है।

णमोकार यन्त्र

माध्यम : धातु

काल : आधुनिक काल

अभिलेख : अभिलिखित

लिपि : नागरी

भाषा : संस्कृत

वर्तुलाकार इस यंत्र पर मध्य भाग में एक वृत्त के अन्तर्गत ह्रीं एवं मंत्राक्षर लिखे हुए हैं। इस वृत्त से जुड़ी आठ पत्तियों में मंत्राक्षर लिखे हुए हैं। इन पत्तियों के मध्य बने आठ लम्बे अरों में से प्रत्येक अर में "णमो अरिहंताणं" अंकित है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णमोकार यन्त्र

माध्यम : धातु
काल : आधुनिक काल
अभिलेख : अभिलिखित
लिपि : नागरी
भाषा : संस्कृत

वर्तुलाकार इस णमोकार यंत्र पर मध्य भाग में बने एक बड़े वृत्त के अन्तर्गत "ह्रीं" एवं अन्य मंत्राक्षर उत्कीर्ण हैं। इस वृत्त से आठ पत्तियाँ एवं उनके मध्य में लम्बे अरें जुड़े हैं। इनमें प्रत्येक लम्बे अरों में 'णमो अरिहंताणं' लिखा हुआ है, जबकि प्रत्येक पत्ती में क्रमशः 'ऊँ णमो सिद्धाणं स्वाहा 1', 'ऊँ णमो आयरियाणं स्वाहा 2', 'ऊँ णमो उवज्झायाणं स्वाहा 3', 'ऊँ णमो लोए सव्वसाहूणं स्वाहा 4', 'ऊँ सम्यग् दर्शनाय स्वाहा 5', 'ऊँ सम्यग्ज्ञानाय स्वाहा 6', 'ऊँ सम्यक चारित्राय स्वाहा 7' और 'ऊँ सम्यक तपये स्वाहा 8' लिखा हुआ है। इन पत्तियों के बाद बने दो घेरों में भी मंत्राक्षर लिखे हुए हैं। इसके बाद पुनः आठ पत्तियाँ बनी हुई हैं और इनमें से प्रत्येक पत्ती में क्रमशः 'ऊँ ह्रीं अर्हं अनाहत विद्यायै अ आ इ ई उ ऊ क्र क्र ल्ह ल्ह ए ऐ ओ औ अं अः णमो अरिहंताणं स्वाहा 1', ऊँ ह्रीं अर्हं अनाहत विद्यायै क ख ग घ ड़ णमो सिद्धाणं स्वाहा 2', 'ऊँ ह्रीं अर्हं अनाहत विद्यायै च छ ज झ त्र णमो आयरियाणं स्वाहा 3', 'ऊँ ह्रीं अर्हं अनाहत विद्यायै ट ठ ड ढ ण णमो उवज्झायाणं स्वाहा 4', 'ऊँ ह्रीं अर्हं अनाहत विद्यायै त थ द ध न णमो लोए सव्वसाहूणं स्वाहा 5', 'ऊँ ह्रीं अर्हं अनाहत विद्यायै प फ व भ म सम्यग्दर्शनाय स्वाहा 6', 'ऊँ ह्रीं अर्हं अनाहत विद्यायै य र ल व स सम्यग्ज्ञानाय स्वाहा 7' और 'ऊँ ह्रीं अर्हं अनाहत विद्यायै श ष स ह सम्यक् चारित्राय स्वाहा 8' अंकित है। इसके बाद बने दो वृत्त में पूरी परिधि में "ठं" एवं अन्य मन्त्र अंकित है। सबसे अंतिम गोल घेरे में उत्कीर्ण लेख से ज्ञात होता है कि इस यन्त्र को सुगंध दशमी व्रत के उद्यापन अवसर पर रावराजा सर सेठ हुकमचंद्र के पुत्र भैयासाहब श्री राजकुमारसिंहजी की धर्मपत्नी श्रीमती राजकुमारी बाई ने संवत् 2008 अर्थात् 1951 ई. को श्री दिगम्बर जैन मंदिरजी दीतवारिया बाजार इन्दौर में भेंट चढाया था।

परमेष्ठि यन्त्र

माध्यम : धातु
काल : आधुनिक काल
अभिलेख : अभिलिखित
लिपि : नागरी
भाषा : संस्कृत

वर्गाकार इस यंत्र पर मध्य भाग में एक वृत्त के अन्तर्गत ऊँ व उसकी परिधि में मंत्राक्षर तथा उससे जुड़ी 12 पत्तियों में अरहंत मंगलम्, सिद्ध मंगलम्, साहू मंगलम्, केवलि पण्णतो धम्मो मंगलम्, अरहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलि पण्णतो धम्मो लोगुत्तमा, अरहंत सरणं पव्वजामि, सिद्ध सरणं पव्वजामि, साहु सरणं पव्वजामि लिखा हुआ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथम तल पर स्थित मुख्य वेदी

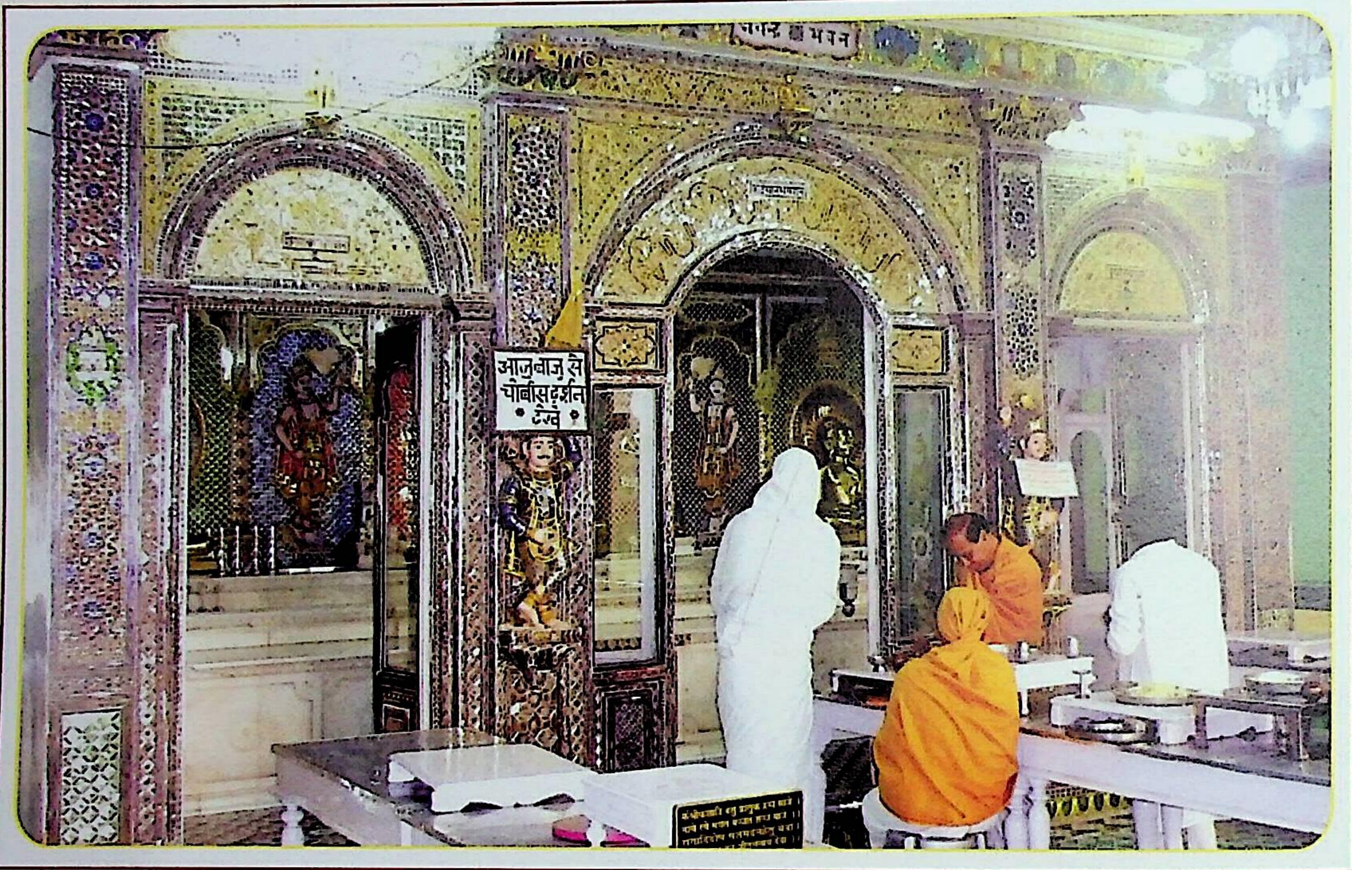

श्री दिगम्बर जैन कांच मन्दिर के प्रथम तल पर स्थित वेदी 11′ x 22′9″ माप के एक आयताकार कक्ष के अन्तर्गत बनी हुई है। यह वेदी संगमरमर के प्रस्तर खण्डों से बनी हुई सतह से लगभग 4′ की ऊँचाई तक बनी हुई है। इस वेदी पर कुल 5 जिन प्रतिमाएँ एवं 6 यन्त्रजी विराजमान हैं। पाँच जिन प्रतिमाओं में से चार धातु से और एक प्रतिमा संगमरमर पाषाण से निर्मित है। धातु से निर्मित चार प्रतिमाओं में से तीन प्रतिमाएँ – तीर्थंकर महावीर, पुष्पदन्त व शीतलनाथ की समान आकार की हैं, जबकि तीर्थंकर पार्श्वनाथ की एक प्रतिमा अपेक्षाकृत बहुत लघु आकार की है। तीर्थंकर महावीर इस वेदी के मूलनायक जिन हैं और वेदी पर मध्य भाग में पद्मासन मुद्रा में प्रतिष्ठित हैं। तीर्थंकर पुष्पदन्त एवं तीर्थंकर शीतलनाथ की प्रतिमाएँ क्रमशः मूलनायक प्रतिमा के बायीं एवं दायीं ओर विराजमान हैं। धातु से निर्मित तीर्थंकर पार्श्वनाथ की पद्मासन मुद्रा में लघु आकार की एक प्रतिमा मूलनायक प्रतिमा के बायीं ओर संगमरमर से बने कमलासन पर विराजमान है। संगमरमर से बनी तीर्थंकर शान्तिनाथ की एक प्रतिमा मूलनायक प्रतिमा के दायीं ओर संगमरमर से बने कमलासन पर विराजमान है। इन सभी प्रतिमाओं में जिन आकृतियों को पद्मासन मुद्रा में दिखाया गया है। इन सभी प्रतिमाओं पर अभिलेख अंकित हैं। इन अभिलेखों के अनुसार इनमें तीर्थंकर महावीर, पुष्पदन्त एवं शीतलनाथ प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा 1921 ई. में हुई थी। तीर्थंकर पार्श्वनाथ मूर्ति की प्रतिष्ठा 1902 ई. में हुई थी। तीर्थंकर शान्तिनाथ प्रतिमाभिलेख पढ़ा नहीं जा सका है, किन्तु यह आधुनिक काल की है। इन प्रतिमाओं पर वीर निर्वाण संवत् में भी तिथियाँ अंकित हैं।

इसी वेदी पर विराजमान 6 यन्त्रजी वृत्ताकार एवं वर्गाकार हैं और इनके ऊपर मन्त्रलेख अंकित हैं। ये सभी आधुनिक काल के हैं। इन प्रतिमाओं एवं यन्त्रजी का विवरण अधोलिखित है –

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महावीर

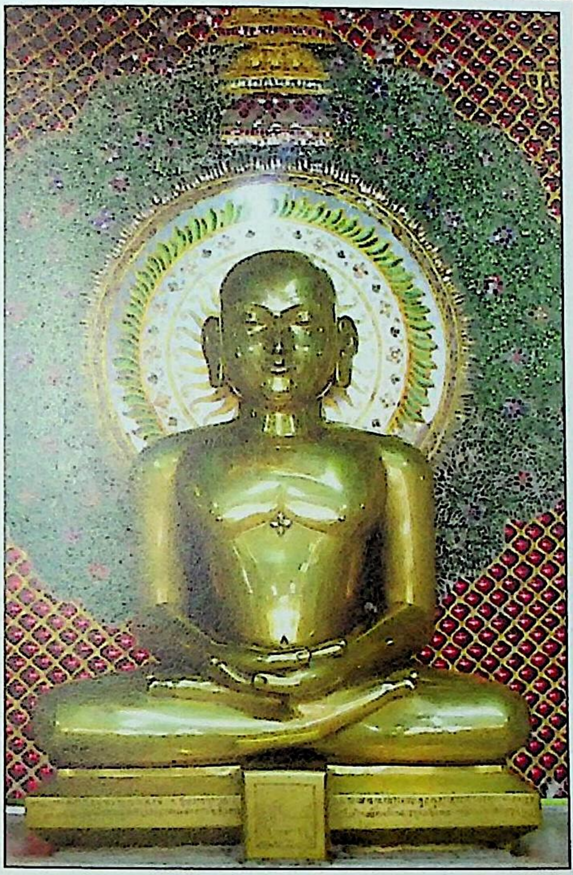

माध्यम : धातु

माप : 100 x 75 सें. मी.

मुद्रा : पद्मासन

काल : वीराब्दे 2447 विक्रम सं. 1978
वैशाख शुक्ल 2 चन्द्रवार (1921 ई.)

अभिलेख : 2 पंक्तियाँ

लिपि : नागरी

भाषा : संस्कृत

इस प्रतिमा में तीर्थंकर महावीर को सादी पीठिका पर लांछन "सिंह" एवं अभिलेख सहित प्रदर्शित किया गया है। तीर्थंकर के वक्षस्थल पर श्रीवत्स सुशोभित है।

अभिलेख का पाठ अधोलिखित है –

1. ।। श्री शुभ वीराद्वे 2447 विक्रमाद्वे 1978 वैशाख शुक्ल द्वितीयाया चन्दवासरे श्री कुन्दकुन्दादि दिगम्बर गुरुपदेशात् ।।

2. ।। उड़ेसर नगरे कमलापति सुत मुन्नालालेन कृत पंचकल्याणक महोत्सवे श्री इन्दौर निवासि माणिकचन्द्र मगनीरामाभ्यां प्रतिष्ठापित मिति शुभं भूयात्

इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि उड़ेसर नगर के कमलापति के पुत्र मुन्नालाल द्वारा करवाये गये पंचकल्याणक महोत्सव में इन्दौर के निवासी माणिकचन्द्र मगनीराम ने 1921 ई. में इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा करवाई थी। यहाँ माणिकचन्द्र मगनीराम से तात्पर्य माणिकचन्द्र मगनीराम फर्म से है, जिसकी स्थापना के बारे में प्रथम अध्याय में बताया जा चुका है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुष्पदन्त

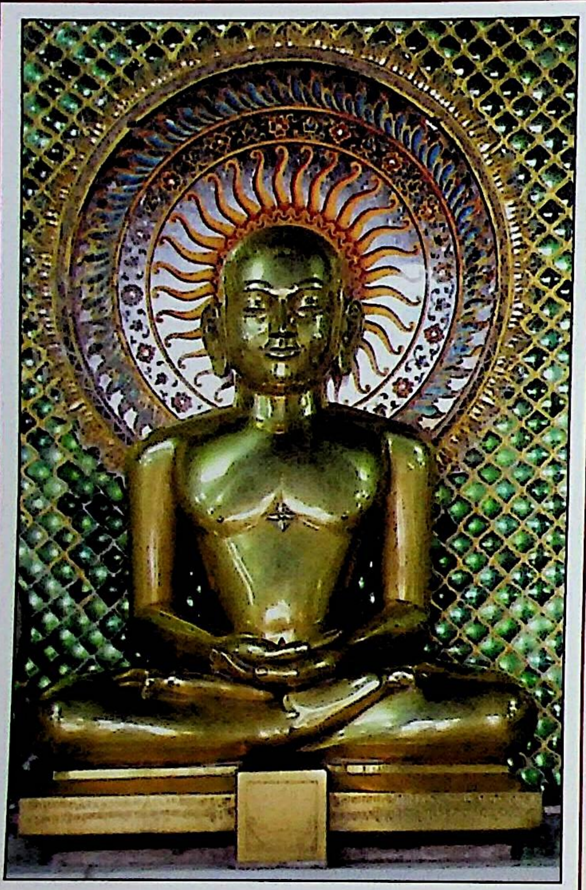

माध्यम	:	धातु
माप	:	85 x 65 सें. मी.
मुद्रा	:	पद्मासन
काल	:	वीराब्दे 2447 विक्रम सं. 1978 वैशाख शुक्ल 2 चन्द्रवार (1921 ई.)
अभिलेख	:	2 पंक्तियाँ
लिपि	:	नागरी
भाषा	:	संस्कृत

इस प्रतिमा में तीर्थंकर पुष्पदन्त को सादी पीठिका पर लांछन "मकर" एवं अभिलेख सहित प्रदर्शित किया गया है। उनके वक्षस्थल पर श्रीवत्स सुशोभित है।

अभिलेख का पाठ अधोलिखित है –

1. ।। श्री शुभ वीराब्दे 2447 विक्रमाब्दे 1978 वैशाख शुक्ल द्वितीयायां चन्द्रवासरे श्री कुंन्दकुन्दादि दिगम्बर गुरु– ।।
2. पदेशात् उड़ेसर नगरे कमलापति सुत मुन्नालालेन कृत पंचकल्याणक महोत्सवे श्री इन्दौर नि. माणकचंद्र मगनीराम

इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि उड़ेसर नगर के कमलापति के पुत्र मुन्नालाल द्वारा करवाये गये पंचकल्याणक महोत्सव में इन्दौर के निवासी माणिकचन्द्र मगनीराम ने 1921 ई. में इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा करवाई थी। यहाँ माणिकचन्द्र मगनीराम से तात्पर्य माणिकचन्द्र मगनीराम फर्म से है, जिसकी स्थापना के विषय में प्रथम अध्याय में बताया जा चुका है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शीतलनाथ

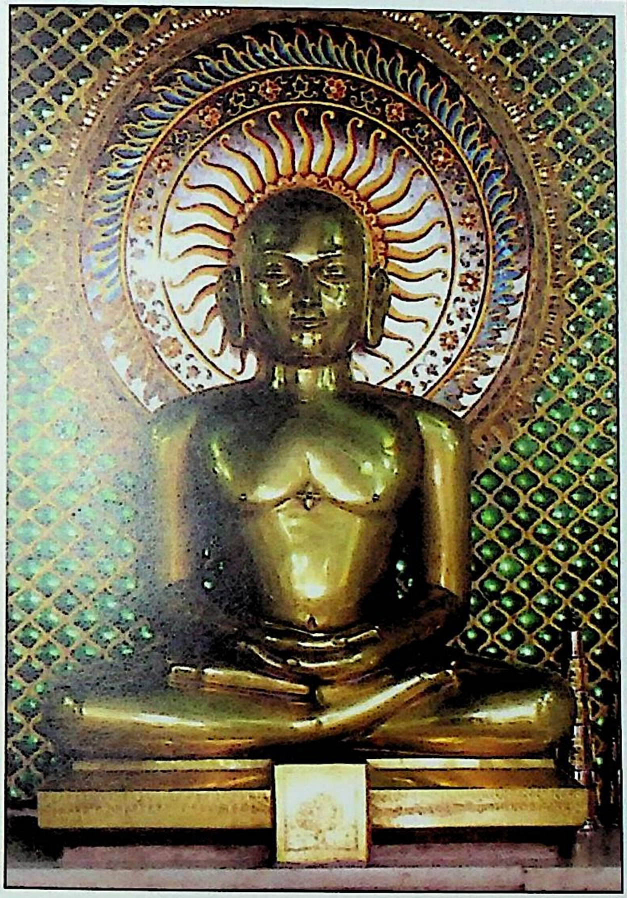

माध्यम : धातु

माप : 85 x 65 सें. मी.

मुद्रा : पद्मासन

काल : वीराब्दे 2447 विक्रम सं. 1978 वैशाख शुक्ल 2 चन्द्रवार (1921 ई.)

अभिलेख : 3 पंक्तियाँ

लिपि : नागरी

भाषा : संस्कृत

इस प्रतिमा में तीर्थंकर शीतलनाथ को सादी पीठिका पर लांछन "कल्पवृक्ष" एवं अभिलेख सहित प्रदर्शित किया गया है। उनके वक्षस्थल पर श्रीवत्स शोभित है।

अभिलेख का पाठ अधोलिखित है –

1. ।। श्री शुभ वीराद्वे 2447 विक्रमाद्वे 1978 वैशाख शुक्ल द्वितीयायां चन्द्रवासरे श्री कुन्दकुन्दादि दिगम्बर गुरुपदेशात उड़ेसर नगरे कमला–
2. पति सुत मुन्नालालेन कृत पंचकल्याणक महोत्सवे श्री इन्दौर निवासी माणिकचन्द्र मगनीरामाभ्यां प्रतिष्ठापित मिति शु. भूया–
3. त्

इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि उड़ेसर नगर के कमलापति के पुत्र मुन्नालाल द्वारा करवाये गये पंचकल्याणक महोत्सव में इन्दौर के निवासी माणिकचन्द्र मगनीराम ने 1921 ई. में इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा करवाई थी। यहाँ माणिकचन्द्र मगनीराम से तात्पर्य माणिकचन्द्र मगनीराम फर्म से है, जिसकी स्थापना के विषय में प्रथम अध्याय में बताया जा चुका है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शान्तिनाथ

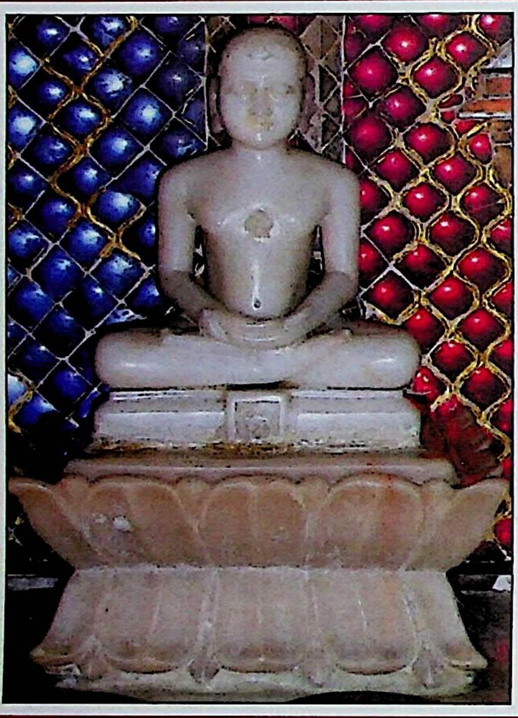

माध्यम : संगमरमर
माप : 30 X 22 सें. मी.
मुद्रा : पद्मासन
काल : आधुनिक काल
अभिलेख : 1 पंक्ति
लिपि : नागरी
भाषा : संस्कृत

इस प्रतिमा में तीर्थंकर शान्तिनाथ को सादी पीठिका पर लांछन "मृग" एवं अभिलेख सहित प्रदर्शित किया गया है। उनके वक्षस्थल पर श्रीवत्स सुशोभित है। वर्तमान में वे संगमरमर से निर्मित ऊँचे कमलासन पर विराजमान हैं। अभिलेख का अधिकांश भाग चूने में दबा होने के कारण उसे स्पष्टतः नहीं पढ़ा जा सका है।

पार्श्वनाथ

माध्यम : धातु
माप : 25 X 15 सें. मी.
मुद्रा : पद्मासन
काल : संवत् 1959 माघ शुक्ल 5 सोमवार (1902 ई.)
अभिलेख : 3 पंक्तियाँ
लिपि : नागरी
भाषा : संस्कृत

इस प्रतिमा में तीर्थंकर पार्श्वनाथ सिर के ऊपर सात सर्पफणों की छत्रावली से शोभित सादी पीठिका पर लांछन "सर्प" सहित प्रदर्शित हैं। वर्तमान में वे संगमरमर से निर्मित ऊँचे कमलासन पर विराजमान हैं। अभिलेख का पाठ अधोलिखित है –

1. सं. 1959 मि. मा. शु. 5 सो. श्री कुन्दकुन्दादि
2. दिगम्वर गुरुपदिष्टाम्नायेन इंद्रवित्या प्रतिष्ठितम्
3. स्वरूपचन्द हुकमचन्द प्रतिष्ठितम्

अभिलेखानुसार इस मूर्ति की प्रतिष्ठा श्री स्वरूपचन्द्र हुकुमचन्द्र ने दिगम्बर गुरुओं के उपदेश पर 1902 ई. में करवाई थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऋषिमण्डल यन्त्र

माध्यम : धातु
काल : आधुनिक काल
अभिलेख : अभिलिखित
लिपि : नागरी
भाषा : संस्कृत

वर्तुलाकार इस यंत्र पर मध्य भाग में एक बड़े वृत्त के अन्तर्गत "ह्रीं" लिखा हुआ है और इस ह्रीं में विभिन्न तीर्थंकरों को नमस्कार युक्त मंत्र लिखे हुए हैं। बड़े वृत्त के चारों ओर बने कई वृत्तों और उनके अन्तर्गत बने कई खानों में विभिन्न प्रकार के मंत्रलेख उत्कीर्ण हैं।

कलिकुण्ड यन्त्र

माध्यम : धातु
अभिलेख : अभिलिखित
काल : आधुनिक काल
लिपि : नागरी
भाषा : संस्कृत

वर्तुलाकार इस कलिकुण्ड यंत्र पर मध्य भाग में एक वृत्त के अन्तर्गत पाँच पंक्तियों में "ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं हं कलिकुंड दंड स्वामित्र तुल वल वीर्य पराक्रमाय नमः देवदत्तस्य अभिष्ट फलसिद्धिं कुरुश्आत्मविद्यारक्षश्पर विद्यां छिंदश्मिदश्‍ स्फ्राँ स्फ्रीँ स्फ्रूँ स्फ्रौं स्फ्रः हूं फट् स्वाहा" उत्कीर्ण है। इस वृत्त से जुड़ी आठ पत्तियों में मंत्राक्षर लिखे हुए हैं। इन पत्तियों के मध्य बने आठ लम्बे अरों में से प्रत्येक अर में "णमो अरिहंताणं" अंकित है।

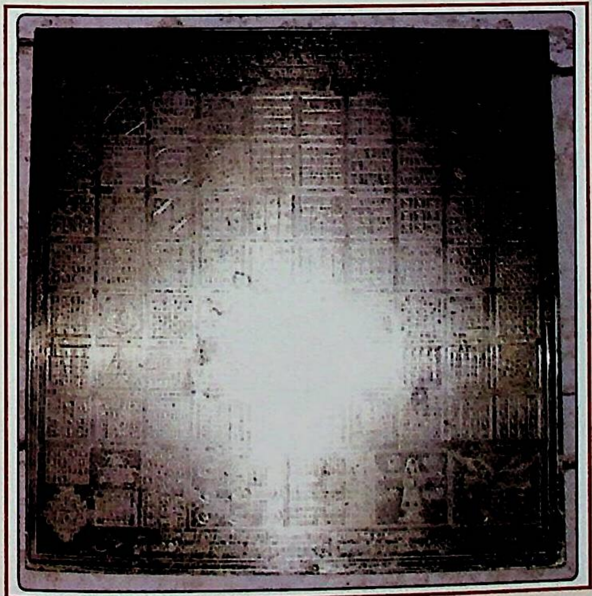

श्री महायन्त्र

माध्यम : धातु
काल : आधुनिक काल
अभिलेख : अभिलिखित
लिपि : नागरी
भाषा : संस्कृत

वर्गाकार इस श्री महायन्त्र पर सर्वकार्य सिद्धि, व्यापार वृद्धि, अद्‌भुत चमत्कारी ऋणमुक्ति, सन्तान प्राप्ति, सर्वरोग मुक्ति, नवग्रह शान्ति आदि महामंत्र लिखे हुए हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यग्चरित्र यन्त्र

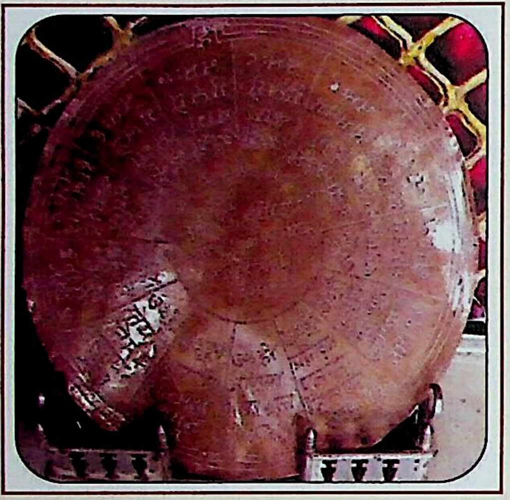

माध्यम : धातु
काल : आधुनिक काल
अभिलेख : अभिलिखित
लिपि : नागरी
भाषा : संस्कृत

वर्तुलाकार इस यन्त्र के मध्य भाग में एक वृत्त के अन्तर्गत चार पंक्तियों में 'ऊँ ह्रीं त्रयोदश प्रकाराय सम्यक् चारित्राय नमः' अंकित है। इस वृत्त से जुड़ी 13 पत्तियों में से प्रत्येक पत्ती में अहिंसा महाव्रत, अनृर्तावरति महाव्रत, स्नेयविरति महाव्रत, ब्रह्मचर्य महाव्रत, आकिंचन्य महाव्रत, मनोगुप्तये, बागगुप्तये, कायगुप्तये, ईर्या समितये, भाषा समितये, एषणा समितये, आदान निक्षेपण समितये और प्रतिष्ठापन समितये को नमन करते हुए मंत्रलेख अंकित हैं।

सम्यग्दर्शन यन्त्र

माध्यम : धातु
काल : आधुनिक काल
अभिलेख : अभिलिखित
लिपि : नागरी
भाषा : संस्कृत

वर्तुलाकार इस यन्त्र के मध्य भाग में एक वृत्तान्तर्गत चार पंक्तियों में 'ऊँ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शनाय नमः' लिखा है। इस वृत्त से जुड़ी आठ पत्तियों में से प्रत्येक पत्ती में प्रभावना, वात्सल्य, स्थितिकरण, उपगूहनाय, अमूढदृष्टि, निर्विचिकित्सा, निःकांक्षित एवं निःशंकित को नमन करते हुए लेख लिखे हैं।

सम्यग्ज्ञान यन्त्र

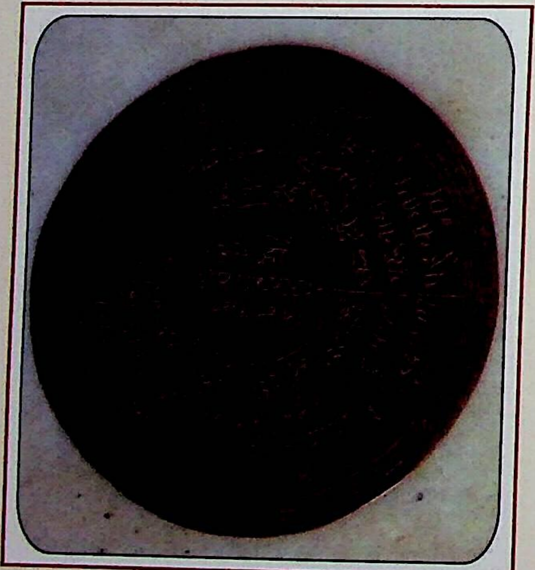

माध्यम : धातु
काल : आधुनिक काल
अभिलेख : अभिलिखित
लिपि : नागरी
भाषा : संस्कृत

वर्तुलाकार इस यन्त्र के मध्य भाग में एक वृत्तान्तर्गत चार पंक्तियों में 'ऊँ ह्रीं अष्टांग सम्यग्ज्ञानाय नमः' अंकित है। इस वृत्त से जुड़ी आठ पत्तियों में से प्रत्येक पत्ती में व्यंजनार्जिता, अर्थसमग्र, शब्दार्थोभय, कालाध्याय, उपध्यान, विनयोन्मद्रि, गुरुवाघपन्ह और बहुमान समृद्ध को नमन करते हुए मंत्रलेख अंकित हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथम तल पर स्थित दूसरी वेदी

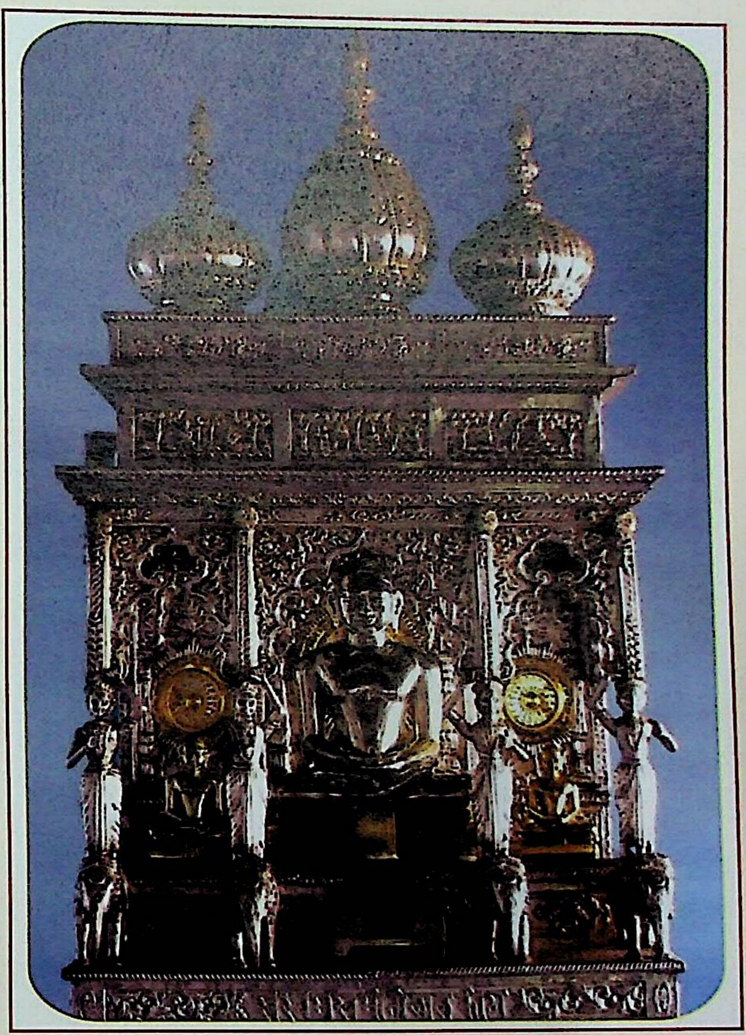

श्री दिगम्बर जैन कांच मन्दिर के प्रथम तल पर मुख्य वेदी के अतिरिक्त सामने बने हॉल में लकड़ी से बनी एक ऊँची वेदी पर तीन तीर्थंकर प्रतिमाएँ एवं तीन यन्त्रजी विराजमान हैं। यह वेदी अत्यन्त सुन्दर एवं आकर्षक है। लकड़ी से बनी इस वेदी को मन्दिरानुकृति का आकार देकर उसके ऊपर सुन्दर पच्चीकारीयुक्त मोटा रजत पत्र चढ़ाकर बनाया गया है। रजत पत्र को पुष्प–पत्रों की नयनाभिराम नक्काशी से बहुअलंकृत किया गया है। वेदी के स्तम्भों पर गजारूढ़ देवी आकृतियों को उद्घोष करते हुए प्रदर्शित किया गया है। वेदी के ऊपर विराजमान तीन जिन प्रतिमाओं के अनुरूप तीन शिखर भी सुशोभित हैं। इनमें मध्य भाग का शिखर आकार में अपेक्षाकृत बड़ा है। इस वेदी पर विराजमान तीनों प्रतिमाएँ एवं यन्त्रजी अष्टधातु से निर्मित हैं। इनमें मूलनायक पार्श्वनाथ प्रतिमा आकार में बड़ी है, जबकि उनके दायीं ओर विराजमान तीर्थंकर शान्तिनाथ तथा बायीं ओर विराजमान तीर्थंकर महावीर की प्रतिमाएँ अपेक्षाकृत लघु आकार की हैं। इन तीनों प्रतिमाओं में जिन आकृतियों को पद्मासन मुद्रा में दिखाया गया है और उनकी पीठिका पर सम्बन्धित लांछन भी अंकित है। तीनों प्रतिमाओं पर अभिलेख अंकित हैं। इन अभिलेखों से ज्ञात होता है कि इनमें मूलनायक पार्श्वनाथ प्रतिमा की प्रतिष्ठा संवत् 1978 अर्थात् 1921 ई. में, शान्तिनाथ प्रतिमा की प्रतिष्ठा 1990 ई. में और महावीर प्रतिमा की प्रतिष्ठा 1980 ई. में हुई थी।

इसी वेदी पर विराजमान तीनों यन्त्रजी वर्गाकार हैं और इनके ऊपर मन्त्रलेख अंकित हैं। ये सभी आधुनिक काल के हैं। इन प्रतिमाओं एवं यन्त्रजी का विवरण अधोलिखित है –

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पार्श्वनाथ

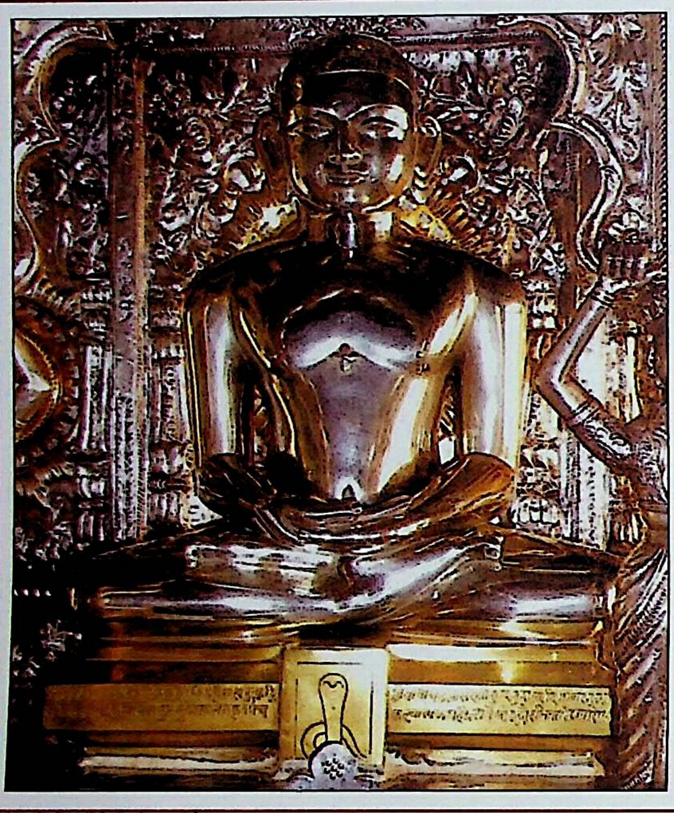

माध्यम	:	धातु
माप	:	50 X 35 सें. मी.
मुद्रा	:	पद्मासन
काल	:	वीर सं. 2447 विक्रम सं. 1978 वैशाख शुक्ल 2 चन्द्रवार (1921 ई.)
अभिलेख	:	2 पंक्तियाँ
लिपि	:	नागरी
भाषा	:	संस्कृत

इस प्रतिमा में तीर्थंकर पार्श्वनाथ को सादी पीठिका पर लांछन "सर्प" एवं अभिलेख के साथ दिखाया गया है। उनके वक्षस्थल पर श्रीवत्स सुशोभित है।

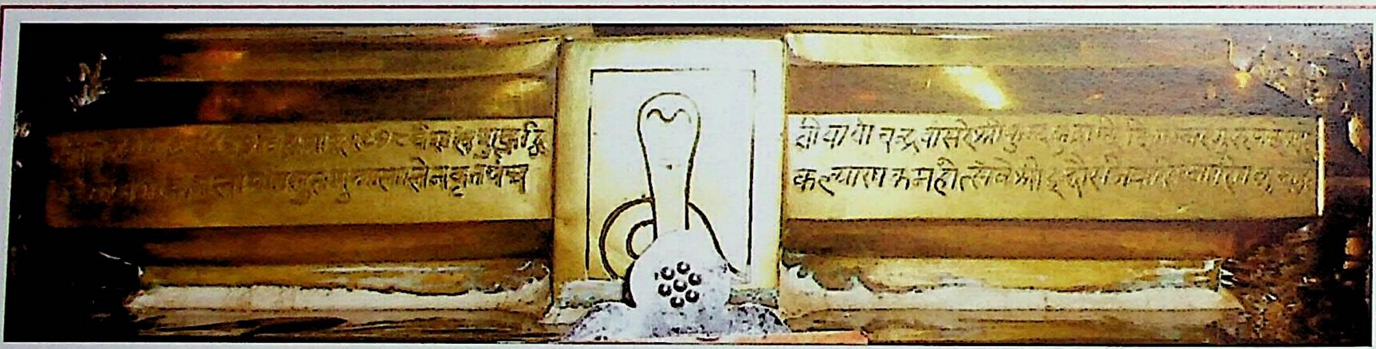

पीठिका पर अंकित अभिलेख की आरंभिक दो पंक्तियाँ पीठिका पर सम्मुखदर्शी भाग पर अंकित हैं, जबकि बाद की दो पंक्तियाँ पीठिका पर बायें ओर के हिस्से पर लिखी हुई हैं। इस अभिलेख का पाठ अधोलिखित है –

1. श्री शुभ बीराद्बे 2447 विक्रमाद्बे 1978 वैशाख शुक्ल द्वितीयायां चन्द्रवासरे श्री कुन्दकुन्दादि दिगम्वर गुरुपदेशात्
2. उड़ेसर नगरे कमलापति सुत मुन्नालालेन कृत पंचकल्याणक महोत्सवे श्री इन्दौर निवासि माणिकचन्द्र
3. मगनीरामाभ्यो प्रतिष्ठापत मिति शुभ
4. भूयात्

इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि इस मूर्ति की प्रतिष्ठा कुन्दकुन्द अन्वय के दिगम्बर गुरुओं के उपदेश पर उड़ेसर नगर के कमलापति के पुत्र मुन्नालाल द्वारा करवाये गये पंचकल्याणक महोत्सव के दौरान इन्दौर के निवासी माणिकचन्द्र मगनीराम (फर्म) ने 1921 ई. में करवाई थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शान्तिनाथ

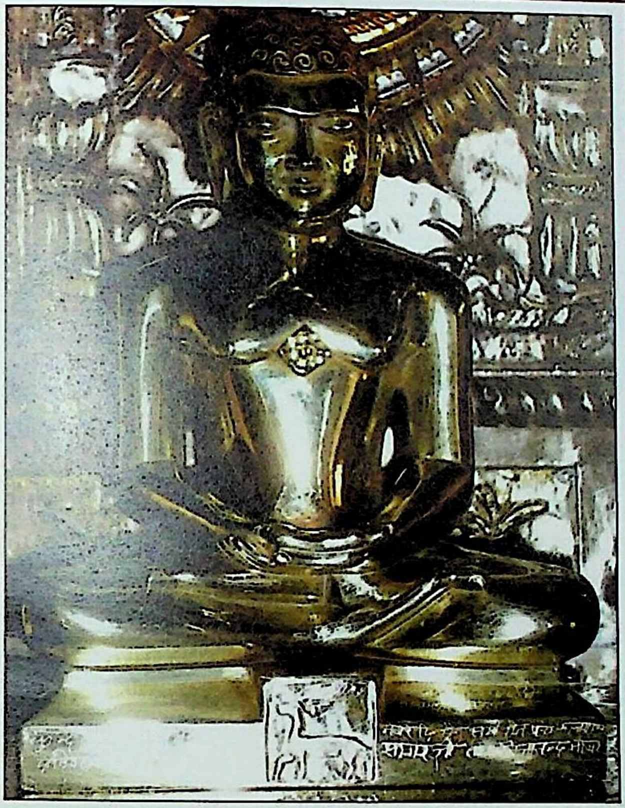

माध्यम	:	धातु
माप	:	20 x 15 सें. मी.
मुद्रा	:	पद्मासन
काल	:	वीर सं. 2517 विक्रम सं. 2047 (1990 ई.)
अभिलेख	:	4 पंक्तियाँ
लिपि	:	नागरी
भाषा	:	संस्कृत

इस प्रतिमा में तीर्थंकर शान्तिनाथ को सादी पीठिका पर लांछन "मृग" के साथ दिखाया गया है। उनके वक्षस्थल पर श्रीवत्स सुशोभित है। पीठिका पर अंकित अभिलेख में तिथि एवं मुनि श्री निजानन्दसागर जी महाराज एवं अन्य मुनियों के सानिध्य में पंचकल्याणक महोत्सव के अवसर पर मूर्ति की प्रतिष्ठा का उल्लेख मिलता है।

महावीर

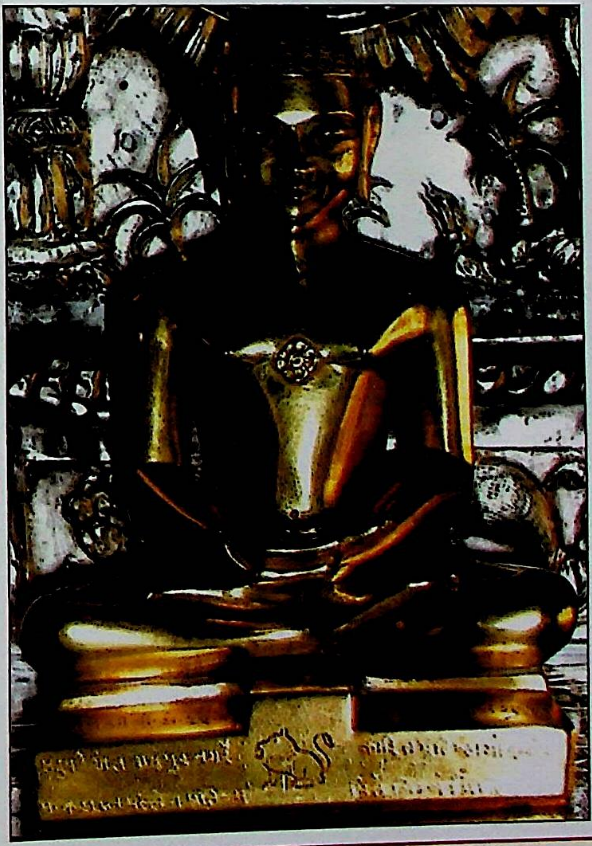

माध्यम	:	धातु
माप	:	20 x 15 सें. मी.
मुद्रा	:	पद्मासन
काल	:	वीर सं. 2507 विक्रम सं. 2037 माघ शुक्ल 13 (1980 ई.)
अभिलेख	:	3 पंक्तियाँ
लिपि	:	नागरी
भाषा	:	संस्कृत

इस प्रतिमा में तीर्थंकर महावीर को सादी पीठिका पर लांछन "सिंह" के साथ दिखाया गया है। पीठिका पर अंकित अभिलेख में तिथि और ब्रह्मचारी सूरजमल्ल का नाम ही पढ़ा जा सका है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऋषिमण्डल यन्त्र

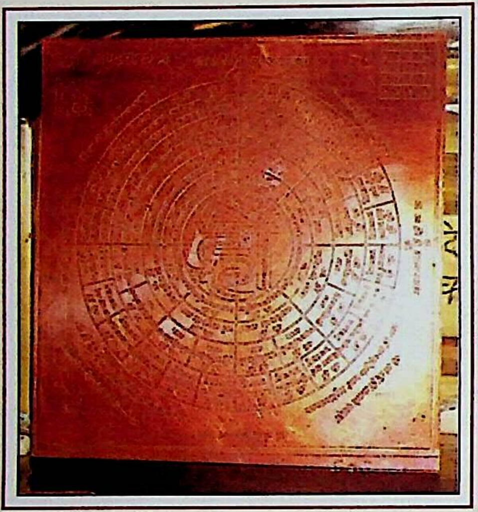

माध्यम	:	धातु
काल	:	आधुनिक
अभिलेख	:	अभिलिखित
लिपि	:	नागरी
भाषा	:	संस्कृत

वर्तुलाकार इस यंत्र पर मध्य भाग में एक बड़े वृत्त के अन्तर्गत "ह्रीं" लिखा हुआ है और इस ह्रीं में विभिन्न तीर्थंकरों को नमस्कार युक्त मंत्र लिखे हुए हैं। बड़े वृत्त के चारों ओर बने कई वृत्तों और उनके अन्तर्गत बने कई खानों में विभिन्न प्रकार के मंत्रलेख उत्कीर्ण हैं।

कलिकुण्ड यन्त्र

माध्यम	:	धातु
काल	:	आधुनिक
अभिलेख	:	अभिलिखित
लिपि	:	नागरी
भाषा	:	संस्कृत

वर्तुलाकार इस कलिकुण्ड यंत्र पर मध्य भाग में एक वृत्त के अन्तर्गत आठ पंक्तियों में "ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीँ ऐँ र्ह कलिकुंड दण्ड चंडोग्र पार्श्वनाथ स्वामिन अतुल बल वीर्य पराक्रमाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय आत्मविद्यांरक्ष रक्ष पर विद्यां छिन्दत छिन्द....... स्फ्राँ स्फ्रीँ स्फ्रूँ स्फ्राँ स्फ्रः हूं फट् स्वाहा" उत्कीर्ण है। इस वृत्त से जुड़ी आठ पत्तियों में मंत्राक्षर लिखे हुए हैं। यन्त्र पर सबसे ऊपर कलिकुण्ड यंत्र अंकित है।

सिद्धचक्र यन्त्र

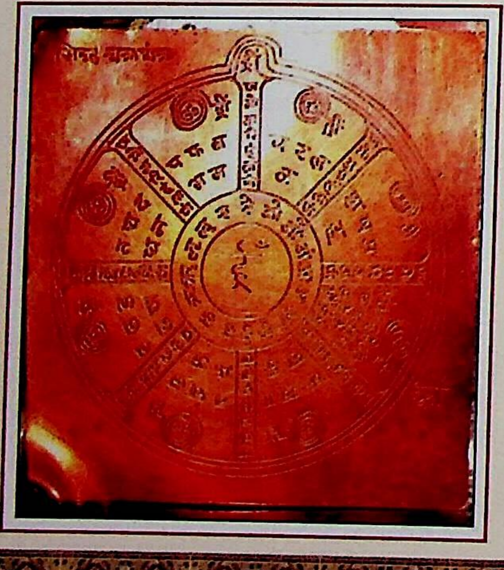

माध्यम	:	धातु
काल	:	आधुनिक
अभिलेख	:	अभिलिखित
लिपि	:	नागरी
भाषा	:	संस्कृत

वर्गाकार इस यंत्र पर मध्य भाग में एक वृत्त के अन्तर्गत "र्ह" उत्कीर्ण है। इस वृत्त से जुड़ी 8 पत्तियों में मंत्राक्षर और इन पत्तियों के मध्य भाग में बने लम्बे अरों में 'णमो अरिहंताणं' लेख अंकित हैं। सबसे ऊपर एक पंक्ति में 'सिद्ध चक्र यंत्र' लिखा हुआ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

में भी बड़े बड़े कविराजों का चित्त विकल न हो जाय ॥ ३९ ॥ श्री वृषभदेव के पुराणरूपी वसंतऋतु में कविवर श्री जिनसे
नाचार्य सर्प के समान थे इसलिये उनके विषय में तो कुछ कहना ही नहीं चाहिये परंतु उनके बाद की समस्त कवि
गणरूपी हाथियों के समूह के लिये सिंहनी के समान जो गुणभद्राचार्य की विचित्र वाणी है वह जयशील हो ॥ ४० ॥ हे
मित्र यदि तू समस्त उत्तम कवियों के कहे हुए सुभाषितों के मर्म को सुनकर सरसचित्त होना चाहता है तो कविवर
श्री जिनसेनाचार्य के मुखारविंद से कहे हुए पुराण के सुनने में अपने कान लगा ॥ ४१ ॥ इसमें धर्म का स्वरूप है यान
हीं यह कहना ही उचित नहीं है क्योंकि यह बड़ा भारी पुराण है महाधर्म है ॥ क्या इसमें कुछ सुनने योग्य कथा है ऐसा
पूछना भी ठीक नहीं है क्योंकि त्रेसठ शलाका पुरुषों के चरित्र हो इसमें सुनने योग्य है क्योंकि उनके चरित्रों का पढ़
महासागर है ॥ इसी तरह क्या इसमें कोई कविता के गुण हैं यह भी पूछना उचित नहीं है क्योंकि बड़े बड़े कविराज भी इ
सके वचनरूपी कमलों के भ्रमर बने हुए हैं तो फिर इसका बनाने वाला कवि कौन है ॥ इसका उत्तर यही है कि कविराज
आचार्यवर्य गुणभद्र स्वयं ही इसके कवि हैं ॥ ४२ ॥ इस प्रकार भगवद्गुणभद्राचार्य विरचित महापुराण की पद
प्रशस्ति समाप्त हुई ॥ इस प्रकार यह ग्रंथ समाप्त हुआ ॥ मंगलं भगवान् वीरो मंगलं गौतमो गणी ॥ मंगलं कुंदकुं
दार्यो जैनधर्मोस्तु मंगलं ॥ इस प्रकार ग्रंथ समाप्त हुआ ॥ इति संपूर्णं ॥ शुभं ॥ भवतो मंगलं ददातु ॥ शुभं ॥

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

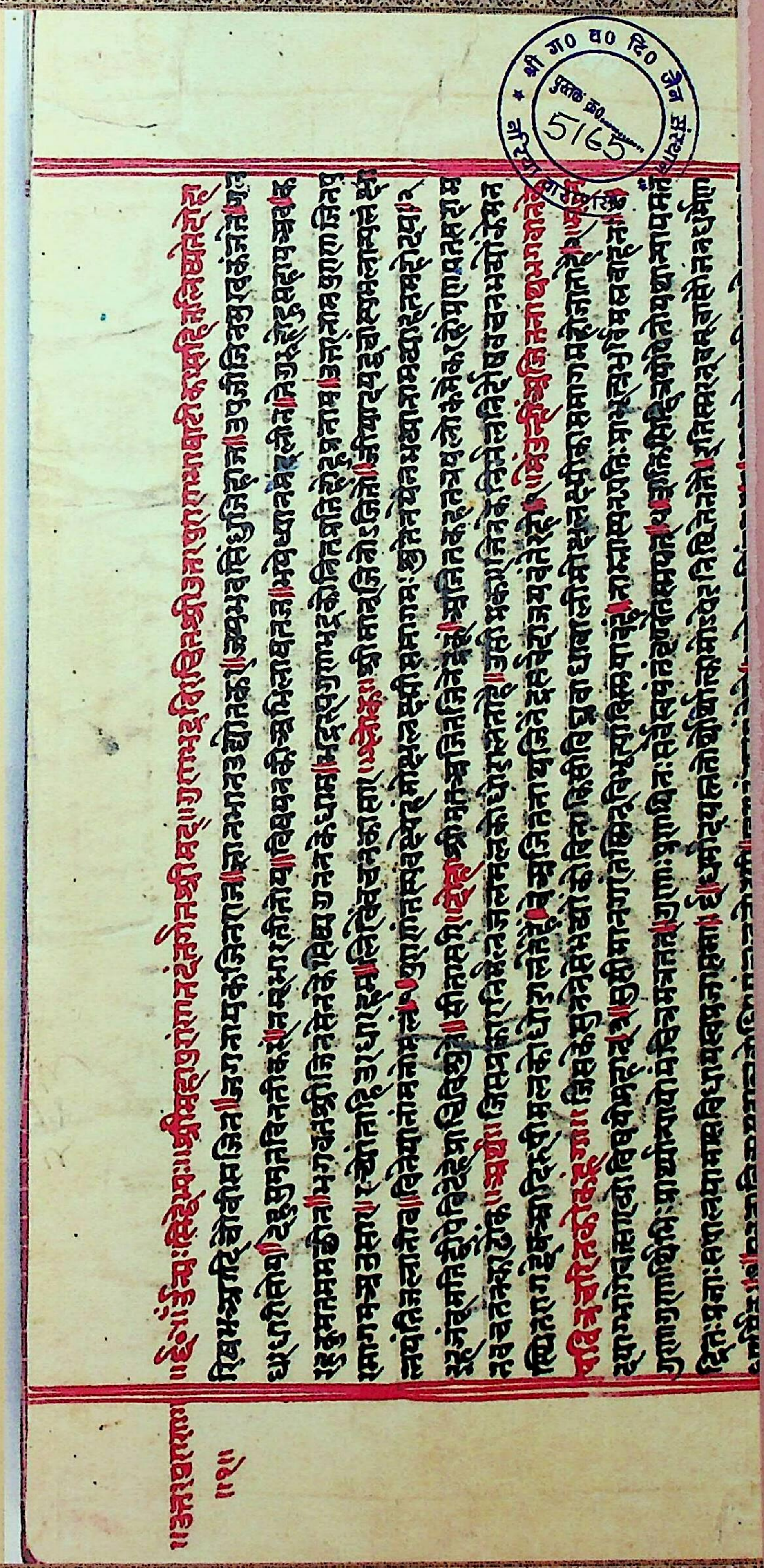

डॉ. नवनीत कुमार जैन

(जन्म 1977) ने स्नातकोत्तर (2001) पी-एच.डी. (2007) एवं स्नातकोत्तर डिप्लोमा, संग्रहालय विज्ञान (2008) उपाधियाँ प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व अध्ययनशाला, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर से प्राप्त की है। तदुपरान्त विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से स्वीकृत शोध परियोजना में एशोसिएट फेलो (2009-10) के रूप में कार्य किया। 2009-10 तक मासिक पत्रिका 'प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार' लखनऊ का संपादन सह संपादक के रूप में किया। अभी तक 5 राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के अभिनंदन एवं स्मृति ग्रंथों का संपादन कर चुके हैं एवं 45 शोध पत्र विविध शोध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त जैन स्वर्ण मंदिर ग्वालियर (ए.के. सिंह के साथ) शीर्षक पुस्तक 2012 में प्रकाशित हो चुकी है।

आप राष्ट्रीय स्तर की कई संगोष्ठियों का सह-संयोजन कर चुके हैं। अक्टूबर-2012 में **कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ पुरस्कार-2011** से सम्मानित हुए है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

I.S.B.N.-81-86933-43-3

श्री कांच मन्दिर की प्रतिष्ठा के समय पांडुक शिला पर जन्माभिषेक का दृश्य अभिषेकरत-कासलीवाल परिवार

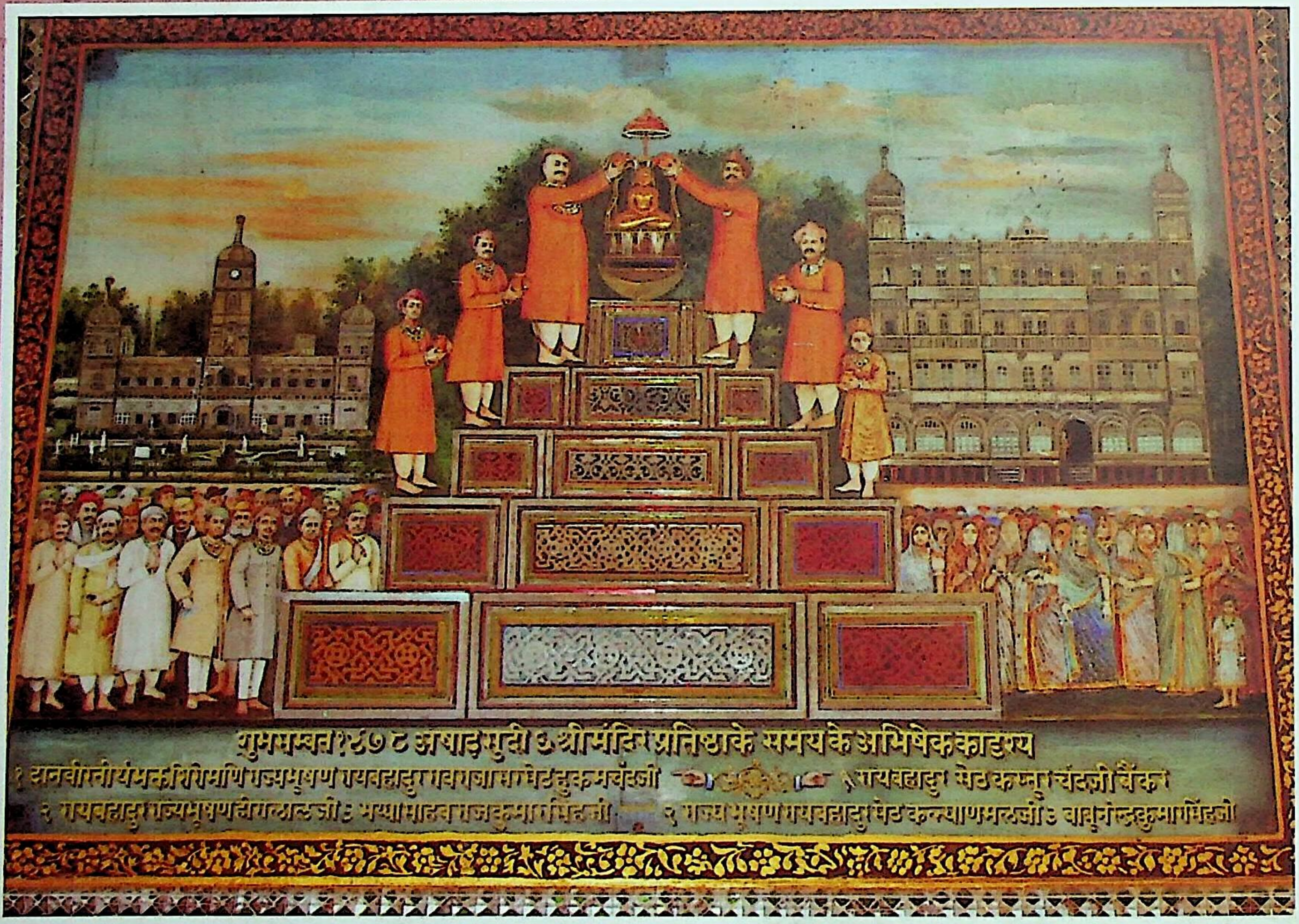

प्रकाशक

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर

(देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर द्वारा मान्य शोधकेन्द्र)

584, महात्मा गांधी मार्ग, तुकोगंज, इन्दौर 452 001 (म. प्र.)

दूरभाष–0731–2545421, 094250 53822, 093021 04700

Sugan/0930 212 55 94

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi